प्रकाशक—
गयाप्रसाद शुक्ल,
व्यवस्थापक—
साहित्य-सेवा-सदन,
काशी।

मुद्रक—
शिवराम-मालिक
दी नेशनल प्रेस बनारस

श्रीनाथो जयतु।

अनुवाद और अनुवादक

"नाम लिए नवनीत को, मिटे हिए को शूल।"

"मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे, श्याम हरित दुति होय॥"

"सूर सूर, तुलसी शशी, उडगन केसव दास।"

कवि-कुल कुमुद-कलाधर श्रीसूरदासजी तथा कवि-कुल-कमल-दिवाकर श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी, हिन्दी साहित्य-गगन को सूर्य और चन्द्र की भाँति सुशोभित कर ही रहे हैं, तथा उनकी अलौकिक प्रभा सारे संसार पर प्रकाश डाल ही रही है, पर, उडुगनों में, केवल एक केशव ही नहीं, वरन् देव, भूषण, हरिश्चंद्र, पद्माकर, मतिराम और भी एक से एक बढ़ कर चमकते हुए सितारे हैं। कवियों के इस पंच-रचित शरीर का अस्तित्व चिरकाल तक भले ही न रह सके, पर उनके अन्तःकरण से निकली हुई आत्म-प्रेरित मनोहर वाणी, अब भी वाग्वाणी बन कर, सिद्धजनों की वाणी पर नृत्य कर रही है। कोई सूर-सुधा-सागर-निःसृत आनंद-कल्लोलिनी में लहरें ले रहा है, किसी का मन गोस्वामीजी के मान-सरोवर में निमग्न होकर मौज में मस्त हो रहा है, कोई देव की दिव्य गंगा में स्नान कर रहा है, कोई केशव के गंभीर महानद में गोता लगा रहा है, और किसी का हृदय पद्माकर-तड़ाग में तल्लीन हो रहा है। किन्तु कविवर बिहारी लाल उडगणों में नहीं। उनके अनुपम दोहों का विमल विकाश, चन्द्र की बढ़ती कला के समान, दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है। जिस नागरी-रसिक ने सतसई की भव्य अलं-

कारों से विभूषित कविता नायिका का विशुद्ध बुद्धि से आलिंगन नहीं किया अथवा उसकी रसीली काव्य-रसाल-मंजरी के मधुर मकरंद पर जिस प्रेमी का मन-मलिंद मत्त नहीं हुआ तथा जिस कवि ने इस गंगा की अमृत धारा दिव्य नेत्रों से नहीं देखी उसके पूर्ण रसिक होने में कुछ न कुछ संदेह अवश्य ही हो सकता है। कहना नहीं होगा कि सतसई के आजतक अनेक भाषाओं में अनेक अनुवाद हो चुके हैं और अबतक होतेही जा रहे हैं। परन्तु इस आनंद-पारिजात की कलामात्रों का पूरा-पूरा पता अबतक किसी ने नहीं पाया। नित्य नए २ अर्थ निकलते ही जा रहे हैं। मूल रचयिता को तो एक-एक दोहे पर सहस्रों मुद्राओं का पुरस्कार प्राप्त हुआ ही था पर सुनते हैं कि रसिक-शिरोमणि बाबू हरिश्चंद्रजी ने तैलंग भट्ट परमानंदजी को शृंगार सप्तशती नामक संस्कृत (श्लोकबद्ध) अनुवाद पर पाँच सौ रुपये प्रदान किये थे। अब भी रसिकों की कमी नहीं। कविता मर्मज्ञ सुलेखक पं० पद्मसिंह शर्माजीने "संजीवन भाष्य" में अर्थ का अनर्थ करनेवाले स्वार्थी टीकाकारों की भली प्रकार से खबर ली है और अपनी विलक्षण बुद्धि का अच्छा परिचय दिया है। "लक्ष्मी" संपादक लाला भगवानदीनजी ने अपने स्वतंत्र अनुवाद में भी कुछ कसर नहीं रखी। यद्यपि आजकल के तीन सभा शोधक ग्रंथकार को बिना कसौटी पर कसे नहीं छोड़ते पर कोई न कोई कुन्दन ऐसा निकल ही आता है, कि उसका नकुश कसने-वालों की हृदय-कसौटी पर ऐसा जम जाता है, जो कभी नहीं मिट सकता।

इस सतसई के फारसी संस्कृत तथा हिन्दी गद्य-पद्य में तो अनेक अनुवाद हुए ही हैं, पर उर्दू पद्य में सरस अनुवाद अब तक नहीं हुआ था। बड़े हर्ष का विषय है कि बुंदेलखण्डान्तर्गत बिजावर-राज्य के वर्तमान "इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स" मुंशी

देवीप्रसादजी "प्रीतम" ने "गुलदस्तए-विहारी" नामक सुंदर अनुवाद किया है। इस अनुवाद का कुछ नमूना सन् १९०४ की "कायस्थ-हितकारी" नामक उर्दू पत्रने प्रकाशित किया था। इस पर प्रयाग के 'हिन्दुस्थान रिव्यू' ने—जिसके एडीटर बा० सच्चिदानन्द सिन्हा थे—एक "रिव्यू" लिखा, जिसमें यहाँ तक लिख डाला कि इसकी प्रशंसा के लिये उपयुक्त शब्द ही नहीं मिलते। पूज्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदीजी इसे देखकर बड़े चकित हुये, और उन्होंने अनुवादक का नामोनिशान पूछा। प्रीतमजी,ने कुछ अंश और भेजकर अपना पता दिया। पडितजी ने अति प्रसन्न होकर दोहों के सहित अशआर अपनी "सरस्वती" में मुद्रित किये और कलाम की दाद दी। हमारे परम मित्र वियोगी हरिजी भी तीर्थराज से प्रकाशित "सम्मेलन-पत्रिका" में कुछ नमूना प्रेमी पाठकों को दिखला चुके हैं। राधेश्याम प्रेस (बरेली)से प्रकाशित "भ्रमर" नामक मासिकपत्र अभी हाल ही में मुझे देखने को मिला था। उसमें एक महाशय का उर्दू पद्यानुवाद "गुलजार विहारी" के नाम से क्रमश. निकल रहा है। पर 'हर गुले रा रंगो बूए दगिरस्त' अतएव किसे कम व बेश कहूँ? प्रिय पाठक इसका स्वत. न्याय करें।

कवि-परिचय

उपर्युक्त "गुलदस्ता" के रचयिता 'प्रीतम' जी को साहित्य-संसार अच्छी तरह जानता है। पर बहुत से सज्जन ऐसे भी होंगे, जिनको आपका विशेष परिचय न होगा। उनके सम्मुख आपकी संक्षिप्त जीवनी अर्पित करता हूँ—

आपके पिता का नाम मुंशी गंगाप्रसादजी था। आपके दादा मुंशी ईश्वरीप्रसादजी, परदादा मुंशी सुबंशरायजी, शाहान अवध के मीर-मुंशी, और फ़ारसी के सुलेखक थे।

इनका निवास कानपूर के निकट जनपुरा नामक ग्राम में था। उनके बनवाये हुए महल अभी तक वहाँ खड़े हैं।

संवत् १९२१ में आपका जन्म कानपूर मुहल्ला नवाबगंज में हुआ। आपके पिता आपकी बाल्यावस्था में ही श्रीरामशरण हो गये थे इससे विशेष कर माता ही की वात्सल्यता ने आपका पालन-पोषण किया। समय के हेर-फेर से आपको कानपूर से जयपूर राजधानी में आ रहना पड़ा जहाँ आपकी ननिहाल थी। आपके अर्बी-फ़ारसी के उस्ताद मौलवी ग़ैम रज़ा "तफ़्सीर मुक़ामीन" (अर्बी) "ईजाज़ैन रज़ा" (फ़ारसी) "दीवान दुआक़" (उर्दू) के रचयिता थे। आपकी शायरी के उस्ताद महाकवि मिर्ज़ा ग़ालिब के भतीजे मिर्ज़ा बिस्मिल थे, जिनका दीवान बिस्मिल अमुद्रित रह गया। जयपूर में ही आपने उर्दू व तब इल्मिया में तालीम पाई और हिंदी-भाषा का अभ्यास किया। आपके ज्येष्ठ भ्राता मुंशी मनूलालजी, यद्यपि आपसे दो साल ही बड़े हैं, परन्तु हाथ सँभालते ही आपका कुल भार अपने सिर लेकर, आपकी शिक्षा-दीक्षा में बड़े उत्साह से प्रयत्न करते रहे। आपका उपनाम "रसिक श्याम" है। आप हिन्दी भाषा की बड़ी ही रसमयी कविता करते हैं। आपकी भाषा बड़ीही मुहावरेदार और बोलचाल की हिंदी में हुआ करती है।

हमारे चरित-नायक 'प्रीतम' जी का काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर ला० भगवानदीनजी से घनिष्ठ प्रेम है। आप इनको इस युग में सच्ची मित्रता का उदाहरण और अपने साहित्य-जीवन का सहायक बताते हैं। आप पहिले फ़ारसी-उर्दू की कविता किया करते थे। परन्तु दीनजी के संसर्ग से आप हिन्दी-साहित्य की सेवा करने लगे। संवत १९५४ में आप बिजावर राज्य के हेडमास्टर नियत हुए और अब इन्स्पेक्टर-मदारिस हैं। इन सद् गुणों के ऊपर, जैसा सरल

साहित्य भगवानदास (सीतारामशरणजी) ने अपने एक सौ आठ संतों के नामावली में की है, भगवत् शृंगार रस के विलक्षण रसज्ञ और रसिकों के मुकुट-मणि हैं। आप इस समय "कनक भवन" में निवास करते हैं। इनके प्रेम का प्रभाव, 'प्रीतम' जी के हृदय पर, इतना पड़ा हुआ है कि इनकी सानी का रसज्ञ इन दिनों आप भूमण्डल में नहीं समझते। आपने श्रीअवध, श्रीचित्रकूट और अन्य अन्य स्थानों में इनकी पीयूष-वर्षी रसना में भगवत् रसास्वादन किया है। परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी की वाणी को ही "प्रीतम" जी भव-सिंधु से पार करानेवाली समझते हैं। "प्रीतम-शतक" के किसी सवैया के अन्त में आपने कहा है—"तुलसी मुख डारत अन्त समय सुधि आवहि आरत में तुलसी की"। और भी इसी शतक में किसी समय कहा है—

सन्तानको सोच नहीं कछु 'प्रीतम' चाह नहीं मनमें धनकी।
जिन बालपनेसे सुधारी सदा सुधि लैहै वही वृद्धापनकी॥
धनि धन्य गोसाईंजू डार गये हमें देहरी जानकी जीवनकी।
अब तो रघुराज गरीब निवाज के हाथ है लाज दुखी जनकी॥

फिर भी आपकी दम गनीमत है। जो प्रेमी सत्संग की अभिलाषा प्रकट करते हैं, उन्हें कोई न कोई सरस प्रसंग सुनाकर उनके हृदय को आप अवश्य विश्राम देते हैं। प्रेमी की सत्संग की इच्छा जितनी ही बढती जाती है, आपका हृदय-सरोवर उससे दूना उमडता जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी कण्ठ गद्गद हो जाता है। और अश्रु धारा-प्रवाह चल पड़ते हैं, वाणी शिथिल हो जाती है। चाहे कोई भी क्यों न बैठा हो, लोक-लज्जा एक कोने ही में रक्खी रह जाती है। आपके इस प्रेम-दशा की नशा घंटों तक नहीं उतरती। आपके आत्मिक

उन्निस बासठ विक्रमी, असित तीज रविवार।
दीन-दुःख-भंजन हरी, दीनन हिए पधार॥

मण्डली का यह उद्देश्य था "त्रय ताप तापित तथा भ्रमित इस अधम जीवन को निरंतर भगवद्गुणानुवाद मनाकर सत्संग द्वारा विश्राम देना"।

नर विविध कर्म अधर्म बहुमत शोकप्रद सब त्यागहूँ।
विश्वास करि कहि दास तुलसी रामपद अनुरागहूँ॥

यह लेखक भी इस मण्डली का जन्मकाल से अबतक एक-रस स्वादन करनेवाला है। अहा! वह कैसा, सौभाग्यशाली समय था कि प्रभात से संध्या तक रामप्रियाजी की कुटी में सत्संग की चर्चा होती थी और फिर संध्या से अर्धरात्रि तक श्रीदीन-दुःख-भंजन के स्थान पर पहुँच कर, चैत और शरद की निर्मल चाँदनी में अलौकिक आनंद लूटते थे। अब इस जीवन में उस आनंद की आशा नहीं। हाँ स्वर्ग में यह सुख मिले, तो मिले। अब तो व्यासजी का यह वचन स्मरण कर कलेजा थाम कर रह जाना पड़ता है "ऐसे कठिन कराल काम में कर्मी व्यासै उपजायौ"। आप प्रथम आनंद-कंद श्रीकृष्णचंद्र की किशोर-लीला के उपासक थे। पर जब से श्रीअवध-विलासी मिथिली-उपासक पूज्य पुजारी जागदेवदासजी तथा प्रेमी श्री सियारामशरणजी ने जनकपुर के गुप्त रहस्य का मर्म समझाया तब से युगुल सरकार की दिव्य छटा आपके चित्त में समा गई है। चित्रकूट-निवासी परमहंस वेषधारी मिथिली-उपासक महात्मा रामलखनशरणजी की कृपा से भी आप को लाभ पहुँचा। श्री पूज्यवर पुजारी जयदेवदासजी, जिनकी प्रशंसा श्रीनाभा-दासकृत भक्तमाल के तिलक के रचयिता अवध के प्रेमस्तंभ किन्हीं

साहिब भगवानदास (सीतारामशरणजी) ने अपने एक सौ आठ संतों के नामावली में की है, भगवत् शृंगार रस के विलक्षण रसज्ञ और रसिकों के मुकुट-मणि हैं। आप इस समय "कनक भवन" में निवास करते हैं। इनके प्रेम का प्रभाव, 'प्रीतम' जी के हृदय पर, इतना पड़ा हुआ है कि इनकी सानी का रसज्ञ इन दिनों आप भूमण्डल में नहीं समझते। आपने श्रीअवध, श्रीचित्रकूट और अन्य अन्य स्थानों में इनकी पीयूष-वर्षी रसना में भगवत् रसास्वादन किया है। परम पूज्य गोस्वामी तुलसीदासजी की वाणी को ही "प्रीतम" जी भव-सिंधु से पार करानेवाली समझते हैं। "प्रीतम-शतक" के किसी सवैया के अन्त में आपने कहा है—"तुलसी मुख डारत अन्त समय सुधि आवहि आरत में तुलसी की"। और भी इसी शतक में किसी समय कहा है—

सन्तानको सोच नहीं कछु 'प्रीतम' चाह नहीं मनमें धनकी।
जिन बालपनेसे सुधारी सदा सुधि लैहैं वही वृद्धापनकी॥
धनि धन्य गोसाईंजू डार गये हमें देहरी जानकी जीवनकी।
अब तो रघुराज गरीब निवाज के हाथ है लाज दुखी जनकी॥

फिर भी आपकी दम गनीमत है। जो प्रेमी सत्संग की अभिलाषा प्रकट करते हैं, उन्हें कोई न कोई सरस प्रसंग सुनाकर उनके हृदय को आप अवश्य विश्राम देते हैं। प्रेमी की सत्संग की इच्छा जितनी ही बढ़ती जाती है, आपका हृदय-सरोवर उससे दूना उमड़ता जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी कण्ठ गद्गद हो जाता है। और अश्रु धारा-प्रवाह चल पड़ते हैं, वाणी शिथिल हो जाती है। चाहे कोई भी क्यों न बैठा हो, लोक-लज्जा एक कोने ही में रक्खी रह जाती है। आपके इस प्रेम-दशा की नशा घंटों तक नहीं उतरती। आपके आत्मिक

अक्सर से नगर के अच्छे-अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हाकिम-हुक्काम तथा सेठ अपने धंधे से फ़ुर्सत पाकर, जिनमें एक न एक बार अवश्य ही मिल जाया करते हैं। केवल इतना ही नहीं भी अन्य के प्रतिष्ठित गुण-ग्राही महानुभावगण भी जिनसे आपका परिचय है, अपने सत्संग की भाव-गंभीरता की अवस्था में आपका बराबर स्मरण करते हैं।

अनुवादक के रचित अन्य ग्रन्थ

गद्य

महात्मा बुद्ध का जीवनचरित

पद्य।

१ गो-पुकार
२ बुन्देलखण्ड का पराक्रम
३ श्रीकृष्ण जन्मोत्सव
४ श्रीप्रताप-चरित
५ टू बेकर का उर्दू अनुवाद
६ अङ्गरेज़ विलेख
७ शान्ति-शतक
८ श्रृंगार-शतक
९ स्फुट पद्यावली
१० सुदामा-सम्मिलन
११ राहुल विवाह
१२ *कुविख्यात प्रीतम*
१३ विदुर-मैत्री-सम्मिलन

प्राचीन कवियों पर श्रद्धा

'निज कवित्त केहि लाग न नीका' भाषा कवियों का यह स्वभाव ही रहा है। पर आप इसके साथही प्राचीन महाकवियों को अपना इष्ट भी मानते हैं। उनकी वाणी से निःसृत अमृत-सरोवर में आप सदा निमग्न रहते हैं। दीगर ज़बानों के कवियों पर भी आपकी एक सी श्रद्धा है। फ़ारसी-उर्दू के मशाहिर शोअरा के सैकड़ों अशआर आपको कण्ठस्थ हैं। "शान्ति-शतक" नामक अप्रकाशित ग्रंथ में सबकी वाणी की निष्कर्ष एकत्र कर, आपने मानव-जीवन का यह सार निकाला है :—

रसना रस जीवन को है यही, जय जानकी नाथ रहै मरसानी।
तुलसी शुक सूर रची हितकी, निकसै मुखसों मृदु मञ्जुल बानी॥
जय रामहिं रामसो आठहु याम, जिये जग जीह सुधा-रस सानी।
मन मंदिर में विहरैं नित 'प्रीतम' कौशलराज सिया महरानी॥

आधुनिक जीवन

इनफ्लूएंजा नामक विकराल कालज्वर में आपका प्रिय भामिनी से सदा के लिए वियोग हो गया। इससे आप अब गृहस्थी में भी फ़क़ीरों की तरह जीवन व्यतीत करते हैं। इस संसार में, रसिकों के लिए, एक यही दुःख ऐसा है, जो चित्त की दशा बदल सकता है। इस महादुःख ने, केवल आपही का दिल नहीं दुखाया, बल्कि अच्छे अच्छे नरेशों, विद्वानों और कवियों का मन भी उथल-पुथल कर दिया। किसीने अपनी प्राणप्यारी प्रियतमा के वियोग में महल बनाकर उसकी यादगार क़ायम की, किसी ने संसार से उदास होकर फ़कीरी का बाना बाँधा, और किसी ने उसके नाम को क्षेत्र खोलकर अमर रक्खा और किसीने कविता रचकर अपने प्रेम को प्रकट किया। आपने भी निम्नलिखित शोक-सम्पुटित पद रचकर संसार की सप्त मंज़िल का दृश्य दो-चार ही कड़ी में दिखलाकर वियोग की आग शान्त की है, तथा अगले जन्म तक अपने पूर्व-जन्म का संयोग कायम रख, दूसरी बार भी मिलने का विचार प्रकट कर दिया है। सहृदय सज्जन इसे पढ़कर इस महादुःख का एक बार तो अवश्य ही अनुभव करेंगे—

प्रिया मुख देख उपज्यौ शोक
झलक हिये छलके विलोचन, पलक जल रहे रोक॥

रचि चिता शैय्या बनाई, निज करन सों हाय ।
धरि नजर फिर मुख बिलोक्यो, सेज पर पौढ़ाय ॥
दिउर हिय फिर स्मरण मे, प्रथम के संयोग ।
मिलनकी वह शुभ मुहूरत आज हाय ! वियोग ॥
वह चढ़ाये चौक आसन, करि सकल शृंगार ।
जगमगत माथे पै बेंदा अब देत बहार ॥
चटक चूनर चटक झुमकी अधर छुर लहराय ।
गज-गमनि सों ठुमक ठग चलि चौक बैठी आय ॥
हरित मंडप खंभ पियरे सरस आम्रम पात ।
पवन झोंकन झुकत सुर उर प्रेम सों लहरात ॥
सुख पटन पर बैठ सन्मुख जुरे चंचल नैन ।
परस्पर हिय भाव दरसे, बिन कहे कछु बैन ॥
शुभ घड़ी वह गाँठ जोरन अशुभ दिन ये आज ।
देह मिल हित भाग राखत, नेह उपजत लाज ॥
सुजन सन्मुख तुम चली प्रिय, लिए मोदक हाथ ।
मुख तकत रह गये ठाड़ हाय ! जीवन नाथ ॥
कमल नयनी गुण सुमिर अब, उठत है उर शूल ।
धकधकी अति होत हिय में सुनि चिताके फूल ॥
माघ शीतल कहँ मिलो अब प्रिया फिर परलोक ।
बिन कहे हिय मरम भामिनि जात किमि यह शोक ॥

अब साधारण जीवन व्यतीत करते हुए, मासिक वेतन से जो बच रहता है, वह पतीत मे खर्च कर देते हैं, और आप

फाक़ामस्त रहते हैं। आप प्रकृति-उपासक हैं। बहुधा पावस, वसन्त, ग्रीष्म में पर्वतों की शिखर, हरित वन या झरनों के किनारे, रसिकों सहित सत्संग का रंग बरसाते हैं। द्वादस भक्त प्रवीण के छप्पय में, जो रसखान का नाम आया है, वह एक मुसलमान सज्जन हैं, परन्तु हर समय कृष्ण-रंग ही में रँगे रहते हैं, गोपिका गीत ही गाया करते हैं। पावस ऋतु में किसी समय प्रीतम सहित सिद्धों की गुफा पर, जो बिजावर से पश्चिम ओर एक मील की दूरी पर है, जाकर निर्मल जलके किनारे रसखान ने यह तान खींची—

हरि छबि रही नैननि छाय।
निरखि सजनी श्याम सुदर बन चरावत गाय॥
मुकुट सिर कर लकुट कटि तट पीत पट फहराय।
नाम लैलै धेनु फेरत, सरस बेणु बजाय॥
ललित नूपुर बजत रुन-झुन, धरत धरनी पाँय।
निरखि मृदु घनश्याम मूरति, मोर निरतत आय॥
दुदुभी सुरपति बजावत, घन घटा घहराय।
विमल उर बनमाल हिलुरत जमुन जल लहराय॥
चंद्र मुख लखि खिली ललना, कुमुदनी समुदाय।
प्रिया प्रेम प्रमोद प्रमुदित, प्राण 'प्रीतम' पाय॥

रसखान के इस सरस तान से प्रमुदित होकर 'प्रीतम' जी ने उनकी शान में यह सवैया कहा:—

घनघोर घटा रही घूम और झूम हरी हरी भूमि उकाननपै।
झिरना झिरसान बजाय रहे मनौ सिद्ध गुफानके आननपै॥

मस मौंर व मोरैं नयैं मनकी, रसखान की प्यारी सीतानननै।
रस छूट रहे जगजीवनको कवि 'प्रीतम' बैठ परानननै॥

उर्दू अनुवाद पर दो शब्द

यह समस्त उर्दू पद्यानुवाद, आपके वर्ष भरके परिश्रम का फल है। अनुवाद की भाषामें मधुरता है। यद्यपि कहीं-कहीं फ़ारसी के शब्दों से भी काम लिया है पर उनमें कोई शब्द, ऐसा नहीं जो गैर मालूम हो। बिहारी के अलंकारों का कहीं ख़ात्मा न जाने पाय इससे जान-बूझकर ज्यों के त्यों शब्द कई जैसे के तस लिए गये हैं। आपके अनुवाद में उर्दू केवल नाममात्र को ही है। उर्दू ही आज कल की भाषा हिंदी बन गई है जिसे हम खड़ी बोली के नाम से पुकारते हैं और जो राष्ट्रीय भाषा का स्वागत कर रही है। उर्दू लिपिमें संस्कृत के शब्द प्रकाशित करने में ठीक यथार्थता की जितनी अड़चन हो सकती है उतनी उर्दू शब्द को नागरी में प्रकाशित करने से नहीं। इस लिए, यह निश्चित करके युगुल भाषामें रसिक सज्जनों के मनोरंजनार्थ यह गुलदस्ता प्रथम बार हिन्दी नागरी लिपिमें ही प्रकट हुआ है। आशा है कि इस सुमन-गुच्छ के विविध रंगके प्रफुल्लित पुष्पों की भाव-भरित मकरंद-सुगंधि पर भावुक मधुकरों का हृदय-कमल अवश्य ही प्रफुल्लित हुए बिना न रह सकेगा।

श्रीनाथ द्वारा,
शुभ ज्येष्ठ शुक्ल ११, सोम
सं० १९८० विक्रमी

बिजावर-निवासी
भट्ट पुरुषोत्तम शर्मा तैलंग

प्रकाशक के दो शब्द

कुछ दिन हुए काशी-हिन्दू-विश्व विद्यालय के हिन्दी प्रोफ़ेसर लाला भगवानदीनजी ने बिहारी-सतसई के प्रस्तुत उर्दू पद्यमय अनुवाद का कुछ अंश हमें दिखाने की कृपा की थी। अनुवाद सरस, सरल एवं सुंदर देखकर हमारी इच्छा हुई कि इसे भी हम अपने उसी "काव्य-ग्रन्थ-माला" में गूथें, जिसके बिहारी-सतसई के सटीक संस्करण को हिन्दी-संसार ने बहुत ही पसंद किया था। हमने अपनी यह अभिलाषा श्रद्धेय लालाजी पर प्रकट की, जिनकी विशेष कृपा से हमें यह पुस्तक प्राप्त हुई।

अनुवाद का हस्तलेख (manuscript) पाते ही हमने "सरस्वती" में इस आशय की एक सूचना प्रकाशित कर दी कि बिहारी-सतसई का श्रीयुत 'प्रीतम' जी कृत उर्दू पद्यमय अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होगा। फिर क्या था! आर्डर धड़ा-धड़ आने लगे, जिनका ताँता अब तक जारी है।

पर, हमें दु:ख है कि कई अनिवार्य कारणवश हम इसे अब तक न निकाल सके थे। इतने दिनों तक पुस्तक के लिए, अपने अनुग्राहक-ग्राहकों तथा अन्य हिन्दी प्रेमियों को, जो हमने उत्सुकतावस्था में रखा, उसके लिए हम उनसे क्षमा-प्रार्थी हैं। आज इसे हिन्दी-संसार के सम्मुख उपस्थित करने में हमें बड़ी ही प्रसन्नता होती है।

"भिन्न रुचिर्हि लोक:" का खयाल करके तथा प्रस्तुत अनुवाद के प्रेमियों के इच्छानुसार हमें इसके तीन प्रकार के संस्करण निकालने पड़े हैं। एक में मूल दोहोंके नीचे, सिलसिले से, हिन्दी-लिपि में अनुवाद के शेर रखे गये हैं, दूसरे में, साथ ही, कुल शेर, उर्दू, लिपि मेंभी, पुस्तकान्त में संग्रहीत कर दिये गयेहैं, और तीसरे में शेर मात्रही उर्दू लिपि में हैं। यह तीसरा

संस्करण उर्दू-प्रेमी, किन्तु हिन्दी-भाषा से अनभिज्ञ सज्जनों के काम का है। साधारण उर्दू जाननेवाले सज्जन अरबी और फ़ारसी के कठिन शब्दों का मतलब नहीं समझते। उनके सुभीते के ख़याल से पुस्तकान्त में ऐसे शब्दों के अर्थ भी दे दिये गये हैं।

हमने इन संस्करणों को भरसक सर्वांग पूर्ण बनाने की पूरी चेष्टा की है। फिर भी बहुत संभव है, अति शीघ्र मुद्रण के कारण कुछ त्रुटियाँ रह गई हों। अगली आवृत्ति में ऐसी त्रुटियाँ दूर कर दी जायँगी और छूटी हुई प्रेस-संबंधी भूलों का भी सुधार कर दिया जायगा।

श्रीयुत बाबू भगवानदीनजी ने प्रस्तुत अनुवाद के प्रूफ़ को भी एक बार देख लेने की कृपा की है। अतएव इसके लिए हम आप के विशेष रूप से कृतज्ञ हैं।

विनीत—

गंगा प्रसाद शुक्ल,

व्यवस्थापक।

॥ श्रीहरिः ॥

गुलदस्तए-बिहारी

[१]

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परें, स्याम हरित दुति होय॥
मेरे अफ्कारे-दुनिया दूर कीजे राधिका रानी।
कि जिनके सायएतन से, हरे हों श्याम नूरानी॥

[२]

सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यहि बानिक मो मन सदा, बसौ बिहारीलाल॥
मुकुट सिर, काछनी जेबे कमर, सीने पै वनमाला।
लिये हाथों में मुरली, दिलमें वसिये मेरे नँदलाला॥

[३]

मोहनि मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोय।
बसति सुचित अंतर तऊ, प्रतिबिम्बित जग होय॥
अजबे कुछ श्याम की उस मोहनी सूरत में शक्ती है।
बसी गो शीशए-दिल में, मगर बाहर झलकती है॥

[४]

तजि तीरथ हरि-राधिका,-तनदुति करि अनुराग।
जिहिं ब्रज केलि-निकुञ्ज-मग, पग पग होत प्रयाग॥
तजो तीरथ, भजो हरि राधिका का जिस्म नूरानी।
त्रिवेनी-जिनके केलों से है पग २ मगे च-आसानी॥

[५]

सघन कुंज छाया सुखद, सीतल मंद समीर।
मन ह्वै जात अजौं वहै वा जमुना के तीर॥
हवा ठन्डी घनी कुंज और छाया मिहरबाँ है।
वह-बहरे-जमुन अब भी वहीं कैफ़ियत आती है॥

[६]

सखि सोहति गोपाल के उर गुंजन की माल।
बाहिर लसति मनो पिए दावानल की ज्वाल॥
सखी ब्रजराज के उर राजती है गुंज की माला।
रही है झिलमिला पीया दवानल की मगर ज्वाला॥

[७]

जहाँ जहाँ ठाढ़ौ लख्यौ स्याम सुभग सिर-मौर।
उनहूँ बिन छिन गहि रहति दृगनि अजौं वह ठौर॥
जहाँ देखे थे जिस जिस जा धरे सिर पर मुकुट सुन्दर।
पकड़ रखती है उन बिन वह जगह अबभी निगाह दमभर॥

[८]

चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर।
को घटि ए वृषभानुजा वे हलधर के बीर॥
मुबारिक, क्यों न इस जोड़ी में उल्फ़त हो ज़ियादा तर।
बिरादर हैं ये हलधर के वो हैं वृषभानु की दुख़्तर॥

[९]

नितिप्रति एकतही रहत बैस बरन मन एक।
चहियत जुगल किसोर लखि लोचन जुगल अनेक॥
बरन मन बैस है इक साथ भी बाला नहीं छोड़ा।
या जोड़ी देखने को चाहिये आँखों का कई जोड़ा॥

[१०]

मोर मुकुट की चंद्रिकनि, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससिसेखर के अकस, किय सेखर सतचंद॥
हिजाले-ताज ताऊसी की ज़ीनत का है यह कारण।
चजिदे चन्द्रशेखर ये किये सद चन्द्र हैं धारण॥

[११]

नाचि अचानक ही उठे, बिन पावस वन मोर।
जानति हौं नंदित करी, यह दिसि नंद किसोर॥
अचानक नाच उठे वन मोर बिन ही घोर घन छाये।
समझ पडता है, शायद इस तरफ़ घनश्याम जी आये॥

[१२]

प्रलय करन बरषन लगे जुरि जलधर इकसाथ।
सुरपति गर्व हर्यौ हरषि, गिरिधर गिरिधरि हाथ॥
लगे मिलकर बरसने मेघ बरपा कर दिया महशर।
बहाई इन्द्र की शेख़ी, लिगी गिरिधर ने गिरि धरकर॥

[१३]

डिगत पानि डिगुलातगिरि, लखि सब ब्रज बेहाल।
कप किसोरी दरस तें खरे लजाने लाल॥
हिला गिरि-हाथ हिलने से, हुई ब्रजजन को अकुलाहट।
लजाए लाल लरजा हो, लली नूपुर की सुन आहट॥

[१४]

लोपे कोपे इन्द्र लौं, रोपे प्रलय अकाल।
गिरिधारी राखे सबै, गो गोपी गोपाल॥
क़ियामत इन्द्र ने बेवक़्त करदी, कह कर भारी।
मुहाफ़िज़ बनगये गो गोप गोपीगन के गिरिधारी॥

[१५]

लाज गहौ बेकाज कत घेरि रहे घर जाहिं।
गोरस चाहत फिरत हौ, गोरस चाहत नाहिं॥
बेबस घेरे खड़े शरमाइये जाने भी घर दीजे।
नहीं गोरस का रस रसिया बने गोरस का रस पीजे॥

[१६]

मकराकृति गोपाल के कुंडल सोहत कान।
धस्यौ समर हिय गढ़ मनौ ड्योढ़ी लसत निसान॥
ये मकराकृत कुंडल कान में हैं श्याम सलूनी।
मदन ध्वजा घसा है जिसमय हिय में गढ़े भूपो॥

[१७]

गोधन तू हरष्यो हिये घरियक लेहि पुजाय।
समुझि परैगी सीस पर परत पसुन के पाय॥
पुजाले दो घड़ी गोधन खुशी से मग्न हो दिन भाय।
मज़ा चक्खेगा जब रक्खेंगे सरपर पाँव चौपाय॥

[१८]

मिलि परछाहीं जोन्ह सों रहे दुहुनि के गात।
हरि राधा इक संग ही चले गली में जात॥
छिपे महताबो साया म प्रिया प्रीतम के तन हिम मिल।
चले जाते हैं मज़ गलियों रही है चाँदनी सी खिल॥

[१९]

गोपिन सँग निस सरद की, रमत रसिक रस रास।
लहाछेह अति गतिन की, सबनि लखे सब पास॥
रमे रस रास गोपिन सँग शरद की रैन उजियारी।
हरएक ने पास अपनेपाया से एक सूरत श्यामी प्यारी॥

[२०]

मोर चद्रिका स्याम सिर, चढ़ि कत करति गुमान।
लखिवी पायनि पर लुठत, सुनियत राधा मान॥
शिखिन की चन्द्रिकन सर श्याम चढ, इतना न इतराना।
लखेंगे लोटते पैरों, सुना प्रिय मान है ठाना॥

[२१]

सोहत ओढ़े पीतपट, स्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि सैलपर, आतप पर्‌यो प्रभात॥
सलोने श्यामले तन पर झलकता यों है पीतअम्बर।
पडे सूरज की किरने सुव्‌ह ज्यों कुहसार नीलम पर॥

[२२]

किती न गोकुल कुलवधू, काहि न किन सिप दीन।
कौने तजी न कुल गली, है मुरलीसुर लीन॥
न गोकुल में थीं कितनी खानदानी, किसने क्या मानी।
हुई मुरली की धुन सुन कौन कुल तजकर न दीवानी॥

[२३]

अधर धरत हरि के परत, ओठ डीठ पट जोति।
हरित बांस की वांसुरी, इन्द्रधनुष सी होति॥
अधर धरते अधर पट डीठ की आभा झलकती है।
हरी हरि की मुरलि क़ौसे-क़ुजह के रँग दमकती है॥

[२४]

छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोवन अग।
दीपति देह दुहूनि मिलि, मनहुँ ताफता रग॥
लडकपन की झलक औ नूर आगाज़े जवानी है।
बरंगे ताफ़ता दोनों की ज़ू से जिस्म जानी है॥

[२५]

तिय तिथि तरनि किसोर वय पुन्यकाल सम दौन ।
काहू पुन्यनि पाइयत, बयस सन्धि संक्रौन ॥
जो यह तिथि माहजबीं, पक मक़रस दोनों यकसाँ हैं ।
ये संक्रान्त और तबदीलीए-सिन पाना न आसाँ है ॥

[२६]

लाल अलौकिक लरकई, लखि लखि सखी सिहाति ।
आज काल्हि मैं देखियत उर उकसौंही भाँति ॥
अलौकिक लड़काई सब सब सखी उसकी सिहाती है ।
हुई कुछ आजकी कस्में जो उकसाहीं सी छाती है ॥

[२७]

नावक उमगौहीं भयौ कछुक पर्यो भरु आय ।
सीपहरा के मिस हियौ, निसि दिन हेरत जाय ॥
उभरती सी हुई छाती पन्न है भार सीने पर ।
वो दामन देखती रहती है सीपका हारका मिस कर ॥

[२८]

इक भीजे चहले परे, बूड़े बहे हजार ।
किते न अवगुन जग करत नै वै चढ़ती बार ॥
कोई भीगे पड़े चहले कोई डूबे बहे सरदा ।
नहीं क्या क्या सितम करती है चढ़ती उम्र की दरिया ॥

[२९]

अपने तनक जानि कै जोबन नृपति नवीन ।
स्तन मन नैन नितम्ब कौं, बड़ो इजाफा कीन ॥
जवानी अपना समझकर, शाह आपन के है अपनाया ।
इजाफ़ा चश्म पिस्तानों सुरीनो दिल का फरमाया ॥

[३०]

देह दुलहिया की बढ़ै, ज्यों ज्यों जोबन जोति।
त्यौं त्यौं लखि सौतें सबै, बदन मलिन दुति होति॥
तरक़्क़ी जिसक़द्र दुलहन की जोवन जोत ने पाई।
ज़ियाए रूए अग़ियार है त्यों त्यों और कुम्हलाई॥

[३१]

नव नागरि तन मुलक लहि, जोवन आमिल ज़ोर।
घटि बढ़ि ते बढ़ि घटि रक़म, करी और की और॥
तने-ख़ातून-नौ की सल्तनत जो हाथ आई है।
रक़म जोवन के आमिल ने घटाई कुछ बढाई है॥

[३२]

लहलहाति तन तरुनई, लचि लगि लौं लफि जाय।
लगै लांक लोयन भरी, लोयन लेति लगाय॥
तरावत लहलही तन पर, कमर है बेद सी झुकती।
नज़ाकत देखकर ये आँख बिन चिपके नहीं रुकती॥

[३३]

सहज सचिक्कन स्याम रुचि, सुचि सुगंध सुकुमार।
गनत न मन पथ अपथ लखि, बिथुरे सुथरे बार॥
मुरग़न कुदरतन मुश्की मुलायम हम पुर-अज़-ख़ुशबू।
नहीं दिल घाट औघट देखता, देखे परेशाँ मू॥

[३३]

वेई कर ब्यौरनि वहै, ब्यौरौ कौन बिचार।
जिनही उरझ्यौ मो हियौ, तिनहीं सुरझे बार॥
वही हाथ और सुलझाना है ऐ दिल मूशिगाफ़ी कर।
है उलझा जिससे तू सुलझा रहा गेसू वही दिलवर॥

[१५]

कच समेटि भुज कर उलटि, खरी सीस पट डारि ।
काको मन बाँधै न यह जूरो बाँधनि हारि ॥
समेटे हाथ से गेसू उलट कर शाना पर डाले ।
फँसा सकते नहीं किसको ये जूड़ा बाँधने वाले ॥

[१६]

छुटें छुटावें जगत में, सटकारे सुकुमार ।
मन बाँधत बेनी बँधे नील छबीले बार ॥
छुड़ाते हैं छुटे जगसे जो नाज़ुक बाल सटकारे ।
बँधे मन बाँधने बेनी छबीले नील घुँघरारे ॥

[१७]

कुटिल अलक छुटि परत मुख, बढ़ि गौ इतो उदोत ।
बंक बिकारी देत ज्यों, दाम रुपैया होत ॥
बढ़ी मुखड़े की रौनक उस पै टेढ़ी ज़ुल्फ़ के आने से ।
कि जैसे दाम रुपया हो बिकारी के लगाने से ॥

[१८]

ताहि देखि मन तीरथनि विकटनि जाय बलाय ।
जा मृगननी के सदा बेनी परसत पाय ॥
उसे तज आ निकल तीरथ उठावे कौन बेचैनी ।
कि जिसके पाक पायों को परसती है सदा बेनी ॥

[१९]

नीको लसत ललाट पर टीको जरित जड़ाय ।
छबिहिं बढ़ावत रवि मनो, शशिमंडल में आय ॥
तेरा टीका मुरस्सअ क्या जबीं पर ख़ूब आया है ।
क़मर के दायरे में शम्स ने ज़ौ को बढ़ाया है ॥

[४०]

सबै सुहाए ई लगै, बसत सोहाये ठाम।
गोरे मुख बेंदी लसै, अरुन पीत सित स्याम॥
सुहाई जगह बसने से अजब छवि इनमें छाई है।
सफेदो-सुर्ख श्यामोजर्द बेंदी मुख सुहाई है॥

[४१]

कहत सबै बेंदी दिये, आँक दस गुनौ होत।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत॥
सुना, बेंदी अदद की दस गुना कर देती है क़ीमत।
तेरी बेंदी ने पेशानी को दी लाइन्तिहा ज़ीनत॥

[४२]

भाल लाल बेंदी छये, छुटे बार छवि देत।
गह्यौ राहु अति आह करि, मनु ससि सूर-समेत॥
हैं बिखरे बाल बेंदी लाल झुरमट मुख पै बहुतेरा।
क़मर के साथ ही गोया ज़नब ने शम्स को घेरा॥

[४३]

पायल पाय लगी रहै, लगे अमोलक लाल।
भोडलहू की भासिहै, बेंदी भामिनि भाल॥
पडी पैरों है पाजेबे मुरस्सा लाल लासानी।
बना अबरक़ है बेंदी महजबीं की चढ़ के पेशानी॥

[४४]

भाल लाल बेंदी ललन, आषत रहे विराजि।
इंदु कला कुज में बसी, मनौ राहु भय भाजि॥
पड़ीं चावल की अफशाँ, सुर्ख बेंदी बिच है माथे पर।
हिलाल आकर छिपा मिर्रीख़ में ख़ौफ़े ज़नब खाकर॥

[१५]

कच समेटि भुज कर उलटि, खरी सीस पट डारि।
काको मन बाँधै न यह जूरौ बाँधनि हारि॥
समेट हाथ से गेसू उलट कर-शाना पर डाले।
फँसा सकते नहीं किसको ये जूड़ा बाँधने वाले॥

[१६]

छुटैं छुटावैं जगत तें, सटकारे सुकुमार।
मन बाँधत बेनी बँधे, नील छबीले बार॥
छुड़ाते हैं छुटे जगसे जो नाज़ुक बाल सटकारे।
बँधे मन बाँधते बेनी छबीले नील घुँघरारे॥

[१७]

कुटिल अलक छुटि परत मुख, बढ़ि गौ इतौ उदोत।
बंक बिकारी देत ज्यों, दाम रुपैया होत॥
बढ़ी मुखड़े की रौनक़ जब पै टेढ़ी लट के आने से।
कि जैसे दाम रुपया हो बिकारी के लगाने से॥

[१८]

ताहि देखि मन तीरथनि बिकटनि जाय बलाय।
जा मृगनैनी के सदा बेनी परसत पाय॥
उसे तज जा बिकट तीरथ बलावै कौन बेचैनी।
कि जिसके पाक चरणों को परसती है सदा बेनी॥

[१९]

नीकौ लसत लिलार पर, टीकौ जटित जराय।
छबिहिं बढ़ावत रबि मनौ, ससिमंडल में आय॥
तेरा टीका मुरस्सम क्या जबीं पर नूर लाया है।
क़मर के दायरे में शम्स ने जी को बढ़ाया है॥

[४०]

सबै सुहाए ई लगै, बसत सोहाये ठाम।
गोरे मुख बेंदी लसै, अरुन पीत सित स्याम॥
सुहाई जगह बसने से अजब छवि इनमें छाई है।
सफेदो-सुर्ख श्यामोजर्द बेंदी मुख सुहाई है॥

[४१]

कहत सबै बेंदी दिये, आँक दस गुनौ होत।
तिय लिलार बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत॥
सुना, बेंदी अदद की दस गुना कर देती है कीमत।
तेरी बेंदी ने पेशानी को दी लाइन्तिहा ज़ीनत॥

[४२]

भाल लाल बेंदी छये, छुटे बार छबि देत।
गह्यौ राहु अति आह करि, मनु ससि सूर समेत॥
हैं बिखरे बाल बेंदी लाल मुरस्सा मुख पै बहुतेरा।
क़मर के साथ ही गोया ज़नब ने शम्स को घेरा॥

[४३]

पायल पाय लगी रहै, लगे अमोलक लाल।
भोड़लहू की भासिहै, बेंदी भामिनि भाल॥
पड़ी पैरों है पाजेबे मुरस्सा लाल लासानी।
घना अबरक़ है बेंदी महजबीं की चढ़ के पेशानी॥

[४४]

भाल लाल बेंदी ललन, आखत रहे बिराजि।
इंदु कला कुज में बसी, मनौ राहु भय भाजि॥
पड़ीं चावल की अफशाँ, सुर्ख बेंदी बिच है माथे पर।
हिलाल आकर छिपा मिर्रीख में ख़ौफ़े ज़नब खाकर॥

[५५]

पर मोहे सर मैन के ऐसे देखे मैं न।
हरिनी के नैनान तें हरि नीके ए नैन॥

है तीरे हुस्न की भी इनके आगे ईज़िला फीकी।
ये हिरनी की भी आँखों से हैं आँखें दरहु हरि नीकी॥

[५६]

संगति दोष लगै सबै, कहे जु साँचे बैन।
कुटिल बंक भ्रू संग तें भए कुटिल गति नैन॥

कहा है सच, कहाँ तासीर सुहबत ने न दिखलाई।
तेरी भवों ने पुरख़म से कजी चितवन को सिखलाई॥

[५७]

इगनि लगत बेधत हियो बिकल करत मँग आन।
ए तेरे सब तें विषम, ईछन तीछन बान॥

लगी आँखों में चोटें दिल, व गुज़रन उजुव हाँ सारे।
तेरे तीरे नज़र में क्या गज़ब का ज़हर है प्यारे॥

[५८]

झूठे जानिन संमहे मनु मुँह निकसे बैन।
याही तें मानो किये बातनि का विधि नैन॥

ज़बाँ की गुफ्तगू में अजब के भी झौस का पाया।
इसी से बात करना आँख को मैवर ने सिखलाया॥

[५९]

फिरि फिरि दौरत देखियत निचले नेकु रहैं न।
ए कजरारे कौन पै करत कजाकी नैन॥

हैं फिर २ दौड़ती य है गज़ब की इन में मरदाकी।
ये किस पर सुरमगीं आँखें किया करती हैं क़ज़्ज़ाकी॥

[६०]

खरी भीरहू भेदि कै, कितहू है उत जाय।
फिरै डीठि जुरि दुहुँन की, सब की डीठि बचाय॥
बड़ी भी भीर को ये चीर आपुस में मिल-आती हैं।
बचा सब की नजर दोनो की नजरें लौट जाती हैं॥

[६१]

सबही तन समुहात छिन, चलति सबनि दै पीठि।
वाही तन ठहराति यह, कबिलनुमा लौं डीठि॥
सभी के रूबरू जा जा ये हरदम पीठ करती हैं।
उसी के रुख नजर क़िब्लानुमा सी जा ठहरती हैं॥

[६२]

कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं, नैनन ही सौं बात॥
मुकरती इल्तिजापर रीझ खिझ मिल खिल लजाती है।
भरे घर में सुलोचन बात गमज़ों से बनाती है॥

[६३]

सब अँग करि राखी सुघरि, नायक नेह सिखाय।
रसजुत लेति अनन्त गति, पुतरी पातुर राय॥
सिखाई नेह नायक ने रसीली हरकतें लाखों।
है खातूनुत्तवायफ लै रही पुतली गतें लाखों॥

[६४]

कमनयानि मजन किये, वैठी ब्यौरति बार।
कच अँगुरिन बिच डीठि दै, निरखति नदकुमार॥
कमल लोचन किये मंजन है बैठी बाल सुलझाती।
निगह अंगुश्त काकुल बिच है-प्रीतम देखती जाती

[५५]

दीठि बरत बाँधी अटनि चढ़ि धावत न डरात।
इत उततैं चित दुहुनि के नट लौं आवत जात॥
रसन तारे नज़र की बाँध अटों नट सैर करते हैं।
इधर से दिल उधर दोनों के चढ़ जाई, न डरते हैं॥

[५६]

जुरे दुहुनि के दृग झमकि रुके न झीने चीर।
हलकी फौज हरौल ज्यों परत गोल पै भीर॥
न रुक सका झीन से पट मानस झमक दोनों के लड़ते हैं।
हरावल तौर हलकी गोल पर ज्यों टूट पड़ते हैं॥

[५७]

सीस हूं साहस सहस कीने जतन हजार।
लोयन लोयन सिंधु तन पैरि न पावत पार॥
ब-उम्मीदे शनावर आर जो लाखों लगाते हैं।
न डीरे बड़े उनको पैर कर पर पार पाते हैं॥

[५८]

पसुमति डाटि रन सुभट लौं रोकि सकत सब नाहिं।
लाजन हू की भीर मैं झाँसि उठै चलि जाहिं॥
सिपाहर की तरह करता है जो कुछ कर गुज़रती हैं।
हज़ारों की सफ़ों को चीर आँखें पार करती हैं॥

[५९]

गड़ी कुटुँब की भीर में रही बैठि दै पीठि।
तऊ पलक परि जात उत सलज हँसौंही डीठि॥
कुटुम की भीर में दे पीठ बैठी हैं बन्नी आँखें।
उधर तकती हैं फिर फिर पुरतबस्सुम शर्मगीं आँखें॥

[७०]

भौंह उचै आचरु उलटि, मौर मोरि मुँह मोरि ।
नीठि नीठि भीतर गई, डीठि डीठि सों जोरि ॥
अदा से मौर मुड, अब्रूनचा, मुहँ फेर उलट आँचल ।
मिला आँखों से आखें होगई आहिस्ता से ओझल ॥

[७१]

ऐंचत सी चितवनि चितै, भई ओट अलसाय ।
फिरि उझकनि कौं मृगनयनि, दृगनि लगनिया लाय ॥
हुई दिलकश नजर से देख ओझल लैके अंगड़ाई ।
उठा सर फिर वो आहूचश्म आँखें ताक में लाई ॥

[७२]

सटपटाति सी ससि मुखी, मुख घूँघट पट ढाँकि ।
पावक झर सी झमकि कै गई झरोखा झाकि ॥
वशोखी माहरू ने शर्म से घूँघट में मुहँ ढाँका ।
वरंगे शोलए आतिश झरोखे से जरा झाँका ॥

[७३]

लागत कुटिल कटाच्छ सर, क्यों न होंहि वेहाल ।
कढ़त जु हियो दुसार करि, तऊ रहत नटसाल ॥
खदगे चश्मके लगने ही, क्यों-कर दिल न हो गलताँ ।
निकल जाता है गो नावक, खटकता रहता है पैकाँ ॥

[७४]

नैन तुरगम अलक छवि, छरी लगी जिहि आय ।
तिहिं चढ़ि मन चचल भयो, मति दीनी विसराय ॥
समन्दे चश्म को जव शाख, गैसू का लगा कोड़ा ।
मेरा दिल था सवार उसपर, इनाने-अक्ल को छोड़ा ॥

[८०]

नावक सर से लाय कै, तिलक तरुनि इत ताकि ।
पावक झर सी झमकि कै, गई झरोखा झाकि ॥
लगाकर क़शक़ए, सन्दल बना नावक सा इक बाँका ।
बरंगे शोलए आतिश झरोके से जरा झाँका ॥

[८१]

अनियारे दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान ।
वह चितवनि औरै कछू, जिहिं वस होत सुजान ॥
नुकीले नैनवाली पक से इक जग में आली है ॥
सुजानों के जो चित छीने, वो चितवन ही निराली है ॥

[८२]

चमचमात चंचल नयन, विच घूघट पट झीन ।
मानहु सुर सरिता विमल, जल उछरत जुग मीन ॥
तेरे भीने से घूँघट में चपल चख चमचमाते हैं ।
उछलते गंग-जल में जुफ्ते माही से दिखाते हैं ॥

[८३]

फूले फदकत लै फरी, पल कटाछ करवार ।
करत बचावत विय नयन, पायक वाय हजार ॥
पलक ढालें हैं, ग़मज़ों के सरासर सैफ चलते हैं ।
खिलाड़ी नैन हैं दोनों के भिड़ते औ निकलते हैं ॥

[८४]

जदपि चवायनि चीकनी, चलत चहूँ दिसि सैन ।
तऊ न छाड़त दुहुँन के, हँसी रसीले नैन ॥
इशारों से हैं करते चार सू गम्माज ग़म्माज़ी ।
नहीं दोनों की नज़रें छोड़तीं फिर भी निगहबाज़ी ॥

[८५]

जटित नीलमनि जगमगति सींक सुहाई नाँक।
मनो अली चंपक कली, बसि रस लेत निसाँक॥

मुरस्सम नीलमणि की सींक है बीनी की आरायश।
भँवर चम्पाकली पर बेख़तर करता है आसायश॥

[८६]

बेधक अनियारे नयन बेधत कर न निषेध।
बरबस बेधत मो हिया, तो नासा को बेध॥

सिनाने चश्म भी मेरे जिगर से गो गुज़रता है।
वेध सूराख़बीनी दिल में खुद सूराख़ करता है॥

[८७]

जदपि लौंग ललितौ तऊ तूँन पहिरि इक आँक।
सदा संक बढ़िए रहै चढ़ै चढ़ी सी नाँक॥

पहिन मत नाक में तू लौंग गो है ज़ीनत-आगीनी।
हमेशा शौक़ रहता है कि है क्यों पुरशिकन बीनी॥

[८८]

बेसरि-मोती-दुति झलक परी ओठ पर आय।
चूनो होइ न चतुर तिय, क्यों पट पोंछो जाय॥

पड़ी बेसर के मोती की झलक है यह तेरे लब पर।
नहीं है नाज़नीं चूना ये पोंछे से छुटे क्योंकर॥

[८९]

इहि द्वैही मोती सुगथ तू नथ गरबि निसाँक।
जिहि पहिरे जग-दृग ग्रसति लसति हँसति सी नाँक॥

दोही मोती पे ये नथ इस क़दर है तुमको ख़ुदबीनी।
किये है महव चश्मे-ख़ल्क़ को ये ज़ीनत-आगीनी॥

[६०]

वेसरि-मोती धन्य तू, को पूछै कुल जाति।
पीवो करि तिय-ओठ को, रस निधरक दिन राति॥
जहे किस्मत तेरी बेसर के मोती जात का क्या गम।
लबे-शीरीं को चूसा कर बिला खौफोख़तर हरदम॥

[६१]

वरन वास सुकुमारता, सब विधि रही समाय।
पँखुरी लगी गुलाब की, गाल न जानी जाय॥
नजाकत रंगोखुशबू का हुआ मिल एक ही खाता।
लगा गुल वर्ग रुख़सारों पै पहिचाना नहीं जाता॥

[६२]

लसत सेत सारी ढक्यौ, तरल तरौना कान।
पर्‍यौ मनो-सुरसरि-सलिल,रवि-प्रतिविम्ब विहान॥
तरोना सेत सारी में नहीं तेरा दुरख्शाँ है।
मगर गंगाके जल में भुनअक्स खुर्शेद तावाँ है॥

[६३]

सुदुति दुराये दुरति नहीं, प्रगट करति रति रूप।
छुटै पीक औरै उठी, लाली ओठ अनूप॥
छिपा मत रति को रौनक़ को, ये छिपने की नहीं आली।
छुटी जब पान की सुर्खी उठी लब और ही लाली॥

[६४]

कुच-गिरि चढ़ि अति थकित ह्वै,चली डीठि मुख चाड़।
फिरि न टरी परिये रही, परी चिबुक की गाड़॥
नज़र कुहसार पिस्ताँचढ़, थकी, रुख़ की तरफ आई।
गिरी गारे-ज़क़न में, जा, न वाँ से फिर निकल पाई॥

[१५]

ललित स्यामलीला ललन चढ़ी चिबुक छबि दून ।
मनु छाक्यौ मधुकर पर्यौ मनौ गुलाब प्रसून ॥

तर गोरे ज़नख़ पर श्याम-गुदना से है छवि दूनी।
पड़ा है हौज़गुल में एक भँवर मख़मूरा मजनूनी॥

[१६]

डारे ठोड़ी गाड़ गहि, नैन बटोही मारि ।
चिलक चौंधि में रूप ठग हाँसी फाँसी डारि ॥

फ़क़त दमकों चमक हाँसी की फाँसी रूप ठग मार।
बटोही नैन को गार-ज़नख़दाँ में है फेंक मारे॥

[१७]

तो लखि मो मन जु लही सो गति कही न जाति ।
ठोड़ी-गाड़ गड्यौ तऊ, उड्यौ रहै दिन राति ॥

कहूँ क्या खोलकर तुमको कि कैसा दिल बहकता है।
गड़ा गारेज़नख़ में गो पर यों भी उछलता है॥

[१८]

लोने मुख दीठि न लगै यौं कहि दीनौ ईठ ।
दूनी ह्वै लागन लगी, दिये दिठौना दीठ ॥

दिठौना दीठ से बचने लगाया मुख सलौने को।
लगी लगने दुगुन ही दीठ उसके मनलोभन को॥

[१९]

पिय तिय सौं हँसि कै कह्यौ लखैं दिठौना दीन ।
चंद्मुखी मुख चंद तैं भलौ चंद सम कीन ॥

दिठौना माथे का देख प्रीतम ने कहा हँसकर।
किये बेहतर है माह को चन्द्रिया क्यों माह के मानिन्द॥

[१००]

गड़े वढ़े छवि छाक छकि, छिगुनी छोर छुटै न।
रहे सुरँग रँग रँगि वही, नह दी मॅहदी नैन॥
नहीं छुटती हैं छिगुली से छकी हैं दंग हैं आँखें।
तेरे नाख़ुन की मेंहदी से अजब गुलरंग हैं आँखें॥

[१०१]

सूर उदितहूँ मुदित मन, मुख सुखमा की ओर।
चितै रहत चहुँ ओर तें, निश्चल चखनि चकोर॥
तुलूए मेह्र पर भी आरजू से खुशदिलो शशदर।
चकोरें टकटकी बाँधे हैं तकतीं वह रुखे-अनवर॥

[१०२]

पत्राही तिथि पाइए, वा घर के चहुँपास।
निति प्रति पून्यौ ही रहै, आनन ओप उजास॥
पता तक़वीम से लगता है तिथिका, गिर्द उस घर के।
रहा करती है पूनो रातदिन रूए मुनौवर से॥

[१०३]

नेकु हसौंहीं बानि तजि, लख्यौ परत मुख नीठि।
चौका चमकनि चौंध में, परत चौंध सी डीठि॥
जरा हँसने से वाज़ आ, रुख नहीं देता है दिखलाई।
दुरख्शे ताव दन्दाँ में नज़र पडती है चौंधाई॥

[१०४]

चलन न पावत निगम-मग, जग उपज्यौ अति त्रास।
कुच उतग गिरिवर गह्यौ, मैना मैन मवास॥
तरीक़े वेद पर चलना कठिन, जग डारहा है सब।
हिसारे कोह पिस्ताँ पर डटा है हुस्न का रहज़न॥

[१०५]

ज्यौं ज्यौं जोबन जेठ दिन, कुच मिति अति अधिकाति ।

त्यौं त्यौं छिन छिन कटि छपा छीन परति निति जाति ॥

ज्यों यह जोश जोबन दिन बदिन बढ़ती ही जाती है।
कमर शब जेठ यामिन सी छिनी छिन छिन घिसाती है॥

[१०६]

लगी अनलगी सी जु बिधि करी खरी कटि खीन ।

किये मनो वाही कसरि कुच नितम्ब अति पीन ॥

कमर जो इस क़दर पतली सी बिधि ने बनाई है।
कुचीनो सीना को उसके वज़न ही पर सुदाई है॥

[१०७]

जंघ जुगल लोयन निरे, करे मनो बिधि मैन ।

केलि-तरुन दुख दैन ए, केलि तरुन सुख दैन ॥

ये रानें कुदरतनुमा जो साक़-ए-ज़ूबी से ढाली हैं।
तरुन को केलि सुख केला तरुन दुख देने वाली हैं॥

[१०८]

रह्यो ढीठ ढारस गहे, ससि हरि गयो न सूर ।

मुर्यौ न मन मुरवानि चुभि भौ चूरनि चपि चूर ॥

नहीं दिल हारता हिम्मत गुमानामृत में ये है रुकता।
हुआ चुप चूर-चूरों में न मुरकों से मुरा ससका॥

[१०९]

पाय महावर देन कों, नाइन बैठी आय ।

फिरि फिरि जानि महावरी एँड़ी मीड़त जाय ॥

चरन जावक लगाने के लिये बैठी है आ नायन।
है एँड़ी मीड़ती फिर फिर समझ गोली सी उस पायन॥

[११०]

कौहर सी एड़ीन की, लाली निरखि सुभाय।
पाय महावर देय को, आप भई बे पाय॥
वो एँडी की जो देखी कुदरती उन्नावगूं लाली।
महावर देते नायन को हुई हैरत से पामाली॥

[१११]

किय हायल चित चाय लगि, बाजि पायल तुअ पाय।
पुनि सुनि सुनि मुख मधुर ध्वनि, क्यों न लाल ललचाय॥
तेरे नूपुर की धुन सुन सुन हुए हैं बेखुदो घायल।
मधुर मुखको वो सुन बतियां न क्यों फिर लाल हों मायल॥

[११२]

सोहत अँगुठा पाय के, अनवट जन्यौ जराय।
जीत्यौ तरिवन दुति सुढर, पर्यौ तरनि मनु पाय॥
अँगूठे में मुज़ैयन है मुरस्सा अनवटा अज़ ज़र।
है जीता ताब तरवन ने, पड़ा ढल शम्श चरणों पर॥

[११३]

पग पग मग अगमन परत, चरन अरुन दुति झूलि।
ठौर ठौर लखियत उठै, दुपहरिया से फूलि॥
ज़ियाए-मुरख़िये-पा हर कदम पर भूल पड़ती है।
बरंगे नीमरोज़ा जा बजा क्या फूल पड़तो है॥

[११४]

दुरत न कुच बिच कचुकी, चुपरी सादी सेत।
कवि अकनि के अर्थलौं, प्रगट दिखाई देत॥
सफेदो सादह महरम में वो पिस्तां यों हैं दिखलाते।
कि जैसे लफ्ज़-शोरा मे मआनी हैं नज़र आते॥

[११५]

मइ नु तन छवि बसन मीलि बरन सकै सु न बैन।
आँग ओप आँगी दुरी आँगी आँग दुरै न॥
हुई तन की बसन मिलि छपि जो एक मुजापर नहीं आती।
छिपी अँगिया की झलक अंगम न अँगिया से छिपी जाती॥

[११६]

भूपन परिरत कनक के कहि आवत इहि हेत।
दरपन के से मोरचे, दह दिखाई देत॥
अरी ज़ेवर तुझे अब पे परी, पहिनाए जाते हैं।
बदरोज़ंग आईना तेरे तन पर दिखाते हैं॥

[११७]

मानहु बिधि तन अच्छ छवि स्वच्छ राखिबे काज।
दग पग पोछन कौं करे भूपन पायन्दाज॥
तन शफ़्फ़ाफ़ सा उसका रहे हरदम मुसफ़्फ़ा तर।
गढ़े कुदरत ने पायन्दाज़ पाए-चश्म को ज़ेवर॥

[११८]

साम सुही सी जगमग अँग अँग जोबन जोति।
सुरग कुसुम्भी कँचुकी दुरँग दह दुति होति॥
खिलो है यासमन सी अंग अंगों आन जोबन की।
सुरँग अंगुक कुसुम्भी मिल दुरँग सी है खिला तन की॥

[११९]

लग्यौ छबीलौ मुख लसै नीले आंचर चीर।
मनौ कलानिधि झलमले कालिन्दी के नीर॥
तेरा गोरा सा मुखड़ा नील आंचल में चमकता है।
जमुन के नीरमें जहां में माहे कामिल चमकता है॥

[१२०]

लसै मुरासा तिय श्रवन, यौं मुकतनि दुति पाय।
मानो परस कपोल के, रहे सेदकन छाय॥
मुरासा के हैं मोती कान में क्या शान दिखलाते।
पसीने के हैं क़तरे लम्स आरिज़ से छटा छाते॥

[१२१]

सहज सेत पचतोरिया, पहिरें अति छवि होति।
जल-चादरि के दीप लौं, जग मगाति तन जोति॥
सहज पचतोरिया पहिने अनूपम छवि दिखाती है।
शमअ जलचादरा सी जोत तन की जगमगाती है॥

[१२२]

सालति है नटसाल सी, क्यौंहू निकसति नाहि।
मनमथ नेजा नोक सी, खुभी खुभी जिय माहि॥
खटकती मिस्ल पैकाँ है नहीं हरगिज़ निकलती है।
अतनकी नोक नेजा सी खुभी चुभ दिल मसलती है॥

[१२३]

अजौं तर्‌यौना ई रह्यो, श्रुति सेवत इक अंग।
नाक वास वेसरि लह्यौ, वसि मुकुतन के संग॥
तरौना ही रहा अब तक इकंगी करके श्रुति-सेवा।
बसी है नाक में वेसर मिला मुक्तों से मिल मेवा॥

[१२४]

सो०–मगल विन्दु सुरंग, मुख ससि केसरि आड़ गुरु।
इक नारी लहि संग, रसमय किय लोचन जगत॥
अतारद आड केसर, माह रुख, मिर्रीख़ बन रोरी।
जगत लोचन किये रसमय लिये संग नारि रस बोरी॥

[१०५]

गोरी छिगुनी अरुन नख, छला स्याम छबि देय ।
लहत मुकति रति छिनक ए, नैन त्रिबेनी सेय ॥

छिगुल गोरी अरुण नुख श्याम छल्ला देख रँगराते ।
त्रिबेनी सेते ही यह नैन छिन, हैं रति मुकत पाते ॥

[१०६]

तरिवन कनक कपोल दुति बिच बिच ही जु बिकान ।
लाल लाल चमकत चुनी चौका चीन्ह समान ॥

पसीना का है बूंद, मक़रे-ज़ियाए आरिज़-ताबाँ ।
चमकते लाल ऐसे हैं बनेंगे सुरतिरूप-दन्दाँ ॥

[१०७]

सारी भारी नील की ओट अचूक चुकै न ।
मो मन मृग कर पर गहैं अहैं अहेरी नैन ॥

निगाहनावाक़ अफ़र्गाँ का है भारी नील सारी है ।
गिज़ाले-दिल को पकड़ा हाथ ही से क्या शिकारी है ॥

[१०८]

तन भूषन अंजन दृगनि पगन महावर रंग ।
नहिं सोभा को साजिये कहिबे ही को अंग ॥

बदन ज़ेवर, दृगों अंजन मुझैयन तन पै है ज़ेवर ।
नहीं मुहताज हुस्न-ज़नका पहनने का है तन-पर ॥

[१०९]

पाय तरुनि कुच उच पद चिरमि ठग्यो सब गाँव ।
छुटे ठौर रहिहै वहै जु है मोल छबि नाँव ॥

मुक़ामे आलिया पिस्ताँ का पा घुँघची ने जग लूटा ।
घटेगा नाम छबि क़ीमत यही अस्थान जब छूटा ॥

[१३०]

उर मानिक की उरवसी, डटत घटत दृग दाग।
झलकत बाहिर भरि मनो, तिय हिय को अनुराग॥
किया करती है मानिक उरवसी दागे जिगर जायल।
छलकता है ये रसरंगों से तेरा इश्तियाके-दिल॥

[१३१]

जरी कोर गोरे वदन, बढ़ी खरी छवि देख।
लसति मनौ बिजुरी किये, सारद ससि परिवेष॥
सुनहली कोर गोरे मुख पै तेरे कैसी प्यारी है।
शरदके चाँद पर गोया ये बिजली की किनारी है॥

[१३२]

देखति सोनजुही फिरति, सोनजुही से अंग।
दुति लपटति पट सेतहू, करत बनौठी रंग॥
समनवर यास्मिनकी सैर कर, थम पैर धरती है।
जिलू तनकी कपासी रंग सी तनजेब करती है॥

[१३३]

तीज परब सौतिनि सजे भूषन बसन सरीर।
सबै मरगजे मुँह करी, वहै मरगजे चीर॥
परब को तीज के सौतों ने पहिने कपडे औ गहने।
किये पर उसने मैले मुह वो मैला चीर ही पहने॥

[१३४]

पचरँग रँग बेंदी बनी, उठी जागि मुख जोति।
पहिरैं चीर चिनौठिया, चटक चौगुनी होति॥
जबीं पच रंग बेंदी से तेरी क्या जगमगाती है।
चिनौटी चीर से चौगुन चटक तनपर दिखाती है॥

[१२५]

बेंदी भाल तँबोल मुख, सीस सिलसिले बार।
दृग आँजे राजे खरी, एही सहज सिंगार॥
सचिक्कन केश बेंदी भाल, ओठों पान की लाली।
नयन अंजन यही सिंगार भाता है तेरा आली॥

[१२६]

हौं रीझी लखि रीझिहौ छबिहिं छबीले लाल।
सोनजुही सी होति दुति मिलति मालती माल॥
हों रीझी आप भी रीझेंगे जो छवि देख नंदलाला।
चँबेली रूप सी होती है मिलके मालती माला॥

[१२७]

झीने पट में झिलमिली झलकति ओप अपार।
सुर तरु की मनु सिंधु में लसत सपल्लव डार॥
झिलमिल झिलमिली होती है झीने पट में नँदनन्दन।
झलकती नीरनिधि में है सपल्लव शाख हरिचन्दन॥

[१२८]

फिरि फिरि चित उतही रहत, टुटी लाज की लाव।
अंग अंग छबि झौर में भयो भौंर की नाव॥
लिहाज़ टूटी हया की पड़ गया चक्कर में ये चित्ती।
हुआ अँग अंग की छवि झौंरमौंरिया भौंर की किश्ती॥

[१२९]

केसरि कै सरि क्यौं सकै चंपक केतिक रूप।
गात रूप लखि जात दुरि जातरूप कौ रूप॥
ये चम्पा, भी करे क्या ज़ाफ़रां दावाए रैनाई।
छिपाई तन से तेरे मुँह पे ज़र्दी ज़र के है छाई॥

[१४०]

वाहि लखै लोयन लगै, कौन जुवति की जोति ।
जाके तन की छाँह ढिग, जौन्ह छाँह सी होति ॥
नजर चुभती है जिसपर कौन उस महके है हमपाया ।
कि जिसके सायए तन के है सन्मुख चाँदनी साया ॥

[१४१]

कहि लहि कौन सकै दुरी, सोन जुही में जाय ।
तन की सहज सुबासना, देती जौ न बताय ॥
बता देती अगर उसके न तन की वो सहज खुशबू ।
पता क्या था चमेली में छिपी है जाके वो गुलरू ॥

[१४२]

हरि छबिजल जबतें परे, तब तें छन बिछुरै न ।
भरत ढरत बूड़त तरत, रहत घरी लौं नैन ॥
पड़े थीरे जो छबिजल में, नहीं पलभर बिछुरते हैं ।
घडी हैं डूबते, तिरते हैं, ढरते और भरते हैं ॥

[१४३]

रहि न सक्यौ कसि करि रह्यौ, बस करि लीनौ मार ।
भेदि दुसार कियौ हियौ, तन दुति भेदै सार ॥
डिगा कसकर मुझे दमकर मगर फिर मारने मारा ।
जिल्दए तन पै तनखआर किया दिलकाट दह पारा ॥

[१४४]

पहिरतहीं गोरे गरे, या दौरी दुति लाल ।
मनो परसि पुलकित भई, मौल सिरी की माल ॥
गले गोरे पहिनते ही चमक दौडी ये नंदलाला ।
हुई हुइ मूयतन गोया खुशी से, मौलसरमाला ॥

[१७५]

कहा कुसुम कह कौमुदी कितिक आरसी जोति।
जाकी उजराई लखै आँख ऊजरी होति॥
कुसुम भी चाँदनी आईना यह रंगत कहाँ पाए।
नज़ाकत देख जिसकी आँख में भी नूर आजाए॥

[१७६]

कंचन तन धन बरन बर रह्यौ रंग मिलि रंग।
जानी जाति सुबास ही केसरि लाई अंग॥
कनकतन धन बरन पर रंग से मिल रंग छाई है।
पता लगता है खुशबू से कि केसर अंग लाई है॥

[१७७]

अंग अंग नग जगमगे दीप सिखा सी देह।
दिया बढ़ाए हू रहै बड़ौ उज्यारौ गेह॥
बढ़े नग जगमगा अँग अँग शोल-ए-शम्मा है तन।
करें गुल शम्म तब भी खूबही चमका है घर रौशन॥

[१७८]

है कपूरमनिमय रही मिलि तन दुति मुकुतालि।
छिन छिन खरी बिचच्छनौ लखति छ्वाय तिन आलि॥
हुई मुक्ताली नूर तन से मिल काफूर मणि गोया।
छुआ तिनका चतुर सखियों ने छिन २ उसपे सब गोया॥

[१७९]

खरी लसति गोरे गरे धसति पान की पीक।
मनो गुलूबँद लाल की लाल लाल दुति लीक॥
गले पार उतर ते पान की सुर्खी है यों झलकी।
गुलूबन्द लाल का गोया झलक झलका रहा लाली॥

[१५५]

रंच न लखियत पहिरिय कंचन से तन बाल।
कुम्हिलाने जानी परे उर चम्प की माल॥
नहीं ज़र्रीं नज़र पर तेरे मुखड़े ही नज़र आतो।
समझ पड़ती है चम्पक माल तब जब हुई है कुम्हिलाती

[१५६]

भूषन भार सँभारिहै, क्यों यह तन सुकुमार।
सूधे पाँव न परत धर सोभा ही के भार॥
सँभाले बार ज़ेवर क्या तेरा नाज़ुक बदन प्यारी।
कजी रफ़्तार भी करती है बारे-हुस्न है भारी॥

[१५७]

न जक धरत हरि हिय धर नाज़ुक कमला बाल।
भजत भार भय भीत है घन चन्दन बनमाल॥
नहीं कल एक पल दिल में बसे कमला के मैंदगम्बन।
गुज़रते हैं गिरों सीने पै घन चन्दन और बनमाल॥

[१५८]

अरुन बरन तरुनी चरन अँगुरी अति सुकुमार।
चुवत सुरँग रँग सों मनो चपि बिछुवनि के भार॥
हैं नाज़ुक उँगलियाँ रंगे-ख़ुर्द-सा क्या अनूठा है।
दबे बिछियों के दबकर भरनवाली रंग चूता है॥

[१५९]

छाले परिबे के डरनि सके न हाथ छुआय।
झिझकति हिय गुलाब के झँवों झँवैयत पाय॥
छिपाले आबला से छू नहीं हाथों से सकती है।
गुलों के भी झँवों से पाँव मलने में झिझकती है॥

[१६०]

मै बरजी के बार तू, इत कत लेति करौट।
पँखुरी लगे गुलाब की, परिहै गात खरौट॥
तुझे के बार रोका मैंने, तू करवट न ले इस सू।
खराशें जिस्म में पड़ जायँगी गुलबर्ग की, गुलरू!॥

[१६१]

कन दैबौ सौंप्यौ ससुर, वहू थुरहथी जानि।
रूप रहचटैं लगि लग्यौ, मागन सब जग आनि॥
उसके खुर्द-कफ़ को दी खुसर ने दाना-अफ़शानी।
गदाई हुस्न के लालच से सारे ख़ल्क़ ने ठानी॥

[१६२]

त्यौं त्यौं प्यासे ई रहत, ज्यौं ज्यौं पियत अघाय।
सगुन सलोने रूप की, जनि चख तृषा बुझाय॥
है बढ़ती प्यास, पीती जिस क़दर हैं पेट भर आँखें।
सलौना रूप लख रहती हैं हरदम तिशन लब आँखें॥

[१६३]

रूप सुधा आसव छक्यौ, आसव पियत बनै न।
प्याले ओठ प्रिया बदन, रह्यौ लगाये नैन॥
शराबे हुस्न से सरमस्त हैं, सहबा पियें क्योंकर।
लगी मुखड़े से आँखें और लब से लग रहा सागर॥

[१६४]

दुसह सौति सालै सुहिय, गनति न नाह बियाह।
धरै रूप गुन कौ गरब, फिरै अछेह उछाह॥
है सौकिन सालती सबको, है पेयम पी करें शादी।
जमालो हम कमाले—ख़ुद से फिरती है ब—आज़ादी॥

[१५५]

रच न लखियत पहिरिय कंचन से तन बाल।
कुम्हिलाने जानी परे उर चम्प की माल॥
नहीं ज़र्री यहन पर तेरे मुतलक़ ही नज़र आती।
समझ पड़ती है चम्पक माल तब जब कुछ है कुम्हिलाती॥

[१५६]

भूषन भार सँभारिहै, क्यों यह तन सुकुमार।
सूधे पाँय न परत धर सोभा ही के भार॥
सँभाले बार ज़ेवर क्या तेरा नाज़ुक बदन प्यारी।
नहीं रफ़्तार भी पड़ती है बारे-हुस्न है भारी॥

[१५७]

न जक धरत हरि हिय धरे नाजुक कमला बाल।
भजत भार भय भीत है घन चन्दन बनमाल॥
नहीं कल एक पल दिल में बसे कमला के नँदनन्दन।
धड़कते हैं गिरां सीने पै घन बनमाल और चन्दन॥

[१५८]

अरुन बरन तरुनी चरन अँगुरी अति सुकुमार।
चुवत सुरँग रँग सों मनो चपि बिछुवनि के भार॥
हैं नाज़ुक उँगलियाँ रंगे-कफ़े-पा क्या झलकता है।
दबे बिछियों के दबकर अरगवानी रंग चूता है॥

[१५९]

लाले परिबे के डरनि, सकै न हाथ छुवाय।
झिझकति हिये गुलाब के झँवाँ झँवैयत पाय॥
बिचारी आबला से छू नहीं हाथों से सकती है।
गुलों के भी झँवाँ से पाँव मलने में झिझकती है॥

[१७०]

रहो गुही बेनी लख्यौ, गुहिबे को त्यौनार।
लागे नीर चुचान जे, नीठि सुकाये बार॥
न चोटी गूंधिये, मैं गूंथना समझी करीने से।
सुखाये हाल हो के बाल तर हैं हरि पसीने से॥

[१७१]

स्वेद सलिल रोमाच कुस, गहि दुलही अरु नाथ।
हियो दियो सँग हाथ के, हथलेवा ही हाथ॥
पसीने का तो जल, रोमाञ्च कुश लेकर प्रिया प्रीतम।
दिया दिल हाथ हथलेवा, किया संकल्प मिल बाहम॥

[१७२]

मानहु मुह दिखरावनी, दुलहिन करि अनुराग।
सासु सदन मन ललन हू, सौतिन दियौ सुहाग॥
वरस्मे रूनुमाई, देख दुल्हिन का रुख़े रोशन।
पिया ने दिल दिया, सौकिन सुहागो, सास: खुशदामन॥

[१७३]

निरखि नवोढ़ा नारि तन, छुटत लरकई लेस।
भौ प्यारो प्रीतम तियनि, मनौ चलत परदेस॥
नई दुलही के तन से छूटते नक्श लड़कपन की।
हँसी समझीं कि गोया प्रान प्रीतम राह ली बन की॥

[१७४]

ढीठो दै बोलति हसति, प्रौढ़ बिलास अपोढ़।
त्यौं त्यौं चलत न पिय नयन, छकए छकी नवोढ़॥
सगीरा गो कबीरा सी अदा शोखी है दिखलाती।
लगाए टकटकी प्रीतम, उरूसे-नौ है मद माती॥

[१८०]

थाके जतन अनेक करि, नैकु न छाडति गैल ।
करी खरी दुवरी सुलगि, तेरी चाह चुरैल ॥
हज़ारों कोशिशें की पर नहीं जाती गली तज कर ।
लगी जव से चुड़ैल—उल्फत की तेरी, कर दिया लाग़र ॥

[१८१]

उन हरिकी हँसि कै इतैं, इन सौंपी मुसक्याय ।
नैन मिलत मन मिलि गये, दोऊ मिलवत गाय ॥
इधर से इनने हँस फेरी उधर सौंपी लली खिलकर ।
मिलाते गाय दोनों के मिले मन नैन दिल मिल कर ॥

[१८२]

फेर कछुक करि पौरितैं, फिरि चितई मुसुक्याय ।
आई जामन लेन तिय, नेहै चली जमाय ॥
फिरी देरी से मिस कर मुस्कराकर फिर उधर हेरी ।
जमाया नेह गो जामन के लेने को थी की फेरी ॥

[१८३]

या अनुरागी चित की, गति समुझै नहिं कोय ।
ज्यौं ज्यौं बूड़ै स्याम रग, त्यौं त्यौं उज्ज्वल होय ॥
समझना इश्क़ परवर दिल की कैफ़ीयत का है मुश्किल ।
ये ज्यों ज्यों श्याय रँग डूवे, हां त्यौं त्यौं औरही उज्वल ॥

[१८४]

होमति सुख करि कामना, तुमहिं मिलन की लाल ।
ज्वाल मुखी सी जरति लखि, लगनि अगनि की ज्वाल ॥
लगन की अग्नि को ज्वालामुखी सा देखकर वरती ।
तुम्हारे वस्ल कीकर चाह सुख को हु हवन करती ॥

[१८५]

मैं हो जान्यो लोयननि जुरत बाढ़ि है जोति।

को हो जानत दीठि को, दीठि किरकिरी होति॥

नयन जुड़ने से समझा थी बढ़ेगी नैन की ज्योती।

न जानूं दीठ को है दीठ ही क्यों किरकिरी होती॥

[१८६]

जौ न जुगुति पिय मिलन की धूरि मुकुति मुख दीन।

जो लहिये सँग सजन तौ धरक नरक हू की न॥

नहीं गर यार जन्नत में तो वो नारे जहन्नुम है।

अगर दोज़ख में है प्यारा तो फिर जिन्नत से क्या काम है॥

[१८७]

मोंहू सो तजि मोह दृग चले लागि वहि गैल।

छिनक छ्वाय छबि गुर डरी छले छबीले छैल॥

ये दीदे तर्क उल्फ़त कर रफ़ीक़ उनके चले चलकर।

हुआ जिस गुड़की डली से छबीले छैल के छलकर॥

[१८८]

को जाने ह्वै है कहा जग उपजी अति आगि।

मन लागै नैननि लगै चलै न मग लगि लागि॥

न जाने हुआ क्या जग में नई आग इक सुलगती है।

लगन की राह मत लग नैन में लग दिल में लगती है॥

[१८९]

तजत अठान न हठ पर्यो सठमति आठौं जाम।

भयो बाम वा बाम को रहै काम बेकाम॥

पड़ा हठ और नाआक़िबत से आठों याम रहता है।

हुआ बेकाम काम उस वामही से वाम रहता है॥

[१९०]

लई सौंह सी सुनन की, तजि मुरली धुनि आन।
किये रहति रति राति दिन, कानन लागे कान॥
सिवा मुरली की धुन सुनने के दिल में आन है ठानी।
लगाए रात दिन रहती है कानन कान दीवानी॥

[१९१]

भृकुटी मटकनि पीत पट, चटक लटकती चाल।
चल चख चितवनि चोरि चित, लियो बिहारी लाल॥
लटकती चाल अब्रू की मटक क्या पट सुहाया है।
बिहारी लाल की चितवन ने चित मेरा चुराया है॥

[१९२]

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीति।
परति गाँठ दुर्जन हिये, दई नई यह रीति॥
लड़ें आँखें कुटुम टूटे जुड़े दिलदार से उल्फत।
पड़े दिल में रकीबों के गिरह अल्लाह री कुदरत॥

[१९३]

चलत घैर घर घर तऊ, घरी न घर ठहराय।
समुझि वहै घर को चलै, भूलि वही घर जाय॥
हैं होने घैर घर घर पर नहीं पल भर ठहरती है।
समुझ जाती है घर, भूले उसी घर पैर धरती है॥

[१९४]

डर न टरै नींद न परै, हरै न काल-विपाक।
छिनक छाक उछकै न फिरि, खरो विषम छवि छाक॥
न डर से, नींद से, दाइम गुजरने से गुजरता है।
चढ़ा जो नश्शए उल्फत नहीं दम भर उतरता है॥

[२००]

ढरे ढार त्योंहीं ढरत, दूजे ढार ढरैं न।
क्यों हूँ आनन आन सौं, नैना लागत हैं न॥
ढलेही ढाल को तज कर किसी साँचे नहीं ढलते।
ये नैना आन आनन पर किसी सूरत नहीं चलते॥

[२०१]

चकी जकी सी ह्वै रही, बूझें बोलति नीठि।
कहूँ डीठि लागी लगी कै काहू की डीठि॥
जबाँ खोले न मुँह बोलै न कुछ तन की खबर उसको।
कहीं आँखें लगी हैं या लगी है खुद नजर उसको॥

[२०२]

पिय के ध्यान गही गही, रही वही ह्वै नारि।
आप आप ही आरसी, लखि रीझति रिझवारि॥
तसौवर में पिया के खुद पियाही बन गई प्यारी।
रुख़ अपना आइना में देख खुद पर इश्क है तारी॥

[२०३]

ह्याते ह्वा ह्वा तें इहा, नेकौ धरति न धीर।
निसदिन डाढ़ी सी फिरति बाढ़ी गाढ़ी पीर॥
यहाँ से वाँ वहाँ से याँ अजब कुछ बेकरारी है।
फिरा करती है डाढी सी, मगर कुछ दर्द भारी है॥

[२०४]

समरु समरु संकोच बस, बिबस न ठिकु ठहराय।
फिरि फिरि उझकति फिर दुरति, दुरि दुरि उझकति जाय॥
हया औ शौक़ हैं हम वज्न बेखुद सी है मदमाती।
उझक फिर फिर है छिप जाती व छिप छिप फिर नजर आती॥

[२१०]

अपनी गरजनि बोलियत, कहा निहोरो तोहिं।
तूँ प्यारो मो जीव को, मो जिय प्यारो मोहिं॥
जो तुमसे बोलते हैं, इसमें क्या एहसाँ हमारा है।
मेरे दिल को हो तुम प्यारे, मेरा दिल मुझको प्यारा है॥

[२११]

सुख सौं बीती सब-निसा, मनु सोये मिलि साथ।
मूका मेलि गहे जु छन, हाथ न छोड़े हाथ॥
रहे सुख नींद में गोया पडे शब भर' मजा लूटा।
पकड दीवार बिल से हाथ, हाथों से नहीं छूटा॥

[२१२]

देखौ जागत वैसिए, साँकरि लगी कपाट।
कित ह्वै आवत जात भजि, को जानै किहिं बाट॥
किवाडौ जागने पर वैसेही कुंडी लगी पाई।
न जाने किस गली आते, निकल जाते हैं यदुराई॥

[२१३]

गुड़ी उड़ी लखि लाल की, अँगना अँगना माह।
बौरी लौं दौरी फिरै, छुवत छबीली छाँह॥
पतंग उडने हुए लख अंगना आँगन में इतरानी।
नवेली छाँह छूने को फिरै दौडीसी दीवानी॥

[२१४]

उनकौ हित उनहीं बनै, कोऊ करौ अनेक।
फिरत काक गोलक भयौ, दुहू देह ज्यौ एक॥
नहीं औरों से बनती वो तो हैं बा-हमदिगर तालिब।
मिसाले हलक़ए-चश्मे-कुलाग़ यकजाँ हैं दो क़ालिब॥

[२२०]

देह लग्यौ ढिग गेहपति, तऊ नेह निरवाहि ।
ढीली अँखियनि ही इतै, गई कनखियनि चाहि ॥
किया इजहार उल्फ़त, पति से थी गो कर्व-जिस्मानी ।
रसीली आँख ढीली कर, कनखियों देख मुसक्यानी ॥

[२२१]

है हिय रहति हई छई, नई जुगति जग जोय ।
आँखिनि आँखि लगै खरी, देह दूबरी होय ॥
नई लखकर छई जगमें जुगत है दिल येमुतहैयर ।
लगी आँखों स आँखें, जिस्म दिन दिन होरहा लागर ॥

[२२२]

प्रेम अडोल डुलै नहीं, मुख बोले अनखाय ।
चित उनकी मूरति वसी, चितवनि माहि लखाय ॥
जमी उलफत में, हैं बातें ये गुस्सा की यताती है ।
यसी चित उनकी मूरत है सो चितवनमें दिखाती हैं ॥

[२२३]

चित तरसन मिलत न वनत, वसि परोस के बास ।
छाती फाटी जाति सुनि, टाटी ओट उसास ॥
तरसती है परोसिन शौक से घर मिल नहीं पाती ।
वो टट्टी ओट सुन आहें ये छाती है फटी जाती ॥

[२२४]

जालरध्र मग अगनि को, कछु उजास सो पाय ।
पीठि दिये जग त्यौं रहै, डीठि झरोखनि लाय ॥
उजाला जालियों से आगमन का देख अक्स-अफ़गन ।
जगत को पीठ दे वैठी लगाये दीठ है रोजन ॥

[२१५]

करत जात जेती कटनि, बढ़ि रस सरिता सोत ।
आलबाल उर प्रेम तरु तितो तितो दृढ़ होत ॥
पमे उपक़ल है साहिल जिसक़दर बढ़ के दरिया आता ।
मुहब्बत का शजर उतना ही सीने में है जड़ पाता ॥

[२१६]

सब धरई धम फिरि थके कटै न कुमति कुठार ।
आल बाल उर झालरी खरी, प्रेम तरु डार ॥
तबर तदबीर से थककर थके अग़्यार पर नौबत ।
निगहबान जिगर में लहलहा है शाख़-उल्फ़त ॥

[२१७]

छुटन न पैयत छिनक बसि, नेह नगर यह चाल ।
मार्‍यौ फिरि फिरि मारियै खूनी फिरत खुस्याल ॥
रवाजे शहर-उल्फ़त है, बसे जो फिर न छुटता है ।
फिरै ख़ुशहाल ख़ूनी गमज़दा कुश्ता प कुश्ता है ॥

[२१८]

निरदै नेह नयो निरखि भयो जगत भय-भीत ।
यह अबलों न कहू सुनी मरि मारियै जु मीत ॥
नई बेरहम-उल्फ़त से जगत में ख़ौफ़ है छाया ।
मरे ही मित्र का मारें ये सुनने में नहीं आया ॥

[२१९]

क्यों बसियै क्यों निबहियै नीति नेह पुर नाहिं ।
लगा लगी लोयन करैं नाहक मन बँधि जाहिं ॥
रहें क्योंकर, नहीं इन्साफ़ मुल्के शहर-उल्फ़त में ।
लड़ें आँखें व रक्खा जाय नाहक़ दिल हिरासत में ॥

[२२०]

देह लग्यौ ढिग गेहपति, तऊ नेह निरवाहि ।
ढीली अँखियनि ही इतै, गई कनखियनि चाहि ॥
किया इजहार उलफत, पति से थी गो कुर्ब-जिस्मानी ।
रसीली आँख ढीली कर, कनखियों देख मुसक्यानी ॥

[२२१]

है हिय रहति हई छई, नई जुगति जग जोय ।
आँखिनि आँखि लगैं खरी, देह दूबरी होय ॥
नई लखकर छई जगमें जुगत है दिल येमुतहैयर ।
लगी आँखों से आँखें, जिस्म दिन दिन होरहा लागर ॥

[२२२]

प्रेम अडोल डुलै नहीं, मुख बोले अनखाय ।
चित उनकी मूरति बसी, चितवनि माहि लखाय ॥
जमी उलफत में, हैं बातें ये गुस्सा की बताती है ।
बसी चित उनकी मूरत है सो चितवनमें दिखाती है ॥

[२२३]

चित तरसत मिलत न बनत, बसि परोस के बास ।
छाती फाटी जाति सुनि, टाटी ओट उसास ॥
तरसती है परोसिन शौक से घर मिल नहीं पाती ।
वो टट्टी ओट सुन आहें ये छाती है फटी जाती ॥

[२२४]

जालरध्र मग अगनि को, कछु उजास सो पाय ।
पीठि दिये जग त्यौं रहै, डीठि झरोखनि लाय ॥
उजाला जालियों से आगमन का देख अक्स-अफगन ।
जगत को पीठ दे बैठी लगाये डीठ है रोजन ॥

[२२५]

जदपि सुन्दर सुघट पुनि, सगुनो दीपक देह ।
तऊ प्रकास करै तितौ भरिये जितो सनेह ॥
सगुण सुन्दर मिसाले शमअ है गो जिस्म इन्सानी ।
भरोगे नेह पर जितना वो होगा और नूरानी ॥

[२२६]

दुचितैं चित चलति न हलति हँसति न झुकति बिचारि ।
लिखत चित्र पिय लखि चितै रही चित्र सी नारि ॥
पड़ी असमंजस हँस हिल जुल नहीं झुक देखती प्यारी ।
पिया को चित्र खिंचते जब हुई खुद चित्र सी नारी ॥

[२२७]

नैन लगे तिहि लगनि सों, छुटै न छूटे प्रान ।
काम न आवत एक हू, तेरे सौक सयान ॥
न छूटो प्राण छुटने तक लगन जब से कि लग पाई ।
नहीं कुछ काम आती है करें कोई लाख चतुराई ॥

[२२८]

साजे मोहन मोह को मोही करत कुचैन ।
कहा करौं उलटे परे टोने लोने नैन ॥
सजे थे मोहने को मैं ने मनमोहन का दे काजल ।
उलट जादू पड़ा करने लगे नैना मुझे बे-कल ॥

[२२९]

अलि इनि लोयन सरनि को, खरो विषम संचार ।
लगे लगाये एक से दुहु आनि करत सुमार ॥
गज़ब का कुछ निशाना है इन तीरे चश्म का ऐ जाँ ।
लगाने और लगने में है दोनों का शुमार यकसाँ ॥
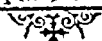
[२३०]

चख रुचि चूरन डारि कै, ठग लगाय निज साथ ।
रह्यो राखि हठि लै गयौ, हथाहथी मन हाथ ॥
है खाके लज़्ज़ते दीदार डाली ठगने क्या दिलपर ।
जबरदस्ती वो हाथों हाथ दिल को ले गया दिलबर ॥

[२३१]

जौ लौं लखौ न कुल कथा, तौ लौं ठिक ठहराय ।
देखे आवत देखिवो, क्योंहू रह्यौ न जाय ॥
नहीं देखा है जब तक, है तभी तक कुल कथा सारी ।
रहा जाता नहीं देखे बिना फिर देख बनवारी ॥

[२३२]

बन तन को निकसत लसत, हँसत हँसत इत आय ।
दृग खंजन गहि लै गयो, चितवनि चैंपु लगाय ॥
इधर निकले वो हरि हँसते हुए जाते तरफ बन की ।
उड़ाया सायए-दीदा लगाकर चेप चितवन की ॥

[२३३]

चित्तवित बचत न हरत हठि लालन दृग बर जोर ।
सावधान के बटपरा ए जागत के चोर ॥
बचै क्या दौलते-दिल छीनते हैं दीदए पुरफन ।
ये बेदारों के हैं सारक व हुश्यारों के हैं रहजन ॥

[२३४]

सुरति न तालरु तान की, उठ्यो न सुर ठहराय ।
एरी राग बिगारिगौ, बैरी बोल सुनाय ॥
न लै सुरताल की कुछ भी अलापा सुर न जमता है ।
हुई सुन बोल बैरागिन कलेजा अब न थमता है ॥

[२५०]

डगकु डगति सी चलि ठठकि, चितई चली निहारि ।
लिये जाति चित चोरटी, वहै गोरटी नारि ॥
चली मस्ती से ठिठकी, फिर मुड़ी, फिर चलके रुख़ फेरा ।
वो गोरी लै चली चोरी से, देखो हाय दिल मेरा ! ॥

[२५१]

चिलक चिकनई चटक सौं, लफति सटक लौं आय ।
नारि सलोनी साँवरी, नागिनि लौं डसि जाय ॥
चिलक चिकनी सटक सी है चटक, लफ लफ के बल खाती ।
सलौनी साँवली नागिन सी है डस कर पलट जाती ॥

[२५२]

रह्यौ मोह मिलनो रह्यौ यौं कहि गह्यौ मरोर ।
उत दै सखिहिं उराहनो, इन चितई मो ओर ॥
मुहब्बत है न मिलना, वाह क्या उलफत है ये तेरी ।
सखी से ये शिकायत कर मरुड फिर इस तरफ हेरी ॥

[२५३]

नाहिं नचाय चितवति दगनि, नहिं बोलति मुसुक्याय ।
ज्यौं ज्यौं रूखौ रुख करत, त्यौं त्यौं चित चिकनाय ॥
नचा दृग देखती है, कुछ न कहती मुसकराहट से ।
है होती दिल को चिकनाई रुखाई बेरुखी हट से ॥

[२५४]

सहित सनेह सँकोच सुख, स्वद कप मुसुक्यानि ।
प्रान पानि करि आपने, पान धरे मो पानि ॥
हया, तन तर, तबस्सुम, थरथरी, नवनेह भीने रस ।
धरे निज पान मेरे पान पर, कर प्रान अपने बस ॥

[२६०]

हँसि उतारि हिय तै दई, तुम जु वाहि दिन लाल।
राखति प्रान कपूर ज्यों, वही चुहटनी माल॥
उतार अपने गले से तुमने हंस कर दी जो नँदलाला।
रखाये जां को है काफूर सां वह गुंज की माला॥

[२६१]

रही लट्टू है लाल हौं, लखि वह वाल अनूप।
कितौ मिठास दियौ दई, इतौ सलौने रूप॥
हौं लट्टू देखकर वह वाल, क्या भगवत की माया है!।
सलौना रूप ये कितना सुघड शीरीं वनाया है॥

[२६२]

सोहति धोती सेत में, कनक वरन तन वाल।
सारद वारद वीजुरी, भा रद कीजत लाल॥
तिलाई तन पै है तनजेव धोती, ज़ेव तन पाती।
शरद वादल की विजुली की दमक को भी है चमकाती॥

[२६३]

वारौं वलि तो दृगनि पै, अलि खजन मृग मीन।
आधी दृष्टि चितौत जिनि किये लाल आधीन॥
किए आधीन अध चितवन से जिनने श्याम मनरंजन।
तेरी आखों पै सिदक़े हैं, हिरन, माही, भँवर, खजन॥

[२६४]

देखत चूर कपूर ज्यों, उपै जाय, जनि लाल।
छिन छिन जाति परी खरी, छीन छबीली वाल॥
कहीं यह देखते काफ़ूर चूरन सी न उड़ जाए।
छबीली वाल छिन छिन छीन सी होती नज़र आए॥

[२६५]

जिनके सपीले असत पद, जौ लगि नहिं बतराय।
छल मयूष पियूष की तौ लगि भूख न जाय॥
जो होतीं सब नहीं जब तक मजे से बात करती है।
कमर, मै, मैयकर, माचेवफ़ा के प्यास मरती है॥

[२६६]

नागरि बिबिध बिलास तजि, बसी गँवेलिनि माहिं।
मूढ़नौ मैं गनिबी कि तूं हूठ्यौ दै इठलाहिं॥
बसी गुंचादहन रयानत शहरी छोड़ गाँवों में।
न फेरें नोक की हमरंग बन इनका गँवारों में॥

[२६७]

पिय मन रुचि ह्वैबो कठिन तन रुचि होय सिंगार।
लाख करौ आँखि न बढ़ें बढ़ें बढ़ाये बार॥
तन-आराई तो है शृंगार पिय मन और ही शै है।
बढ़ाए बाल बढ़ते हैं नहीं बढ़ चश्म पुर मै है॥

[२६८]

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं बिकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यौ, आगे कौन हवाल॥
शिगुफ्ता भी हुई पूरी न है रसरंग रैनाई।
बुरा हाफ़िज़ अभी से है कली पर भौंर शैदाई॥

[२६९]

दुसहाई सब टोल में रही जु सौति कहाय।
सुतौ ऐंचि प्यौ आपु त्यौं करी अदोखिल आय॥
जो सौकिन सारा मशहूर कुल टोले में जो आयी।
किया बेज़ार साकित तूने उसका ऐंच बलमाखी॥

[२७०]

देखत कछु कौतुक इतै, देखौ नेकु निहार।
कब की इकटक ठटि रही, टटिया अँगुरिनि फारि ॥
तमाशा देखिये तो, टकटकी बाँधे पए-दर्शन।
ये कब की तक रही है उँगलियों से फाड़कर चिलमन ॥

[२७१]

लखि लोयन लोयननि के, को इन होय न आज।
कौन गरीब निवाजिबो, कित तूठो रतिराज ॥
तेरी इन शोख आँखों में अजब छवि आज छाई है।
ये देखें किस गली जाते हैं, किसकी आज आई है ॥

[२७२]

मन न धरति मेरौ कह्यौ, तू आपने सयान।
अहे परनि पर प्रेम की, परहथ पारि न प्रान ॥
लडा मत अक्ल अपनी, मैं कहूं जो दिलमें वह रखले।
परे रह इश्क से, तू मत पराए हाथ में दिल दे ॥

[२७३]

बहकि न इहिं बहिनापुली, जब तब वीर विनास।
बचै न बड़ी सबील हू, चील घौंसुआ मास ॥
न इस हमशीरगी पर भूल, है इसमें जिया अक्सर।
धरोहर मांस की बचती है कैसे चील के घर ॥

[२७४]

मैं तोसौं कइ बा कह्यौं, तू जिनि इनैं पत्याय।
लगा लगी करि लोयननि, उर में लाई लाय ॥
बहुत कुछ मैंने समझाया भरोसा तू न कर इन पर।
लगाई आग आँखों ने मेरे दिल में ये लड लड़ कर ॥

[२८०]

कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल।
कहुँ मुरली कहुँ पीत पट, कहूँ लकुट बनमाल॥
लड़ैते लाडली दृग ने ये क्या मोहन पै पर डाला।
कहीं मुरली, मुकट, लकुटो, कहीं पटपीत, बनमाला॥

[२८१]

तू मोहन मन गड़ि रही, गाढ़ी गढ़नि गुवालि।
उठै सदा नटसाल लौं, सौतिनि के उर सालि॥
चुभी मनमें है मन मोहन के तू गहरी चुभन गूजर।
कसकती है सिना सी सौतए-सीनिन में बन नश्तर॥

[२८२]

बड़े कहावत आपु कौ, गरुवे गोपीनाथ।
तौ बदिहौं जौ राखिहौ, हाथनि लखि मन हाथ॥
ज़बरदस्त आप को समझूँगी बेशक मैं तभी गिरधर।
रहेगा हाथ में दिल आप का यह हाथ देखे गर॥

[२८३]

रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनिया बारि।
फेरति करि उलटी रई, नई बिलोवनिहारि॥
दहेंड़ी पास ही रक्खी रही मथनी भरी पानी।
उलट फेरै है कढनी क्या बिलोवन-हार लासानी॥

[२८४]

कोरि जतन करिये तऊ, नागरि नेह दुरै न।
कहे देत चित चीकनो, नई रुखाई नैन॥
नहीं इश्के-सनम छिपता है कीजे लाख चतुराई।
रुखाई आँख की बतला रही है दिलकी चिकनाई॥

[२९०]

दियौ अरघ नीचे चलौ, संकट भानैं जाय।
सुचिती ह्वै औरौ सबै, ससिहिं बिलोकैं आय॥
अरघ तुम दे चुकीं, नीचे चलौ, सब का मिटै खटका।
करें बेफिक्र शशि दर्शन, न दिल नाहक रहे अटका॥

[२९१]

वे ठाढ़े उमदाहु उत, जल न बुझै बड़वागि।
जाहीं सों लाग्यो हियौ, ताहीं के हिय लागि॥
न बडवानल बुझै जल से खडे लख क्यों है उमदाती।
लगा जिससे जिगर तेरा उसी की जाके लग छाती॥

[२९२]

अहे कहै न कहा कह्यौ, तोसों नंदकिसोर।
बड़बोली कत होत बलि, बड़े दृगनि के जोर॥
जो ना कहती है, तुमसे क्या कहा उन श्याम सुन्दर ने।
तुझे मुहफट बनाया इस कदर उफ चश्म-अकबर ने॥

[२९३]

मैं यह तोही मैं लखी, भगत अपूरब बाल।
लहि प्रसाद माला जु भौ, तन कदम्ब की माल॥
अपूरब भक्ति यह तुझ ही में देखी मैंने ऐ बाला।
कदम सा खिल गया तन लेते ही परसाद की माला॥

[२९४]

ढोरी लाई सुनन की, कहि गोरी मुसुक्यात।
थोरी थोरी सकुच तैं, भोरी भोरी बात॥
लगा सुनने का चस्का, बात मुसका कर करै गोरी।
वो भोरी थोरी शरमाकर कहै कुछ थोरी ही थोरी॥

[३००]

नाक चढ़ै सीबी करै, जितै छबीलो छैल।
फिरि फिरि भूलि वहै गहै, प्यौ ककरीली गैल॥
वही भूले से चलती है, पिया की गैल ककरीली।
चढ़ाई नाक सी सी कर हठीलो छैल गरबीली॥

[३०१]

हित करि तुम पठयो लगै, वा बिजना की बाय।
टरी तपति तन की तऊ, चली पसीने न्हाय॥
वो भेजा आपने जो बादज़न राहत जिहे मन है।
बुझी उसकी हवा से गो तपिश, पर तरबतर तन है॥

[३०२]

नाम सुनत ही है गयो, तन औरै मन और।
दबै नही चित चढ़ि रह्यो, अबै चढ़ाये त्यौर॥
दिगर गूं जिस्मो जाँ का नाम सुनते हो गया आलम।
दबै चाँ बरजबाँ होने से क्या जो चित्त चढ़ा हरदम॥

[३०३]

नेकौ उहि न जुदी करी, हरखि जु दी तुम माल।
उर ते बास छुट्यो नहीं, बास छुटे हू लाल॥
जुदा दम भर न की वह आपने खुश हो जो दी माला।
न छूटा बास सीने से छुटी गो बास ही लाला॥

[३०४]

सरसत पोंछत लखि रहत, लगि कपोल के ध्यान।
कर लै प्यौ पाटल विमल प्यारी पठये पान॥
सरस लख पोंछ रुखसारों का उसके ध्यान करता है।
प्रिया मुरसिल मुसज्ज़ल पान कै निज पान धरता है॥

[३१०]

फूली फाली फूल सी, फिरति जु विमल विकास ।
भोर तरैया होहिंगी, चलति तोहिं पिय पास ॥
यरंगे गुल शिगुफ्ता फिर रही है वह जो महपारा ।
तेरे चलते पिया के पास होगी सुबह का तारा ॥

[३११]

उग्यो सरद राका ससी, करति न क्यों चित चेत ।
मनो मदन छितिपाल को, छाहगीर छवि देत ॥
शरद का चाँद निकला तू है अब किस रंग में डूबी ।
ये गोया अर्श पर है जेबदिह चतरे-शहे-खूबी ॥

[३१२]

निसि अँधियारी नील पट, पहिरि चली पिय गेह ।
कहो दुराई क्यों दुरै, दीपसिखा सी देह ॥
अंधेरी रैन पहिने नीलपट जाते पिया के घर ।
तने चूं शोलए-शम्मअ् छिपाने से छिपै क्योंकर ॥

[३१३]

छपै छपाकर छिति छवै, तम ससिहरि न सँभारि ।
हँसति हँसति चालि ससिमुखी, मुखतें अचल टारि ॥
न डर मुतलक़ है तारीकी जमीं पर मह हुआ पिनहाँ ।
तू घूँघट खोलकर ऐ माहरू ! अब चल, खुशोख़न्दाँ ॥

[३१४]

अरी खरी सटपट परी, विधु आधे मग हेरि ।
सग लगे मधुपनि लई, भागन गली अँधेरि ॥
तुलूए मह हुआ जब नीम रह में सख्त घबराई ।
सियह जंबूर क़िस्मत से घिर आये तीरगी छाई ॥

[३२०]

मिसहीं मिस आतप दुसह, दई औरि बहकाय ।
चले ललन मनभावती, तन की छाह छपाय ॥
"कड़ी है धूप" औरों को, इसी हीले से बहकाया ।
ललन मन भावती को लै चले तनकी छिपा छाया ॥

[३२१]

ल्याई लाल विलोकिए, जिय की जीवन मूल ।
रही भौन के कोन में, सोनजुही सी फूल ॥
लै आई, देखिये वह रूह परवर नन्द छौने, में ।
रही है गुलबदन क्या यासिमन सी फूल कोने मे ॥

[३२२]

नहिं हरि लौं हियरा धरौं, नहिं हर लौं अरधग ।
एकतही करि राखिये, अग अग प्रति अग ॥
न हरि की तर्ह सीने में, न हर के तर्ह निस्फे तन ।
मुताबिक़ अग अगों से हो कुल प्यारी तेरा जोबन ॥

[३२३]

रही पैज कीनी जु मैं, दीनी तुमहिं मिलाय ।
राखौ चपकमाल ज्यौं, लाल गरैं लपटाय ॥
किया था पहद जो मैंने मिला दी बाल वह लाकर ।
बनाकर माल चम्पक, लाल, रखिए कण्ठ लपटा कर ॥

[३२४]

रही फेरि मुँह हेरि इत, हित समुहें चित नारि ।
डीठि परत उठि पीठ की, पुलकैं कहत पुकारि ॥
उधर तक मुँह इधर फेरा, झुका है पर यहीं को दिल ।
खड़े हो पोठ पर रोंगट सदा यह दै रहे खिल खिल ॥

[२१५]

जुवति जोन्ह में मिलि गई नैकु न होति लखाय ।
सोंधे के डोरे लगी, अली चली सँग जाय ॥
छिपी महताब में महपारा नहीं मुतलक़ नज़र आती।
सखी खुशबू के डोरे से चली हैरत मिल चली आती ॥

[२१६]

ज्यों ज्यों आवति निकट निसि, त्यों त्यों खरी उताल।
झमकि झमकि टहलैं करैं लगी रहचटैं बाल ॥
सिया नज़दीक ज्यों ज्यों आती त्यों त्यों है बेताबी।
झमक झुककर टहल करती मची है शौक़ की भाबी ॥

[२१७]

झुकि झुकि झपकौहैं पलनि फिरि फिरि जुरि जमुहाय ।
बीदि पियागम नींद मिस, दीं सब अली उठाय ॥
जम्हाई ले रही फिर फिर झपक पलकें झुका आँखें।
पिया का आगमन लख नींद के मिस दी उठा आली ॥

[२१८]

अगौंरिन लखि मरु मीति पै, उलमि चितै चख लोल ।
रुचि सों दुहुनि दुहूनि के चूमे चारु कपोल ॥
छटा दीखी सहाए भीत का ले हँस अरम चूमे।
गुलाबी गाल दम्पति ने परस्पर प्रेम से चूमे ॥

[२१९]

बातें की बातें चली सुनत सखिन के टोल।
गोए हू लोयन हँसति, बिहसत जात कपोल ॥
चर्चे की अपनी चरचा चलाने गोल में गोरी।
गुलाबी चिह्न रहे मारिफ़ जिसकी अँखियाँ बिहँस मारीं ॥

[३२०]

मिसहीं मिस आतप दुसह, दई औरि बहकाय।
चले ललन मनभावती, तन की छाह छपाय॥
"कड़ी है धूप" औरों को, इसी हीले से बहकाया।
ललन मन भावती को ले चले तनकी छिपा छाया॥

[३२१]

ल्याई लाल विलोकिए, जिय की जीवन मूल।
रही भौन के कोन में, सोनजुही सी फूल॥
ले आई, देखिये वह रूह परवर नन्द छौने, में।
रही है गुलबदन क्या यासिमन सी फूल कोने में॥

[३२२]

नहिं हरि लौं हियरा धरौ, नहिं हर लौं अरधंग।
एकतही करि राखिये, अंग अंग प्रति अंग॥
न हरि की तरह सीने में, न हर के तरह निस्फे तन।
मुताबिक अंग अंगों से हो कुल प्यारी तेरा जोबन॥

[३२३]

रही पैज कीनी जु मैं, दीनी तुमहिं मिलाय।
राखौ चंपकमाल ज्यौं, लाल गरें लपटाय॥
किया था अहद जो मैंने मिला दी बाल वह लाकर।
बनाकर माल चम्पक, लाल, रखिए कण्ठ लपटा कर॥

[३२४]

रही फेरि मुँह हेरि इत, हित समुहें चित नारि।
डीठि परत उठि पीठ की, पुलकैं कहत पुकारि॥
उधर तक मुँह इधर फेरा झुका है पर इधर को दिल।
खड़े हो पीठ पर रोंगट सदा यह दे रहे खिल खिल॥

[१२५]

बाऊ चाह मेरे कछु चाहत कह्यो कहैं न।
नहिं जाचक सुनि सूम लौं, बाहिर निकसत बैन॥
है दिल में कुछ कहूँ लेकिन न बस ओंठों पै चलता है।
गदा की सुन सदा जैसे नहीं मुमसिक निकलता है॥

[१२६]

लहि सूने घर कर गह्यो दिखादिखी की ईठि।
गड़ी सुचित नाहीं करनि, करि ललचौंही डीठि॥
जो पकड़ा हाथ खिल्वत में थी आँखों की शनासाई।
हुआ दिल में नहीं करता वो कर कर डीठ ललचाई॥

[१२७]

गली अँधेरी साँकरी भो भटभेरा आनि।
परे पिछाने परस्पर, दोऊ परस पिछानि॥
अँधेरा तंग सा रस्ता हुआ आपुस में मिलजाना।
बिना बोले परस्पर ही परस हाथों से पहिचाना॥

[१२८]

हरषि न बोली लखि ललन, निरखि अमिल सँग साथ।
आँखिन ही में हँसि धर्यो, सीस हिये धरि हाथ॥
मिलन था मदर्दों के साथ कुछ दिल की न कह पाई।
धरा सीने पै रख कर हाथ, आँखों ही में मुसकाई॥

[१२९]

भेंटत बनत न भावतो चित तरसत अति प्यार।
धरति लगाय लगाय उर भूषन बसन हथ्यार॥
अगरचे दिल तरसता है मिलें प्यारे से पर क्योंकर।
लगा छाती से धरती है सिलह पोशाक मद ज़ेवर॥

[३३०]

कोरि जतन कोऊ करौ, तन की तपति न जाय ।
जौलौं भीजे चीर लौं, रहै न प्यौ लपटाय ॥
हजारों हिम्मतें कीजे नहीं तन की तपन जाती ।
लगे जब तक न गीले चीर साँ प्रीतम लपट छाती ॥

[३३१]

तनक झूठ निसवादली, कौन वात पर जाय ।
तिय मुख रति आरंभ की, नहिं झूठिये मिठाय ॥
ज़रासी झूट की वे-लज्जती किस तह से जाए ।
शुरूए वस्ल को झूटी नहीं में भी मज़ा आये ॥

[३३२]

भौंहनि त्रासति मुख नटति, आँखनि सो लपटाति ।
ऐंचि छुड़ावति कर इँची, आगे आवति जाति ॥
डरानी भौंह से, मुख पर नहीं, आखों से लपटाती ।
छुटाती खेंचकर है कर, खिंची सी पास है आती ॥

[३३३]

दीप उँजेरे हूं पतिहिं, हरत बसन रति काज ।
रही लपटि छवि की छटनि, नेको छुटी न लाज ॥
शमा रोशन बरहना तन लगे करने पिया प्यारी ।
लपट छवि की छटा से शरमगीं सिमटी बनी सारी ॥

[३३४]

लखि दौरत पिय कर कटक, वास छुड़ावन काज ।
बरुनी बन दृग गढ़नि में, रही गुढ़ो करि लाज ॥
पिया का लश्करे यद वास हरते लख पसर करते ।
हया छिप हिस चश्मों मिज्जः वनमें रह गई डरते ॥

[३४०]

पर्यो जोर विपरीत रति, रुपी सुरत रनधीर।
करत कोलाहल किंकिनी, गह्यौ मौन मजीर॥
कलर दस्ता थमी विपरीति रति में सख्त जोरों पर।
कुलाहल किंकिणी करती है बिछिया चुप है पोरों पर॥

[३४१]

विनती रति विपरीत की, करी परसि पिय पाय।
हँसि अनबोले हीं रही उत्तर दियो बताय॥
चरण गहि पी ने की विपरीत रति की इल्तिजा आली।
दिया हँसकर बता उत्तर रही खामोश ही खाली॥

[३४२]

मेरे बूझत बात तू, कत बहरावति बाल।
जग जानी विपरीत रति, लखि बिंदुली पिय भाल॥
मेरे पूछे भुलावा दे, नहीं तुम मानती रानी।
पिया के भाल लख बिंदुली जगत विपरीत रति जानी॥

[३४३]

राधा हरि हरि राधिका, बनि आये संकेत।
दंपति रति विपरीत सुख, सहज सुरत हू लेत॥
प्रिया प्रीतम व प्रीतम बन प्रिया संकेत बन आए।
सुरत ही में सहज विपरीत रति सुख दम्पती पाए॥

[३४४]

रमन कह्यौ हठि रमनि सौं, रति विपरीत विलास।
चितई करि लोचन सतर, सलज सरोस सहास॥
रमन रमनी से की विपरीत रति की चाह बरजोरी।
लजा, तेवर चढ़ा, लोचन नचा, फिर हँस गई गोरी॥

[२५०]

सरस सुमिल चित तुरँग की, करि करि अमित उठान।
गोय निबाहैं जीतिये, प्रेम खेल चौगान॥
दिले आशिक उठाकर सर चले बन अशहबे ताज़ी।
निबाहैं गोय जीतो इश्क के चौगान की बाज़ी॥

[२५१]

दृग मीजत मृगलोचनी, धर्‌यो उलटि भुज बाथ।
जानि गई तिय नाथ के, हाथ परसहीं हाथ॥
झिझक मृगलोचनी दृग मींचने, भुज भर उलट आना।
परसते साथ ही "निज नाथ का है हाथ" पहिचाना॥

[२५२]

प्रीतम दृग मीचत प्रिया, पानि परस सुख पाय।
जानि पिछानि अजान लौं, नेकु न होति लखाय॥
प्रिया प्रीतम के दृग मींचे परस पानों का सुख पाकर।
बने अनजान हैं पहिचान कर होते नहीं अज़हर॥

[२५३]

कर मुँदरी की आरसी, प्रतिबिम्बित प्यौ पाय।
पीठि दिये निधरक लखै, इक टक डीठि लगाय॥
पिया को मुनअकस अँगुश्तरी की आरसी में तक।
दिये ही पीठ इक टक देखती है डीठ ला निधरक॥

[२५४]

मैं मिसहीं सोयो समुझि, मुँह चूम्यौ ढिग जाय।
हँस्यौ खिस्यानी गर गह्यौ, रही गरे लपटाय॥
समझ सोया छली को पास जा, मुख चूम रस पागी।
हँसा, शरमाई, दी गलबाहैं तब मैं कण्ठ हँस लागी॥

[३६०]

खलित वचन अधखुलित दृग ललित स्वेदकन जोति।
अरुन वदन छवि मद छकी, खरी छबीली होति ॥
अधूरे से वचन अधखुल नयन श्रम स्वेदकन जारी।
छकी छवि से छबीली मुख अरुन शोभा की बलिहारी ॥

[३६१]

निपट लजीली नवल तिय, बहकि वारुनी सेय।
त्यौं त्यौं अति मीठी लगति, ज्यौं ज्यौं ढीठचौ देय ॥
निहायत शर्मगीं नव नाज़नी, सहबा से माती है।
मिटाती हैं अदाएँ शोखियाँ ज्यों ज्यों दिखाती है ॥

[३६२]

बढ़ति निकसि कुच कोर रुचि, कढ़त गौर भुजमूल।
मन लुटिगो लोटन चढ़त, चौंटति ऊँचे फूल ॥
समनबर, उच्च कलियाँ चुन रही खिलते हैं गुल बूटे।
चतुर हट, गौर भुज कुच कोर लोटन खुब मजे लूटे ॥

[३६३]

घाम घरीक निवारिए, कलित ललित अलि पुंज।
जमुना तीर तमाल तरु, मिलत मालती कुंज ॥
लवे जमुना ठहर लो धूप में, क्या कुंज छाई है।
तमालों से मिली है मालती अलि से सुहाई है ॥

[३६४]

चखित ललित श्रम स्वेदकन, कलित अरुन मुख तैन।
बन विहार थाकी तरनि, खरे थकाए नैन ॥
ललित श्रम स्वेदकन झलकें अरुन मुख पर छटा छाई।
थकी रस-केलि वन कुंजन थके लख नैन रैनाई ॥

[३७०]

दोऊ चोर मिहीचनी, खेल न खेलि अघात ।
दुरत हिये लपटाय कै, छुवत हिए लपटात ॥
रहे खेल आंख-मिचनी, पर अघाते हैं न घर जाते।
लिपट छाती से छुटने हैं, झपट छतियां हैं लिपटाते ॥

[३७१]

लखि लखि अँखियनि अधखुलिन, आँग मोरि अँगिराय ।
आधिक उठि लेटति लटकि, आरस भरी जँभाय ॥
हैं लख लख अधखुली अंखियान अँग अँग मोर अँगड़ाती।
भरी आलस जँभाई लै, उठ आधक है लटक जाती ॥

[३७२]

नीठि नीठि उठि बैठि कै, प्यौ प्यारी परभात ।
दोऊ नींद भरे खरे गरे लागि गिरि जात ॥
सुबह उठ, बैठ सुख सेजों प्रिया प्रीतम सुरँग राते।
ढले हैं नींद के सांचे गले लग कर हैं गिर जाते ॥

[३७३]

लाज गरब आलस उमंग भरे नैन मुसुक्यात ।
राति रमी रति देत कहि, औरे प्रभा प्रभात ॥
लजीले नैन गरबीले उनींदे रसमसे भारी।
सुबह का नूर कहता है रमी रति रात को प्यारी ॥

[३७४]

कुंज-भौन तजि भौन को, चलिये नंद किसोर ।
फूलति कली गुलाब की, चटकाहट चहुँ ओर ॥
ज़रा चलिये तौ मन्दिर छोड, माधौ मधु निकुंजन में।
चटखते गुंचए गुल हैं मची है धूम गुलशन में ॥

[३८०]

औरे ओप कनीनकनि, गनी घनी सिरताज।
मनी धनी के नेह की, बनी छनी पट लाज॥
जियाए मर्दुमे चश्म आज है सरताज महबूबाँ।
छनी सी कुछ हया है काशफे मतस्तीय-नजर्नूवाँ॥

[३८१]

कियो जु चिबुक उठाय के, कम्पित कर भरतार।
टेढ़ी ए टेढ़ी फिरति, टेढ़े तिलक लिलार॥
लगाया दस्तलरजाँ से तिलक टेढ़ा जो प्रीतम ने।
तू फिरती टेढी ही टेढी किया बेजुद है दमगम ने॥

[३८२]

बेई गड़ि गाड़ैं परी, उपट्यौ हार हिये न।
आन्यो मोरि मतग मनु, मारि गुरेरन मैन॥
हैं उभरे गुल ये सीना पर, नहीं ये हार उभर आया।
गुलेला मारकर क्यूपिड (cupid) ने फीलेमस्त लौटाया॥

[३८३]

पलनि पीक अंजन अधर, धरे महावर भाल।
आजु मिले जु भली करी, भले बने हो लाल॥
महावर भाल, लब सुरमा, पलक पीकों से, रँग डाला।
मिले आज आप किस्मत से बने हो खूब नँदलाला॥

[३८४]

गहकि गाँस औरे गहे, रहे अधकहे बैन।
देखि खिसौहैं-पिय नयन, किये रिसौहैं नैन॥
खिसौहैं नैन पिय के लख रिसौहैं नैन कर हेरी।
रही-अध ही कही कुछ और समझी घात मत फेरी॥

[१८५]

लेह लरेरे स्योर करि, कत करियत दग लोल ।
लीक नहीं यह पीककी श्रुतिमनि झलक कपोल ॥
क्यों आप रंग आँखों का गिरह ऊपर ये क्यों डाली।
नहीं यह लीक मानों पीक की मुलमन झलक लाली ॥

[१८६]

लाल कहाँ लाली भई लोयन कोयन माँह ।
लाल तिहारे दगन की परी दगनि में छाँह ॥
सुनी क्यों गोशए चश्मों में ये सुर्खी तेरे माली।
पड़ा है आप की आँखों का हम में अक्स बनमाली ॥

[१८७]

तरुन-कोकनद बरन बर, भय अरुन निसि जागि ।
वाही के अनुराग दग रहे मना अनुरागि ॥
तरोताज़ा कमल सी सुर्ख आँखें हैं ये शब जागीं।
समझ पड़ता है फिर हम रंग ही के रंग अनुरागीं ॥

[१८८]

केसर-केसरि कुसुम के रहे अंग लपटाय ।
लगे जानि नख अनखली, कत बोलत अनखाय ॥
कुसुम केसर की यह केसर है लिपटी अंग से प्यारी।
इन्हें नखआघ तू ए अनमुखी अनखा रही भारी ॥

[१८९]

सदन सदन के फिरन की सद न छुटै हरिराय ।
रुचै तितै विहरत फिरौ कत बिहरत उर आय ॥
ये घर घर घूमने की आपकी आदत नहीं जाती।
जिधर चाहो उधर बिहरो न बिहरो पर मेरी छाती ॥

[३१०]

पट कै ढिग कत ढाँपियत, सोभित सुभग सुबेख।
हद रद छद छबि देत यह, सद रदछद की रेख॥
तू घूँघट पट में प्यारी क्यों इसे झट ढाँक लेती है।
ये सद रद-छद-की-रेखा हद से ज़्यादा ज़ेब देती है॥

[३११]

मोहू सों बातनि लगे, लगी जीहि जिहि नाँय।
सोई लै उर लाइए, लाल लागियत पाँय॥
लगो बातों में मुझ से वह लगी जब, बात मत कीजे।
क़दम लगती हूँ उसको ही गले जाकर लगा लीजे॥

[३१२]

लालन लहि पाँय दुरै, चोरी सोहैं करै न।
सीस चढ़े पनिहा प्रगट, कहत पुकारे नैन॥
ये चोरी छिप नहीं सकती क़सम क्यों आप खाते हैं।
सुराग़ इसका ये नैन साफ़ ही सर चढ़ बताते हैं॥

[३१३]

तुरत सुरत कैसे दुरत, मुरत नैन जुरि नीठि।
डौंडी दै गुन रावरे, कहत कनौड़ी डीठि॥
तुरत का यह सुरत कैसे दुरे मुड़ दीठ रहती है।
लजीली दीठ गुन हज़रत सुनादी पीट कहती है॥

[३१४]

मरकत भाजन—सलिल गत, इन्दु कला के बेष।
झीन झँगा में झलमलै, स्याम गात नख रेख॥
छिपाले आब ज़रफ़े नील मन सी झिलमिलाती है।
झँगा झीने में नख रेखा सलौने तन सुहाती है॥

[१९५]

ऐसी ये जानी परति झँगा ऊजरे माँहि।
मृगनैनी लपटी जु हिय बेनी उपटी बाँहि॥
लिबासे साफ़ में यह वैसी ही देती है दिखलाई।
जो माशूक़ बग़ल लपटी ज़ुल्फ़ बाज़ू पर उभर आई॥

[१९६]

बाढ़ी की चित चटपटी धरत चटपटे पाय।
लपट बुझावति बिरह की कपट भरे हू भाय॥
उसी को दिल में बेताबी क़दम क्यों लड़खड़ाते हो।
लगा दिल में मर्ज़, ना आशिक़ा फ़ुरक़त बुझाते हो॥

[१९७]

कत बेकाज चलाइयत, चतुराई की चाल।
कहे देत गुन रावरे, सब गुन निरगुन माल॥
अबस तदबीर ना हासिल, कहो किस काम आती है।
ये बिनगुन माल सब गुन आपके हज़रत! बताती है॥

[१९८]

पावक सो नैननि लगो जावक लाग्यो भाल।
मुकुर होहुगे नेकु में मुकुर बिलोको लाल॥
लगी है आग सी आँखों महावर देख माथ पर।
मुकर जाओगे फिर हज़रत अभी देखो मुकर लेकर॥

[१९९]

रही पकरि पाटी सुरिस भरे भौंह चित नैन।
लखि सपने पिय आन-रत जगतहुँ लगति हिये न॥
पड़ी पाटी पकड़ रिस से भरी भौंहें नयन और दिल।
समझ सौतिन का संग सपने न जग लगती हिये हिलमिल॥

[४००]

रह्यौ चकित चहुँघा चितै, चित मेरो मति भूलि ।
सूर उदै आये रही, दृगनि साँझ सी फूलि ॥
मेरी अक़्ल आपकी सूरत से शशदर होके भूली है।
सुबह तशरीफ लाये शाम सी आँखों में फूली है॥

[४०१]

अनत बसे निस की रिसनि, उर बरि रही बिसेपि ।
तऊ लाज आई उझकि, खरे लजौंहैं देखि ॥
सवत घर शबगुजारी पर लगी इक आग सी तन में ।
खड़े जब मुनफ़अल देखे हया आई उझक मन में ॥

[४०२]

सुरँग महावर सौति-पग, निरखि रही अनखाय ।
पिय अँगुरिन लाली लखे, खरी उठी लगि लाय ॥
सुरँग जावक निरख सौकिन के पग उपजी अनख भारी ।
पिया की उँगलियों पर देख सुरखी जल उठी प्यारी ॥

[४०३]

कत सकुचत निधरक फिरौ, रतिओ खोरि तुमै न ।
कहा करौ जो जाय ए, लगे लगौंहैं नैन ॥
नहीं तक़सीर मुतलक़ आपकी, मत आप शरमाएँ ।
करें क्या आप जो यह दीदए मफ्तूँ ही लेजाएँ ॥

[४०४]

प्रान पिया हिय में बसै, नखरेखा—ससि भाल ।
भलौ दिखायौ आनि यह, हरि-हर—रूप रसाल ॥
जबीं पर है हिलाले नाख़ुनो दिल पर शिर्म (श्री) छाई ।
हरी-हर की ये झाँकी आपने क्या खूब दिखलाई ॥

[७०५]

यों न चले बलि रावरी, चतुराई की चाल ।
सनख हिये खिनखिन नटत, अनख बढ़ावत लाल ॥
यहाँ चतुराई की ये चाल चलना काम आता है।
ये इनकार और नाख़ुन सीना पर गुस्सा दिखाता है॥

[७०६]

न करु न डरु सब जग कहत, कत बे काज लजात ।
सौहैं कीजे नैन जो सांची सौहैं खात ॥
नहीं करें, डर ही क्या फिर आप क्यों सख्त लजाते हो।
ज़रा आँखें मिलाओ तुम जो सच सौगंध खाते हो॥

[७०७]

कत कहियत दुख देन को रचि रचि बचन अलीक ।
सबै कहा उर है लखे, लाल महावर-लीक ॥
हमारा दिल दुखाने को ये क्यों बातें बनाते हो।
दिखाकर रेख आलक की जिगर मेरा जलाते हो॥

[७०८]

नख रेखा सोहैं नई, अलसौहैं सब गात ।
सौहैं होत न नैन ए तुम सौहैं कत खात ॥
नई नाख़ुन की रेखा रंगे-शब से अंग अलसाये।
नहीं हो सामने आँखें जो सच सौगंध हो खाते॥

[७०९]

लाल सलोने अरु रहे अति सनेह सों पागि ।
तनिक कचाई देत दुख सूरन लों मुह लागि ॥
सलौने श्याम सुंदर पग रहे अब नेह में पागी।
ज़मींकंद की तरह दुख दे रही मुँह लग कच्ची॥

[४१०]

पल सोहै पगि पीक रँग छल सों है सब बैन ।
चल सौहैं कत कीजियत, ए अलसोंहैं नैन ॥
रँगीं पगि पीकपल सोहैं, सने सब बैन छल सो हैं ।
लजीले नैन अलसोहैं, सकुच कीजे न यल सों हैं ॥

[४११]

कत लपटैयत मो गरे, सो न जु ही निसि मैन ।
जिहि चपक बरनी किए, गुल अनार रँग नैन ॥
न लपटो मो गरे, लपटो जो हिय लपटी थी शब प्यारी ।
रँगे लोचन थे जिस चंपक बरन ने रंग गुलनारी ॥

[४१२]

भये बटाऊ नेह तजि, बादि बकति बे काज ।
अब आलि देत उराहनो, उर उपजत अति लाज ॥
तअल्लुक़ तोड बेगाना बने बातें बनाते हैं ।
गिला करते हुए मधकुर हम अब ब्रज जन लजाते हैं ॥

[४१३]

सुभरु भन्यो तुव गुन-कननि, पचयो कपट कुचाल ।
क्यों धों दान्यो लौं हियो, दरकत नाहिन लाल ॥
दगा से पक गया तेरे भरे भरपूर गुन दाने ।
अनार अब क्न नहीं फटता हैं सीना क्यों, खुदा जाने ॥

[४१४]

मैं तपाय त्रै ताप सों, राख्यौ हियो हमाम ।
मकु कबहू आवै इहा, पुलकि पसीजै स्याम ॥
ये नौ हम्माम सीना तीन तापों से है गरमाया ।
पसीजें श्याम घन शायद करें इस दीन पर दाया ॥

[५१५]

आज कछू औरै भये ठये नये ठिक ठैन।
चित के हितके चुगुल ए, नितके होहिं न नैन॥
हुए कुछ और ही तेवर नए ही ढंग डाले हैं।
ये राज़े दिल के हैं ग़म्माज़ हर दिन से निराले हैं॥

[५१६]

फिरत जु अटकत कटनि बिन रसिक सुरस महिं ख्याल।
नए नए मिति चिति हितनि, कत सकुचावत लाल॥
नहीं कुछ शर्म पे मतलब का घर घर आप जाते हो।
भला हर दिन हर इक से नेह कर, उफ़! क्यों लजाते हो॥

[५१७]

जो तिय तुम मन भावती राखी हिये बसाय।
मोहिं सिखावति दृगनि ह्वै वहियै उझकति आय॥
बसाई दिल में जो मन भावती वह तुमने रक्खी है।
चमक आँखों की पुतली बन झिझक मुझको सिखाती है॥

[५१८]

मोहिं करत कत बावरी, करैं दुराव दुरै न।
कहे देत रँग राति के, रँग निचुरत से नैन॥
नहीं रँग रैन के छिपने मुझे तू क्या बनाती है।
निचुरता रंग सा नैनों में रंगीनी दिखाती है॥

[५१९]

पट सौं पोंछि परे करौ खरी भयानक-भेष।
नागिन ह्वै लागति दृगनि नागबेलि की रेख॥
बहुत कुछ भयानक है कीजिये पट पोंछ परदेसी।
डुगन नागन सी लगती है खिंची यह नाग की बेली।

[४२०]

ससि बदनी मोकों कहत, हौं समुझी निज बात।
नैन-नलिन प्यौ रावरे, न्याय निरखि नै जात॥
मुझे जो माहरू कहते हो, समझी नज़र शरमाते।
सफ़ुरू लोचन कमल सचमुच मेरे सन्मुख हैं झुक जाते॥

[४२१]

दुरै न निघरघट्यौ दियै, ए रावरी कुचाल।
विष सी लागति है बुरी, हँसी खिसी की लाल॥
नहीं ये पर रविश छिपती है झुँझलाने से क्या हासिल।
ये ख़श्म-आलूदा खन्दा ज़हर के मानंद है क़ातिल॥

[४२२]

जिहि भामिनि भूषन रच्यो, चरन-महावर भाल।
वही मनो अँखिया रँगी, ओठनि के रँग लाल॥
चरन जावक रचाया जिसने मस्तक मान कर भारी।
उसी के सुर्ख़ ओंठों ने रँगी अँखियाँ ये गुलनारी॥

[४२३]

चितवनि रूखे दृगनि की, बिन हाँसी मुसुक्यान।
मान जनायो मानिनी, जानि लियो पिय जान॥
रुखाई की वो चितवन, बिन हँसी ही के वो मुसकाना।
जनाया मानिनी ने मान पिय रसखान ने जाना॥

[४२४]

बिलखी लखी खरी खरी, भरी अनख बैराग।
मृगनैनी सैन न भजै, लखि बेनी के दाग॥
खड़ी बैराग गुस्सा से भरी, लखती है बिलखाती।
निरख कर दाग बेनी सेज मृगनैनी नहीं जाती॥

[४२५]

हँसि हँसाय उर लाय उठि, कह जु रूखे बैन ।
जकित थकित ह्वै तकि रहे तकति तिरीछे नैन ॥
तर कसे पयाम तिरछे नयन तक, थक रहे
हँसा हँस कर, लगाके कण्ठ म गुलफ़ाम बनमाली

[४२६]

रिस की सी रुख ससिमुखी, हँसि हँसि बोलति बैन ।
गूढ़ मान मन क्यों रहे भये बूढ़ रँग नैन
तू हँस हँस बोलती है पर हैं तेरी रिस भरी
छिपे क्या मान मुख़फ़िया बीरबहूटी होगईं आँखें

[४२७]

मुँह मिठास दृग चीकने, भौंहें सरस सुभाय ।
तऊ खरे आदर खरो छिन छिन हियो सँकाय ॥
ज़बाँ शीरीं व चश्मे पुर तरन्नुम बेशिकन -
मगर फिर भी तकल्लुफ़ से धड़के हैं देख मे वसग़

[४२८]

पति-रितु-औगुन गुन बढ़त मान माह को सीत ।
जात कठिन ह्वै अति मृदौ रमनी-मन नवनीत ॥
ख़यूबोबस्फ़, शर मौसम से बढ़कर माघ माहो
दिले मग्रूर व मक्खन को कड़ा करते हैं मिल बाहम

[४२९]

कपट सतर भौंहें करी मुख सतरौंहें बैन ।
सहज हँसौंहें जानि कै, सौंहें करति न नैन ॥
चढ़ाईं योंकि भौंहें है ग़ज़रफ़ी का हम भरती
सहज ही पर हँसोंहें जान तुम सौंहें नहीं करती

[४३०]

सोवत लखि मन मान धरि, ढिग सोयो प्यौ आय।
रही सुपन की मिलन मिलि, तिय हियसों लपटाय॥
है सोती मान ठाने लख, पिया भी साथ जा सोये।
मिलन मिल स्वप्न की, छतिया लपट तिय दाग़ दिल धोये॥

[४३१]

दोऊ अधिकाई भरे, एकै गौं गहराय।
कौन मनावै को मनै, मानै मत ठहराय॥
अडे हैं अपनी अपनी , गौं नहीं कम ज़ौम-व-खुदराई।
मनावे कौन माने हठ में दोनों की है बन आई॥

[४३२]

लग्यौ सुमन ह्वै है सुफल, आतप रोस निवारि।
बारी बारी आपनी, सींच सुहृदता-बारि॥
सुफल होगा सुमन जो लग रहा रिस ताप तज प्यारी।
मुरौवत के सुजल से सींच बारी, प्रेम की बारी॥

[४३३]

गह्यौ अबोलो बोलि प्यौ, आपै पठै बसीठ।
दीठि चुराई दुहुन की, लखि सकुचौही दीठ॥
बुलाया भेज खुद ही क़ासिदा आने पै चुप ठानी।
चुराई डीठ लख दोनों की मुखड़ों पर फिरा पानी॥

[४३४]

खरी पातरी कान की, कौन बहाऊँ बानि।
आक कली न रली करै, अली अली जिय जानि॥
निहायत कान की कच्ची है, इस आदत पै शर्म आए।
अकौवा की कली का कब भंवर रस चूसने जाए॥

[४४०]

तो-रस-राच्यौ आन वस, कहैं कुटिल मति कूर।
नीम निबौरी क्या लगै, बौरी चाखि अँगूर॥
रँगा रसरंग में तेरे खयाले गैर क्या रक्खे।
निबौरी कब रुचै बौरी सरस अंगूर जो चक्खे॥

[४४१]

हा हा वदन उघारि दृग, सुफल करैं सब कोय।
रोज सरोजनि क परै, हँसी ससी की होय॥
ज़रा आंखों को ठण्डा कर दिखा मुंह खोलकर झाकी।
कमल पर ओस पड जाये, हँसी हो माह तावां की॥

[४४२]

गहिली गरब न कीजिये, समैं सुहागहिं पाय।
जिय की जीवनि जेठ ज्यौं, माह न छाह सुहाय॥
सुहाग अच्छे समय पाकर गुरूरी कर न मदमाती।
जो जिय की जेठ जीवन माघ में छाया नहीं भाती॥

[४४३]

कहा लेहुगे खेल में, तजौ अटपटी बात।
नैकु हँसौहीं हैं भई, भौहैं सौहैं सात॥
मज़ाक अच्छा नहीं, विगडे है दिल फवती सुनाने पर।
हँसोहीं कुछ हुई भौंहें मेरे सोगंध खाने पर॥

[४४४]

सकुचि न राहिए स्याम सुनि, ए सतरौंहैं वैन।
देत रचौंहैं चित कहैं, नेह-नचौंहैं नैन॥
ठिठक रहिये न सुनकर श्याम, ये अल्फाज ला तायल।
निचौहैं नेह के यह नैन कहते है, "रचा है दिल" ॥

[४४५]

चलो । चलैं छुटि जाइ गो हठ रावरे सकोच ।
खरे चढ़ाये हे ससै, आए लोचन लोच ॥
चलो चलने से छुट जायेगी हठ, हाँ ! आपकी ख़ातिर ।
चढ़े थे तब तो तेवर, लोच लोचन आई है ख़ातिर ॥

[४४६]

मनरथ हू रस पाइयं रसिक रसीली पास ।
जैसे साठि की कठिन, गांठें भरी मिठास ॥
कुरस में भी रसीली की इनायत है जो रसभीनी ।
गिरह में नैशकर के जिसतरह होती है शीरीनी ॥

[४४७]

क्यौं हू सह बात न लगै, थाके भेद उपाय ।
हठ दृढ़ गढ़ गढ़वै सुचलि, लीजै सुरँग लगाय ॥
नहीं सह बातकी लगती थकी है भेद की भी कल ।
हिसार असरार मुस्तहकम सुरँग से तोड़िये चल चल ॥

[४४८]

वाही दिन तैं ना मिटयौ, मान कलह को मूल ।
भलैं पधारे पाहुने, है गुड़हर को फूल ॥
उसी दिन से अभी है जड़ कलह का मान मिट न कर ।
भले मेहमान आप आए, गुड़हर का सुमन बन कर ॥

[४४९]

आवे आपु भली करी मेटन मान मरोर ।
दूरि री यह वलि है छला छिगुनिया छोर ॥
भगाने आप आए, आइए, हज़रत ! करम कीजे ।
छला छिंगुरी किनारे का किनारे आप कर दीजे ॥

[४५०]

हम हारीं कै कै हहा, पायनि पार्यो प्यौर।
लेहु कहा अजहू किये, तेह तरेरे त्यौर॥
पिया को पाँव पाडा और हा हा करके मैं हारी।
मिलैगा अब भी क्या तेवर चढाने से तुम्हें प्यारी॥

[४५१]

लखि गुरु जन बिच कमल सों, सीस छुवायो स्याम।
हरि सनमुख करि आरसी, हिये लगाई बाम॥
कवल सर से छुवाया श्याम ने गैरों में लख जाती।
लगाई आरसी अंगुश्तरी की बाम ने छाती॥

[४५२]

मन न मनावन को करै, देत रुठाय रुठाय।
कौतुक लागे प्रिय प्रिया, खिझहूँ रिझवति जाय॥
नहीं मन मनाना, इसलिये फिर फिर रुठाते हैं।
मजा है खीझने में, रीझने का हज़ उठाते हैं॥

[४५३]

सकत न तुव ताते बचन, मो रस को रस खोय।
खिन खिन औटे छीर लौं, खरो सवादिल होय॥
तेरी तातो सी बातें खो नहीं सकतीं मजा मेरा।
मुल्ज़्ज़िज शीर औटे से हुआ करता है बहुतेरा॥

[४५४]

खरे अदब इठलाहठी, उर उपजावति त्रास।
दुसह संक विस को करै, जैसे सोंठि मिठास॥
खडे हैं या अदब, पर तेरी इठलाहट में भी है डर।
है जैसे इश्तबाहे ज़हर रखती सोंठ की शक्कर॥

[५९५]

मोहि दियो मेरो भयो रहत जु मिल जिय साथ।
सो मन बाँधि न सौंपिय पिय सौतिन के हाथ॥
दिया मुझको हुआ मेरा रहा करता है दिल से मिल।
ज़बरदस्ती न सौतों हाथ दीजे बाँधकर वह दिल॥

[५९६]

मार्‌यौ मनहारिन भरी गार्‌यौ खरी मिठाहिं।
वाको अति अनखाहटा मुसक्याहट बिन नाहिं॥
हलावत ख़ेज़ है दुश्नाम, दिलबर मार मन हारी।
तबस्सुम से सभी रहती है उसकी तल्ख़-गुफ़्तारी॥

[५९७]

पिय सौतिनि देखत दई अपने हिय तें लाल।
फिरति डहडही सबनि में वही मरगजी माल॥
उतार अपने गले से दिया सौतों के पहिनाई।
शिगुफ़्ता फिर रही पहिने हुए वह माल मुर्झाई॥

[५९८]

बालम बारे सौति के सुनि पर नारि विहार।
भो रस अनरस रिस रली रीझ खीझ इकबार॥
सुना पर नारि घर प्रीतम हुआ जब सौत की बारी।
हुई इक साथ रिस रस रंगरली तसग़ीर बेज़ारी॥

[५९९]

सुघर सौति बस पिय सुनति, दुलहिन दुगुन हुलास।
लखी सखी तन दीठि करि, सगरब सलज सहास॥
सुघर सौतिन के बस पिय सुन दुगुन दुलहिन को हुलसानी।
गुरूर ओ शर्म स सजनी तरफ़ कुछ देख मुसकानी॥

[४७०]

हठि हित करि प्रीतम लियौ, कियो जु सौति सिंगार।
अपने कर मोतिन गुह्यो, भयो हरा हरहार।
किया शृंगार सौकिन जे वो हठ हित पी से ली चाला।
बनी हरहार अपने हाथ की गूथी जलज माला॥

[४७१]

बिथुर्‌यो जावक सौति पग, निरखि हँसी गहि गास।
सलज हसौंहीं लखि लियौ, आधी हसी उसास॥
हँसी बिथरा मेहावर सौत पग लख रश्क से जलकर।
लजाते मुसकुराते देख अध हँस आह ली हँस कर॥

[४७२]

बाढ़त तो उर उरज-भरु भरु तरुनई बिकास।
बोझन सौतिन के हिये, आवत रूँधि उसास॥
नए जोबन के भरने से कुछ अब उभरी सी छाती है।
दबक सौतों के सीने से दबी सी साँस आती है॥

[४७३]

ढीठि परोसिनि ईठ ह्वै, कहे जु गहे सयान।
सबै सँदेसे कहि कह्यो, मुसुक्याहट में मान॥
चतुर प्रीतम सुने यों मीडियम ठहरा के हमसाया।
सबै सन्देस कह मुसक्यान में कुछ मान दरसाया॥

[४७४]

चलत देत आभार सुनि, वही परोसिहिं नाह।
लसी तमासे के दृगनि, हाँसी आँसुन माह॥
खबरगीर उस पड़ोसी ही को चलते सुन जो था शैदा।
तबस्सुम तुरफा तर अश्कों के कुरमट में हुआ पैदा॥

[४८०]

चलत चलत लौ ले चले, सब सुख संग लगाय।
ग्रीषम-बासर सिसिर-निस, पिय मो पास बसाय॥
चले लै साथ प्रीतम सुख सफल कर प्रेम की घातें।
बसाकर पास मेरे जेठ के दिन पूस की रातें॥

[४८१]

अजौं न आये सहज रँग, बिरह दूबरे गात।
अबहीं कहा चलाइये, ललन चलन की बात॥
तने महज़ूर पर अब तक सहज रंगत न आई है।
अभी से लाल चलने की ये क्या चरचा चलाई है॥

[४८२]

ललन चलन सुनि पलनि मैं, अँसुआ झलके आय।
भई लखाय न सखिनि हूँ, झूठे ही जँमुआय॥
ललन का सुन चलन आँखों में अश्कों का घिरा झुरमट।
छिपा हमजोलियों से ली जँभाई ओट कर घूँघट॥

[४८३]

चाह भरी अति रस भरी, बिरह भरी सब बात।
कोरि सँदेसे दुहुन के, चले पौरि लौं जात॥
मुहब्बत शौक रस फुरकत भरे दोनों ही रंग गाते।
सँदेशे सैकड़ों कहते हुए हैं पौर तक जाते॥

[४८४]

मिलि चलि चलि मिलि मिलि चलत, आँगन अथयो भान।
भयो मुहूरत भोर को, पौरिहि प्रथम मिलान॥
चले मिलि, मिल चले सूरज अथै आँगन में ही हिलमिल।
मुहूरत भोर का था पौर में पहिली हुई मंजिल॥

[४८५]

दुसह बिरह दारुन दसा, रह्यौ न और उपाय।
जात जात ज्यौं राखिये, पिय की बात सुनाय॥
वियोगिन की व्यथा सख़्त फिर न नुसख़ा कुछ नज़र आवे।
सुना प्रीतम की बातें प्राण रक्खे जाते ही जाते॥

[४८६]

नयन्यौ लागि बियोग की बह्यौ बिलोचन नीर।
आठौ जाम हिये रहै, उड्यौ उसास समीर॥
भरा है आबदीदा आतिश फुरक़त यही है मन।
नफ़स की भाप से आठों पहर सीने में है हलचल॥

[४८७]

पलनि प्रगट बरुनीनि बढ़ि नहिं कपोल ठहरात।
अँसुआ परि छतियानि पै छिनछिनाय छपि जात॥
छलक पलकों में यह मिज़गाँ पै आरिज़ पर से ढलते हैं।
छनाछन अश्क गिर गिर सीनए सोज़ाँ पै जलते हैं॥

[४८८]

करी राख्यौ निरधार यह मैं लखि नारी ज्ञान।
वही बैद औषध वहै, वही जु रोग निदान॥
यही तशख़ीस कर रक्खी है मैंने, देखकर नाड़ी।
वही है बैद भी दरमाँ वही है मरज़ बीमारी॥

[४८९]

मरिबे को साहस ककै बढ़ै बिरह की पीर।
दौरति है समुहैं ससी, सरसिज सुरभि समीर॥
बिरह की पीर बढ़कर जब हुई मरने पै आमादा।
नसीमो माह नीलोफ़र पै दौड़ी पीड़ फ़रयादी॥

[४७०]

ध्यान आनि ढिग प्रानपति, मुदित रहति दिन राति ।
पलक कम्पति पुलकति पलक, पलक पसीजति जाति ॥
तसौवर ही में मिलकर प्राण प्रीतम से है खुश रहती ।
कभी लरज़ाँ कभी शादाँ, पसीने में कभी बहती ॥

[४७१]

सकै सताय न बिरह तम, निसदिन सरस सनेह ।
रहै वहै लागी दृगनि, दीपसिखा सी देह ॥
सलामत है नेह से नहीं हिज्र-ज़ुल्मत सताए क्या ।
लगा है शमअरू आँखों अँधेरा पास-आए क्या ॥

[४७२]

बिरह जरी लखि जीगननि, कह्यौ न उहि कइ बार ।
अरी आव भजि भीतरैं, बरसत आजु अँगार ॥
जलेतन जुगनुओं को देख कितना दम न कह हारे ।
चल-आ, अन्दर बरसते हैं आँगन में आज अंगारे ॥

[४७३]

अरी परै न करै हियौ, खरै जरै पर जार ।
डारति घोरि गुलाब सौं, मलै मिलै घनसार ॥
जले पर मत जला, छाती मेरी बेहद दहकती है ।
मिला काफ़ूर में सन्दल न, अर्क़-गुल छिड़कती है ॥

[४७४]

कहे जु बचन बियोगिनी, बिरह बिकल अकुलाय ।
किये न को अँसुआ सहित, सुआ सु बोल सुनाय ॥
सुना फ़िरक़त में बिरहिन के जो मुख से दर्दे पिनहानी ।
सुआ ने कर दिये अँसुआ सहित दुहरा के वह बानी ॥

[४९५]

सीरे जतननि सिसिर रितु, सहि बिरहिनि तन ताप।
बसिबे कौं ग्रीषम दिननु परयौ परोसिनि पाप॥
बिरहनी की तपन तन से शिशिर शीतल सी तदबीरें।
परोसिन को पड़ा बसना ग़ज़ब गरमा की सह पीरें॥

[४९६]

प्रिय प्राननि की पाहरू, करति जतन अति आप।
जाकी दुसह दसा पर्यौ, सौतिनि हूँ संताप॥
पिया की जान का ताबीज़ उसको जान कर प्यारी।
जो देखा जाँ-ब-लब सौतें हुईं ग़म से बिकल भारी॥

[४९७]

आड़े दै आले बसन, जाड़े हूँ की राति।
साहसु कै कै नेह बस सखी सबै ढिग जाति॥
बसन भीगे से आड़े थी सँभल जाड़े की रातों में।
सखी नज़दीक जाती है फँसा प्रिय नेह नातों में॥

[४९८]

सुनत पथिक मुँह माह निसि लुवैं चलति उहि गाम।
बिन बूझे बिनहीं कहे जियति बिचारी बाम॥
ये सुन राही से उस देह, माघ शब चलती है लू भारी।
बिना पूछे कहे, समझा, जभी जीती है बेचारी॥

[४९९]

इत आवति चलि जाति उत चली छसातक हाथ।
चढ़ी हिंडोरे सी रहै लगी उसासनि साथ॥
इधर से सात हाथ आती उधर फिर से है खिंच जाती।
हिंडोलेसी चढ़ी दम की कशाकश में है दिखलाती॥

[५००]

नेह कियो अति डहडहौ, विरह सुकाई देह।
जरै जवासा जेज में, जैसे बरिसै मेह॥
जुदाई ने सुखाया तन, हरा कर नेह का नाता।
जवासा जिस तरह जम जौज़ के जल में है जल जाता॥

[५०१]

आनि इहाँ विरहा धर्यौ, ज्यौं बिजुरी जनु मेह।
दृग जु बरत बरिसत रहत, आठौं जाम अछेह॥
किए हैं हिज्र ने याँ बर्को बारां मुत्तफ़िक बाहम।
झड़ी सी लग रही आँखों से जलती हरघडी हरदम॥

[५०२]

विरह विपति दिन परत ही, तजे सुखनि सब अग।
रहि अबलौंऽब दुखौ भये, चला चले जिय सग॥
खुशी ने आतेही फुरक़त के तन से कूच था ठाना।
ले-हमदम का ठहरा जान के अब साथ है जाना॥

[५०३]

नये विरह बढ़ती बिथा, खरी बिकल जिय वाल।
बिलखी देखि परोसिन्यौ, हरष हँसी तिहि काल॥
नई फुरक़त गम-अफ्ज़ूना, निहायत दिल को बेचैनी।
हँसी खुश हा पड़ोसिन को तड़पता देख मृगनैनी॥

[५०४]

छतो नेह कागद हिये, भई लखाय न टाँक।
विरह तचें उघर्यौ सु अब, सेहुँड कैसो आँक॥
मुहब्बत मुरतसिम क़िरतास सीना पर थी पिनहानी।
ज़कूम-आसा नुमायाँ नारे-हिजरां से हुई जानी॥

[५०५]

करके मीड़े कुसुम लौं गई बिरह कुम्हिलाय।
सदा समीपिनि सखिन हूँ नीठि पिछानी जाय॥
मुझे मालीदा कुसुम की तरह हिज्राँ से कुम्हलानी।
सखी की हमनशीनों से नहीं जाती है पहिचानी॥

[५०६]

लाल तिहारे बिरह की अगिनि अनूप अपार।
सरसै बरसै नीर हूँ मिटै न झरहूँ झार॥
अजब कुछ आतिशे दूरी में तेरे पेशदस्ती है।
न झर से झार मिटती है बरसने से बरसती है॥

[५०७]

याके उर औरै कछू लगी बिरह की लाय।
पजरै नीर गुलाब के, पिय की बात बुझाय॥
गज़ब सीने में उसके आतिशे फ़ुरक़त उमड़ती है।
पिया की बात से बुझती है अर्क़े गुल से जलती है॥

[५०८]

मरी डरी कि टरी बिथा कहा खरी चलि चाहि।
रही कराहि कराहि अति अब मुख आहि न आहि॥
है जीती या कि मर बीती, ज़रा क्या हाथ धर छाती।
कराही अबतलक, अब आह तक लब पर नहीं आती॥

[५०९]

कहा भयो जो बीछुरे मो मन तो मन साथ।
उड़ी जाति कित हूँ गुड़ी तऊ उड़ायक हाथ॥
हुआ बिछुड़े से क्या दिल आपही के साथ है मेरा।
पतंग उड़कर कहीं जाए उड़ायक हाथ है डरा॥

[५१०]

जब जब वे सुधि कीजिये, तब सबही सुधि जाँहि ।
आँखिन आँखि लगी रहैं, आँखौ लागति नाँहि ॥
वो सुधि करते हैं जब जब, तब ही सब सुध भूल जाती है।
लगी है आंख आंखों से न हरगिज़ आंख लगती है॥

[५११]

कौन सुनै कासों कहौं, सुरति बिसारी नाह ।
बदाबदी जिय लेत हैं, ए बदरा बदराह ॥
कहूँ किसको सुनेगा कौन, चिट्ठी तक न देते हैं ।
बदी बदबद के ये बदराह बदल जान लेते हैं॥

[५१२]

औरे भाँति भए अब ये, चौसर चन्दन चन्द ।
पति बिन अति पारत बिपति, मारत मारुत मन्द ॥
हुए कुछ और ही अब चंद चन्दन चौसरी माला।
पिया बिन मन्दमारुत ने मुझे तो मार ही डाला॥

[५१३]

नेकु न झुरसी बिरह झर, नेह लता कुम्हिलाति ।
निति निति होति हरी हरी, खरी झालरति जाति ॥
झुलसती ये नहीं हरगिज़, है नारे हिज्र की झेली।
हरी हर वक्त होकर फैलती है प्रेम की बेली॥

[५१४]

यह बिनसत नग राखि कै, जगत बड़ो जस लेहु ।
जरी बिषम जुर ज्याइए, आय सुदरसन देहु ॥
ये बिनसत नग बचाकर राखे जग में सुयस लीजे ।
विषम जुर से जिया प्रीतम सुदर्शन आके अब दीजे॥

[५०५]

करके मीड़े कुसुम लौं गई बिरह कुम्हिलाय।
सदा समीपिनि सखिन हूँ नीठि पिछानी जाय॥
तुझे मालीदा परकफ़ की। तरह हिज्राँ से कुम्हलानी।
सदा की हमनशीनों से नहीं जाती है पहिचानी॥

[५०६]

लाल तिहारे बिरह की, अगिनि अनूप अपार।
सरसै बरसै नीर हूँ मिटै न झरहूँ झार॥
अजब कुछ आतिशे दूरी में तेरे पेशदस्ती है।
न झर से झार मिटती है बरसने से सरसती है॥

[५०७]

जाके उर आरे कछू लगी बिरह की लाय।
पजरै नीर गुलाब के, पिय की बात बुझाय॥
ग़ज़ब सीने में उसके आतिशे फ़ुरक़त उपसती है।
पिया की बात से बुझती है अर्क़े गुल से जलती है॥

[५ ८]

मरी डरी कि टरी बिथा, कहा खरी चलि चाहि।
रही कराहि-कराहि अति अब मुख आहि न आहि॥
है जीती या कि बस बीती चलो क्या हाथ धर छाती।
कराही अबतलक, अब आह तक लब पर नहीं आती॥

[५०९]

कहा भयो जो बीछुरे मो मन तो मन साथ।
उड़ी जाति कित हूँ गुड़ी तऊ उड़ायक हाथ॥
हुआ बिछुड़े से क्या दिल आपही के साथ है मेरा।
पतंग उड़कर कहीं जाए उड़ायक हाथ है डोरा॥

[५१०]

जब जब वै सुधि कीजिये, तब सबही सुधि जाँहि ।
आँखिन आँखि लगी रहै, आँखौ लागति नाँहि ॥
वो सुधि करते हैं जब जब, तब ही सब सुध भूल भगती है।
लगी है आंख आँखों से न हरगिज़ आँख लगती है ॥

[५११]

कौन सुनै कासों कहौं, सुरति बिसारी नाह ।
बदाबदी जिय लेत है, ए बदरा बदराह ॥
कहूँ किसको सुनैगा कौन, चिट्ठी तक न देते हैं ।
बदी बदबद के ये बदराह बद्दल जान लेते हैं ॥

[५१२]

औरै भाँति भए ऽब ये, चौरस चन्दन चन्द ।
पति बिन अति पारत बिपति, मारत मारुत मन्द ॥
हुए कुछ और ही अब चंद चन्दन चौसरी माला ।
पिया बिन मन्दमारुत ने मुझे तो मार ही डाला ॥

[५१३]

नेकु न झुरसी बिरह झर, नेह लता कुम्हिलाति ।
निति निति होति हरी हरी, खरी आलरति जाति ॥
झुलसती ये नहीं हरगिज़, है नारे हिज्र की झेली ।
हरी हर वक्त होकर फैलती है प्रेम की बेली ॥

[५१४]

यह बिनसत नग राखि कै, जगत बड़ो जस लेहु ।
जरी बिषम जुर ज्याइए, आय सुदरसन देहु ॥
ये बिनसत नग बचाकर रावरे जग में सुयस लीजे ।
विषम ज्वर से जिया प्रीतम सुदर्शन आके [illegible] दीजे ॥

[५१५]

मित संसो हंसो भवतु मनहुँ सु हरि अनुमान ।

बिरह अगिनि लपटनि सकत, झपटि न मीच सिचान ॥

ये राज़ है हंस कैसे बच रहा फिर क्या है पाता ।

नहीं बाज़े मसल लपटों से फ़ुरक़त के झपट पाता ॥

[५१६]

करी बिरह ऐसी तऊ गैल न छाँड़त मीच ।

दीने हूँ चसमा चखनि चाहै लहै न मीच ॥

ये की फ़ुरक़त ने हालत पिय तन लेकिन नहीं जाती ।

अजल ऐनक दिये है ओसती फिर भी नहीं पाती ॥

[५१७]

मरन भलो बरु बिरह तें, यह बिचार चित जोय ।

मरन मिटै दुख एक को, बिरह दुहूँ दुख होय ॥

अजल बहतर है फ़ुरक़त से यही कुछ दिल में है आती ।

लिए तकलीफ़ दोनों को, मरे एक को है मिट जाती ॥

[५१८]

बिगसत नव बल्ली कुसुम निकसत परिमल पाय ।

परसि पजारति बिरहि हिय बरसि रहे की बाय ॥

नई बेलों में कलियाँ खिल रहीं खुशबू निकलती है ।

शमीमे बर्शकाली जाय लगन की आग जलती है ॥

[५१९]

औंधाई सीसी सुलखि बिरह बरति बिललात ।

बीचहिं सूखि गुलाब गो छींटो छुयो न गात ॥

उसे गिरियाँ व बिरियाँ देख दी औंधी कसर ऊपर ।

सुखा छींटा न तन, अधबीच ही था गुलाबे तर ॥

[५२०]

हौंही बौरी विरह वस, कै वौरो सव गांव।
कहा जानिये कहत है, ससिहिं सीतकर नाव॥
ये पागल हो गई वस्ती कि मैं ही खुद हूँ वौरानी।
कहा करते है शशि को शीतकर, करते हैं नादानी॥

[५२१]

सोवति जागति सुपन वस, रस रिस चैन कुचैन।
सुरति स्याम घन की सुरति, विसरै हूँ विसरै न॥
खुशी गम खश्म लज़्ज़त ख़्वाव में क्या जागते सोते।
सुरत सूरत की रहती है जुदा नटवर नहीं होते॥

[५२२]

दृग मलंग डारे रहैं, कीने वदत निमूँद।
करि साँकरि वरुनी सजल कौड़ा आँसू वूँद॥
मलंगे मन निमुंद आखों पड़ा तकिया दिमाना है।
सलासल मौज मिजगाँ ताजियाना अश्क़ दाना है॥

[५२३]

जिहिं निदाघ दुपहर रहै, भई माह की राति।
तिहिं उसीर की रावटी, खरी आवटी जाति॥
दुपहरी जेठ की शव माघ कैसी जिसमें थी भाती।
उसी खस रावटी में सोज से अव है जली जाती॥

[५२४]

तच्यौ आँच अति विरह की, रह्यो प्रेम रस भीजि।
नैननि के मग जल वहै, हियो पसीजि पसीजि॥
पिघल विछुरन की आँचों से सरस वन प्रेम के सर से।
जिगर की वर्फ़ घुल घुल वह रही है दीदए तर से॥

[५२५]

स्याम सुरति करि राधिका तकति तरनिजा तीर।
अँसुवनि करति तरौंस कौ खिनक खरौंहौं नीर॥
जमुना का तीर तक राधे सुरत कर स्याम सुन्दर की।
किया करती हैं जल खारा बशौक्र दरिए-तर की॥

[५२६]

गोपिनि के अँसुवनि भरी, सदा असोस अपार।
डगर डगर नै ह्वै रही बगर बगर के बार॥
न कह मुझ गोपियों की पूछिये माधव! दशा हम से।
नदी सी बह रही हर हर क़दम पर चश्मे-पुरनम से॥

[५२७]

बन बाटनु पिक बटपरा तकि बिरहिनि मत मैन।
कुहौ कुहौ कहि कहि उठै करि करि राते नैन॥
वतन को साथ लै रूप बिरहनी मजराज बिन मधुबन।
कुहू कहि कहि के रँग रात नयन करता है पिक रहज़न॥

[५२८]

दिसि दिसि कुसुमित देखियत उपवन बिपिन समाज।
मनो बियोगिनि कौ कियै सरपंजर ऋतुराज॥
चमन बन खिल रहे कुछ हाय रंगारंग से यकसर।
बनाया है वियोगिन के लिए ऋतुराज सरपंजर॥

[५२९]

हिये औरि सी ह्वै गई टरी औधि के नाम।
दूजे कर डारी खरी बौरी बौरे आम॥
अवध आगम की टलने सुन थी एक ही कुछ दीवानी।
फिर इसपर आम बौरे देखकर वह और बौरानी॥
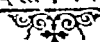
[५३०]

मो यह ऐसोई समो, जहा सुखद दुख देत।
चैत चाद की चादनी, डारति किये अचेत॥
सुफ़र्रह थे जो, मूज़ी कर दिये दौरे सितमगर ने।
अचेत अब चैत की यह चाँदनी चित को लगी करने॥

[५३१]

गनती गनिवे तें रहे, छत हू अछत समान।
अब आलि ये तिथि औम लौं, परे रहो तन प्रान॥
तेरा होना न होना क्या, नहीं खेला है जीवन में।
पडी पे जान रह बेकार छततिथि की तरह तन में॥

[५३२]

जाति मरी बिछुरति घरी, जल सफरी की रीति।
छिन छिन होति खरी खरी, अरी जरी यह प्रीति॥
घडी भर भी बिछुरने से ये मछली सा है तड़पाए।
खरी होती है छिन छिन उफ मुहब्बत भाड में जाए॥

[५३३]

मार सुमार करी खरी, मरी मरीहि न मारि।
सींचि गुलाब घरी घरी, अरी बरीहि न वारि॥
सितमगर मार ने मारा मरी को, अब तू मत मारे।
गुलाब अब सींच सींच इसपर परी को आह! क्यों वारे॥

[५३४]

रह्यौ ऐंचि अत न लह्यौ, अवधि दुसासन वीर।
आली बाढ़त विरह ज्यौ, पचाली कौ चीर॥
रहा है खेंच दुःशासन अवध वे इन्तिहा आली।
बिरह बढ़ही रहा है पर मिसाले चीर पञ्चाली॥

[५१५]

बिरह बिथा जल परस बिनु बसियत मो हिय ताल।
कछु जानत जलथंभ बिधि दुरजोधन लौं लाल॥
बिला महसूस आप हिज्र पस्ते ही गहीरे (तालाब) दिल।
मगर है इम्सितावे-आब में कुवराज सी कामिल॥

[५१६]

सोवति सुपन स्याम घन हिलि मिलि हरति वियोग।
तबहीं टरि कितहूँ गई नींदौ नींदन जोग॥
हरी हर ही रहे थे दर्दे फ़ुरक़त ख़्वाब में हिलमिल।
गई इतने में उड़ कर नींद पापिन नींदने क़ाबिल॥

[५१७]

पिय बिछुरन को दुसह दुख, हरष जात प्यौसार।
दुरजोधन लौं देखियत तजत प्रान यह बार॥
ख़ुशी मैहर के जाने की, पिया बिछुरन का भी ग़म है।
है दुबिधा मिस्ल दुरजोधन निकलता प्राण का दम है॥

[५१८]

कागद पर लिखत न बनत कहत सँदेस लजात।
कहिहै सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात॥
लिखा जाता नहीं काग़ज़ पै कहते शर्म ने घेरा।
कहेगा आप का दिल आप से कुल हाल दिल मेरा॥

[५१९]

बिरह बिकल बिनु ही लिखी पाती दई पठाय।
आँक विहीनी यों सुचित सूने बाँचत जाय॥
बिरह बेहोश मअशूक़ पै भेजी बिन लिखी पाती।
बिला हरफ़ों के बेदिल का है दिल की सी नज़र आती॥

[५४०]

रँग राती राते हिये, प्रीतम लिखी बनाय।
पाती काती बिरह की, छाती रही लगाय॥
लिखी रंगीन कागज पर प्रिये प्रीतम, घना पाती।
समझ सफ्फाक-हिजराँ रहगई पाती लगा छाती॥

[५४१]

तर झुरसी ऊपर गरी, कज्जल जल छिरिकाय।
पिय पाती बिनहीं लिखी, बाँची बिरह बलाय॥
तले झुलसी गली ऊपर से कज्जल जल से छिड़काई।
पिया पाती में बिन लिक्खी पढ़ी तकलीफ तनहाई॥

[५४२]

कर लै चूमि चढ़ाय सिर, उर लगाय भुज भेंटि।
लहि पाती पिय की तिया, बाँचति धरति समेटि॥
चढ़ा सिर, हाथ लै, छाती लगा, भुज भेंट अंगड़ाती।
कभी पढ़ती कभी धरती है तह कर फिर पिया पाती॥

[५४३]

मृग नैनी दृग के फरक, उर उछाह तन फूल।
बिनही पिय आगम उमँगि, पलटन लगी दुकूल॥
भड़कते आँख आहू चश्म के तन मन न सुख थोड़ा।
पिया के आगमन बिन ही बदलने लग गई जोड़ा॥

[५४४]

बाम बाहु फरकत मिलै, जौ हरि जीवन मूर।
तौ तोंहीं सों भेंटिहौं, राखि दाहिनी दूर॥
फड़कते हाथ बाएँ जो मिलें प्रीतम पिया प्यारे।
तौ भेटगी तुझी से, दाहिने रख दूर गम सारे॥

[५५१]

कियो सयानी सखिन सों नहिं सयान यह भूल ।
दुरै दुराई फूल लौं क्यों पिय आगम फूल ॥

परीक्ष हम से ये पर की बड़ा गुमान ओ य फर की ।
छिपै क्यों फूल सी ये फूल प्यारी ! पीके आमद की ॥

[५५२]

आयो मीत बिदेस तें काहू कह्यो पुकारि ।
सुनि हुलसी बिहँसी हँसी दोऊ दुहुनि निहारि ॥

पिया परदेश से आए ! कोई "हाँ" कह पुकारा है ।
य सुन हुलसी-हँसी-बिहँसी किया बाहम इशारा है ॥

[५५३]

मलिन देह वेई बसन, मलिन बिरह के रूप ।
पिय आगम औरै चढ़ी आनन ओप अनूप ॥

मलिन तन की वही कपड़ बिरह का रूप भी वारे ।
चढ़ा अनुपम छबि मुख पर, ये सुन "आए पिया प्यारे" ॥

[५५८]

कहि पठई जिय भावती, पिय आवन की बात ।
फूली आँगन में फिरै आँग न आँगि समात ॥

पिया प्यारे ने कह भेजी कि अब हम जल्द आते हैं ।
फिरै फूली सी आँगन में न अँग अँग में समाते हैं ॥

[५५९]

रहे बरोठे में मिलत पिय प्रानन के ईसु ।
आवत आवत की भई बिधि की घरी घरी सु ॥

बिरोढिंग-रूम में हिल मिल मिले मुझसे वो रँग-राते ।
हुई मालूम बिधि की सी घड़ी आ आते ही जाते ॥

[५५०]

जदपि तेज रोहाल वल, पलकौ लगी न वार ।
तउ ग्वेड़ो घर को भयो, पैंड़ो कोस हजार ॥
समन्दे-याद-पा पर, गो नहीं आने लगी देरी।
हुई देहली मगर मालूम घर की मिस्ल जग फेरी ॥

[५५१]

बिछुरे जिये सकोच यह, बोलत बने न बैन ।
दोऊ दौरि लगे हिये, किये निचौहैं नैन ॥
जिये बिछुरन में भी सकोच से कुछ कह नहीं सकते ।
लगे उर दौड दोनों जुर, निचौहें नैन हैं तकते ॥

[५५२]

ज्यों ज्यों पावक लपट सी, तिय हिय सों लपटाति ।
त्यों त्यों छुई गुलाब सों, छतियां अति सियराति ॥
लपक पावक लपट सी ज्योंही सीने से है लपटाती ।
जुडाती त्यों ही अर्के गुल से छिडकी सी है वह छाती ॥

[५५३]

पीठि दिये ही नेकु मुरि कर घूँघट पट टारि ।
भरि गुलाल की मूठ सों, गई मूठि सी मारि ॥
जरा मुडकर, दिये ही पीठ, कुछ मुख से हटा घूंघट ।
गुलाली मूठ मारी मूठ सी, फिर हट गई झट पट ॥

[५५४]

दियो जु पिय लखि चखन मैं, खेलत फागु खियाल ।
बाढ़त हूँ अति पीर सु न, काढ़त बनत गुलाल ॥
पिया ने लख के चख चचल जो फाग अनुराग से खेली ।
न काढे पीर बढते भी गुलाल आँखों से अलबेली ॥

[५५५]

छुटत मुठी सँग ही छुटे लोकलाज कुल चाल।
लगे दुहुनि इक बेर ही, चल चित नैन गुलाल॥
सरीके कामदां यमें अहां चल गुल्ल हो छूटे।
गुलाबो वसमोसिल के चापही सपने मझे छूटे॥

[५५६]

जु ज्यों उझकि झाँपति बदन झुकति बिहँसि सतराय।
तुत्यों गुलाल मुठी मुठी झमकावत पिय जाय॥
विहँस कर मुख झपक मुख झाँपती है वो उझक ज्यों ज्यों।
गुलाबी मूठ मुट्ठी से चले मिलाकर पिया त्यों त्यों॥

[५५७]

रस भिजये दोऊ दुहुनि तउ ठिक रहैं टरैं न।
छबि सों छिरकत प्रेम रँग, भरि पिचकारी नैन॥
हुए सरबोर रस रंगों नहीं हटते पिया प्यारी।
रहे छबि छल छिड़क फिर प्रेम रँग से नैन पिचकारी॥

[५५८]

गिरे कप कछु कछु रहे कर पसीजि लपटाय।
लीनी मूँठि गुलाल भरि छुटत झुठी ह्वै जाय॥
गिरी कुछ कम्प से कुछ कुछ लपट चिपटी पसीजे कर।
है छुटते मूठ हो जाती गुलाबों मूठ यह भर भर॥

[५५९]

ज्यों ज्यों पट झटकति हठति हँसति नचावति नैन।
त्यों त्यों निपट उदार हू फगुआ देत बनै न॥
नचाकर नैन हँस पट की झटक से रंग है हमता।
बहुत फय्याज हैं फगुआ मगर देते नहीं बनता॥

[५६०]

झुकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधुरी गंध।
ठौर ठौर झूमत झपत, भौंर भौंर मधु अंध॥
छके मकरंद रस पी पी मधुप मधु अंध मद-माते।
मुअत्तिर आम मौरों के हैं चौरों गिर के झुक जाते॥

[५६१]

यह बसंत न खरी गरम, अरी न सीतल बात।
कहि क्यों प्रगटे देखिये, पुलक पसीजे गात॥
न गर्मी है न सर्दी है वसंत अब बारम् छाया।
तेरे तन पर खड़े रोंगटे, पसीना क्यों झलक आया॥

[५६२]

फिरि घर को नूतन पथिक, चले चकित चित भागि।
फूल्यो देखि पलास बन, समुहें समुझि दवागि॥
नये म्हरो पलट घर को चकित उलटे क़दम भागे।
खिले टेसू के बन, समझे लगी है आग इक आगे॥

[५६३]

अंत मरैंगे चलि जरैं, चढ़ि पलास की डार।
फिरि न मरैं मिलि हैं अली, ये निरधूम अँगार॥
चलें, चढ़ कर जलें टेसू पै आखिर मौत है, प्यारे।
मिलेंगे फिर न चाहे मरें ये बेदूद अंगारे॥

[५६४]

नाहिन ये पावक प्रबल, लुवैं चलत चहुँ पास।
मानहुँ बिरह बसंत के, ग्रीषम लेत उसास॥
नहीं लू बारम् झकझोर ग्रीषम में ये चलती हैं।
ये हिज्रे फ़स्ले-गुल ये आह गर्मा से निकलती हैं॥

[५५५]

छुटत मुठी सँग ही छुटे लोकलाज कुल चाल।
लगे दुहुनि इक बेर ही, चल चित नैन गुलाल॥
तरीक़े ख़ानदाँ, शर्मो हया सब मुश्त ही छूटे।
गुलालो चश्मोदिल के साथही लगने मज़े छूटे॥

[५५६]

जु त्यौं उझकि झँपति वदन झुकति विहँसि सतराय।
तत्यौं गुलाल मुठी झुठी झझकावत पिय जाय॥
विहँस उठ झुक मचल मुख झाँपती है वो उमक ज्यों ज्यों।
गुलाली मूठ झूठी से चले झिझका पिया त्यों त्यों॥

[५५७]

रस भिजये दोऊ दुहुनि तउ टिक रहैं टरैं न।
छवि सों छिरकत प्रेम रँग, भरि पिचकारी नैन॥
हुए सरबोर रस रंगों नहीं हटते पिया प्यारी।
चले छवि छक छिड़क फिर प्रेम रँग से नैन पिचकारी॥

[५५८]

गिरे कंप कछु कछु रहे कर पसीजि लपटाय।
लीनी मूँठि गुलाल भरि छुटत झुठी ह्वै जाय॥
गिरी कुछ कम्प से कुछ कुछ लपट चिपटी पसीजे कर।
है झूठी मूठ हो जाती गुलाली मूठ यह भर भर॥

[५५९]

ज्यौं ज्यौं पट झटकति हठति हँसति नचावति नैन।
त्यौं त्यौं निपट उदार हू फगुआ देत बनै न॥
बज़ाहिर वैसे इस पर भी मचलने से रंग है जमता।
बहुत फ़य्याज़ है फगुआ मगर देते नहीं बनता॥

[५७०]

पावक झर तें मेह झर, दाहक दुसह विशेष।
दहै देह वाके परस, याहि दृगनि ही देख॥
मुहर्रक आग की झर से बहुत कुछ मेह की झर है।
ये छूकर तन जलाती है वो देखे ही मुवस्सर है॥

[५७१]

कुढँग कोप तजि रँग रली, करति जुवति जग जोय।
पावस बात न गूढ़ यह, बूढ़न हू रँग होय॥
रँगीली रंगरलियाँ कर रहीं, चल छोड़ खुदबीनी।
खुली ये बात पावस में हो बूढ़ों को भी रँगीनी॥

[५७२]

धुर्वा होंहि न अलि यहै, धुआँ धरनि चहुं कोद।
जारत आवत जगत कौं, पावस प्रथम पयोद॥
नहीं ये अनतीरा है दुआँ घेरे हुए जल थल।
लगाने आग आते हैं चढ़े आषाढ़ के बादल॥

[५७३]

हठ न हठीली कर सकै, यह पावस ऋतु पाय।
आन गाँठ घुटि जाति ज्यों, मान गाँठ छुटि जाय॥
हठीली भी नहीं हठ मोसमे बारिश में कर पाती।
है घुटती आन ग्रह पर मान ग्रह है साफ छुट जाती॥

[५७४]

वेई चिरजीवी अमर, निधरक फिरौ कहाय।
छिन बिछुरैं जिनकी नहीं, पावस आयु सिराय॥
बने फिरते हैं आलम में, हमाजत्र और लाफ़ानी।
बिछुड़ते जिनकी बरषा में न उम्र आखिर हुई जानी॥

[५६५]

कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोबन सो कियो, दीरघ दाघ निदाघ॥
गिज़ाले शेर, मोरें मार, यकजा बसते हैं बाहम।
तपोबन गरमिये आतिशफ़िशां ने कर दिया आलम॥

[५६६]

बैठि रही अति सघन बन पैठि सदन तन माँह।
निरखि दुपहरी जेठ की, छाँहौं चाहति छाँह॥
सघन बन खानए तन में दबक कर जा छुपाया है।
दुपहरी जेठ की खुद चाहती छाया भी छाया है॥

[५६७]

तिय तरसौंहैं मन किये करि सरसौंहैं नेह।
धर परसौंहैं ह्वै रहे झर बरसौंहैं मेह॥
हुई सर सब्ज़ उलफ़त तप बनाये बरह बसमेतर।
नई काली घटा उमड़ी झुकी झूम कर दर पर॥

[५६८]

पावस सघन अँधारि में रह्यो भेद नहिं आन।
रात द्यौस जान्यौ परत लखि चकई चकवान॥
नहीं छोड़े बिहार अब आसतीन में नज़र आते।
तमीज़ इक जुफ़्त से सुरख़ाब ही के हैं दिन रात॥

[५६९]

छिनक चलति ठठकति छिनक भुज प्रीतम गर डारि।
चढ़ी अटा देखति घटा बिज्जु-छटा सी नारि॥
लिए गलबाँहें प्रीतम चल ठुमक छिन पैर धरती है।
अटा बिज्जुछटा बन घन-घटा की सैर करती है॥

[५८०]

ज्यों ज्यों बढ़ति बिभावरी, त्यों त्यों बढ़त अनंत ।
ओक ओक सब लोक सुख, कोक सोक हेमंत ॥
बढ़ा करते हैं शब के साथ ही हिमवंत में हरदम ।
ग़मे दूरीय सुरखाबो हरिक घर शादिए आलम ॥

[५८१]

कियै। सबै जग कामबस, जीते जिते अजेय ।
कुसुम सरहि सर धनुष कर, अगहन गहन न देय ॥
असीरुल फत्ह भी जीते हुआ इशरत—परस्त आलम ।
कुसुमसर का किया अगहन ने है तोरी कमाँ पुरखम ॥

[५८२]

मिलि विहरत बिछुरत मरत, दपति अति रस लीन ॥
नूतन विधि हेमत ऋतु, जगत जुराफा कीन ॥
बिचरते मुत्तफिक, मरते बिछुरते दोनों हैं हरदम ।
नया हिमवन्त नूतन विध जुराफा कर दिया आलम ॥

[५८३]

आवत जात न जानिये, तेजहि तजि सिअरान ।
घरहि जवाँई लौं घट्यौ, खरौ पूस दिन मान ॥
पता आने न जाने का न मुख की रोशनाई का ।
घटा है पूस का दिन, मान ज्यों खाना जमाई का ॥

[५८४]

लगत सुभग सीतल किरन, निसि सुख दिन अवगाहि ।
माह ससी भ्रम सूर त्यौं, रही चकोरी चाहि ॥
खुनक किरनों से निशि का सुख वो दिन में ही है पा सकती ।
चकोरी चांद के धोखे है सूरज माह का तकती ॥

[५७५]

अब तजि नाव उपाव की, आयो सावन मास।
सेल न रहिबो खेम सों कैम कुसुम की बास॥
क्या सावन सुहावन आइ दे तदबीर अब सारी।
कदम की बू से है अब तेग, भला रस बस की यारी।

[५७६]

वामा भामा कामिनी कहि बोलो प्रानेस।
प्यारी कहत लजात नहिं पावस चलत बिदेस॥
कहा करते हो वामा भामिनी कामिन प्रिया प्यारी।
चले परदेस पावस में ज़रा आती न लाचारी॥

[५७७]

उठि ठकठक एतो कहा पावस के अभिसार।
देखि परी मी कामिनी, दामिनि घन अँधियार॥
ज़रूरत क्या है ये अभिसारके। पावस में ठकठक की।
सघन घन बिच चमक दामिन सी चमकोगे तुम्हा ठकठकी॥

[५७८]

फिरि सुधि दै सुधि द्याय प्यौ यह निरदई निरास।
नई नई बहुरौ दई दई उसास उसास॥
सियासी निर्दई ने फिर दिखाकर याद गरमाया।
वही फिर सांस ऊपर को चढ़ा इक शोक फिर छाया॥

[५७९]

घन घेरो छुटि गौ हरषि चली चहूँ दिसि राह।
कियो सुचैनो आय जग सरद सूर नर नाह॥
गये बादल मुसाफिर चल पड़ा अब आग से घन घेरा।
शरी सुल्तां-परवर ने आ दिखाये आम फिर फेरा॥

[५९०]

रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधु नीर।
मंद मंद आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर॥
मधुर घंटावली बजती है मधुजल मद बहाती है।
नसीमे-कुंज कुंजर सी चली मधुबन से आती है॥

[५९१]

रही रुकी क्यों हू सु चलि, आधिक राति पधारि।
हरति ताप सब द्यौस कौ, उर लगि यार बयारि॥
रुकी रह कर कहीं फिर निस्फ़ शब फेरी सी करती है।
बयार इक यार सी सीने से लग दिन ताप हरती है॥

[५९२]

चुवत स्वेद मकरंद कन, तरु तरु तर बिरमाय।
आवत दच्छिण देसतें, थक्यौ बटोही बाय॥
मुअ़र्रिक़ क़तरए-गुल से शजर तर छाँह बिलमाता।
नसीमे वेह् का रहरो थका दक्षिण से है आता॥

[५९३]

लपटी पुहुप पराग पट, सनी स्वेद मकरंद।
आवति नारि नवोढ़ लौं, सुखद वायु गति मंद॥
ज़रे गुल के लपट पट अर्क़ गुल से चहचहाती है।
नई दुलहिन नसीमे जाँ फिज़ा दम ख़म से आती है॥

[५९४]

रुक्यौ साँकरे कुंजमग, करत झाँकि झुकराति।
मंद मंद मारुत तुरग, खूँदनि आवत जाति॥
रुका है साँकरी सी कुंज मग में झाँझ झुझराता।
समंदे बाद है क्या मंद गति से खूँदता आता॥

[५९०]

रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधु नीर।
मद मद आवत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर॥
मधुर घंटावली बजती है मधुजल मद बहाती है।
नसीमे-कुंज कुंजर सी चली मधुबन से आती है॥

[५९१]

रही रुकी केहू सु चलि, अधिक राति पधारि।
हरति ताप सब द्यौस कौ, उर लगि यार बयारि॥
रुकी रह कर कहीं फिर निस्फ शब फेरी सी करती है।
बयार इक यार सी सीने से लग दिन ताप हरती है॥

[५९२]

चुवत स्वेद मकरद कन, तरु तरु तर विरमाय।
आवत दच्छिण देसतैं, थक्यौ बटोही बाय॥
मुअर्रिक खिरमए-गुल से शजर तर छाँह बिलमाता।
नसीमे देह का रहरो थका दक्षिण से है आता॥

[५९३]

लपटी पुहुप पराग पट, सनी स्वेद मकरद।
आवति नारि नवोढ़ लौं, सुखद वायु गति मद॥
जरे गुल के लपट पट अर्क़ गुल से चहचहाती है।
नई दुलहिन नसीमे जाँ फिज़ा दम ख़म से आती है॥

[५९४]

रुक्यौ साकरे कुंजमग, करत झांकि झुकराति।
मद मद मारुत तुरग, खूदति आवत जाति॥
रुका है साँकरी सी कुंज मग में झाँक झुकराता।
समंदे बाद है क्या मंद गति से खूँदता आता॥

[५९५]

कहति न देवर की कुबति कुलतिय कलह डराति।
पंजर गत मंजार ढिग, सुक लौं सूकति जाति॥
कलह के डर नहीं कहती है देवर की कुमत सगरी।
बरैये—तूतिए—जैसे मंझावे गुरबए मिसरी॥

[५९६]

पहुँला हार हिये लसै, सन की बेंदी भाल।
राखति खेत खरी खरी खरे उरोजनि बाल॥
है माथे सन की बेंदी माल पहुँला की सुहाती है।
खड़े पिस्ताँ खड़ी है खेत में बेठी रखाती है॥

[५९७]

गोरी गदकारी परैं हँसत कपोलनि गाड़।
कैसो लसति गँवारि यह, सुनकिरवा की आड़॥
लगाये आड़ सुनकिरवा की कैसी खिल रही प्यारी।
शिकन गालों पड़ी, हँसते मुँके मदमस्त गदकारी॥

[५९८]

गदराने तन गोरटी ऐपन आड़ लिलार॥
हूठ्यौ दै इठलाय दृग करै गँवारि सुमार॥
बदन गदरा लगाये गोरटी क्या आड़ ऐपन की।
खड़ी इठलाय कर वार कर अनोखी नोक जोबन की॥

[५९९]

सुमि पग धुमि चितई इतैं, न्हात दियेंई पीठि।
चकी झुकी सकुची डरी, हँसी लजीली डीठि॥
बरहन धुन सुन दिए ही पीठ मुड़ अचानक चित देती।
चकित सी झुक, डरी, सकुची, लजीली डीठ हँस फेरी॥

[६७०]

नहिं अन्हाय नहिं जाय घर, चित चुहुट्यौ तकि तीर ॥
परसि फुरहुरी लै फिरति, विहसति धसति न नीर ॥
नहाती है न घर जाती निरख तट नेह फँसती है।
फुरहरी लेके फिर फिरती विहँसती जल न धँसती है ॥

[६७१]

मुँह पखारि मुड़हर भिजै, सीस सजल कर छ्वाय ।
मैार उचैं घूटै नवैं, नारि सरोवर न्हाय ॥
सफा मुख कर, छिड़क मुडहर, सजल हाथों से सर छूकर ।
उठा गर्दन, झुका जानू नहाती सर में है दिलवर ॥

[६७२]

विहसति सकुचाति सी हिये, कुच आचर विचवाहि ।
भीजे पट तट कौं चली न्हाय सरोवर माँहि ॥
शिगुफ्ता शर्म खा, दिल में छुपाकर वाँह कुच अंचल ।
लपट गीले से पट अस्नान कर तट को चली चंचल ॥

[६७३]

मुँह धोवति एँड़ी घँसति, हँसति अनँगवत तीर ।
धँसति न इन्दीवर नयनि, कालिंदी के नीर ॥
लगाती देर मुँह धोकर, घिस-एँड़ी खूब हँसती है ।
कमल लोचन! जमुन के श्याम जल में क्यों न धँसती है ? ॥

[६७४]

न्हाय पहिरि पट डटि कियौ, वेंदी मिस परनाम ।
दृग चलाय घर कौं चली, विदा किये घनस्याम ॥
नहा, पट डट, चतुर की, वंदगी वेंदी वहाने से ।
चला आँखें चली घर, मुत्तिला कर हरि को जाने से ॥

[६१०]

तिय निज हिय जु लगी चलत, पिय नख रेख खरोट।
सूखन देत न सरसई, खोंटि खोंटि खत खोट ॥
खिराशे-नाखुने-नायक लगी सीने पै रँग लाने।
नहीं खत खोंट खोंट उसकी तरी देती है कुम्हलाने ॥

[६११]

पान्यो सोर सुहाग को, इन बिनुहीं पिय-नेह।
उनदौंही अँखिया ककै, कै अलसौंहीं देह ॥
पिया के प्रेम ही बिन यह सुहागिल बन है इतराती।
उनींदी सी बना अँखियाँ दिखा अंगडाइ लै छाती ॥

[६१२]

वहु धन लै अहिसान कै पारो देत सराहि।
वैद वधू हँसि भेद सों, रही नाह मुख चाहि ॥
गराँ अहसाँ जता, सीमाब दे, अज़हद सतायश की।
मआलिज की हँसी बीवी, खबर कर आजमायश की ॥

[६१३]

ऊचे चितै सराहियत, गिरह कबूतर लेत।
दृग झलकत मुलकत वदन, तन पुलकित किहि हेत ॥
खड़ी ऊपर को तकती है कबूतर की गिरहबाजी।
झलक आँखों पुलक तन में ये क्यों मुख पर ललक ताज़ी ॥

[६१४]

कारे वरन डरावने, कत आवत इहि गेह।
कइ वा लख्यो सखी लखे, लगै थरहरी देह ॥
सियह-क़ामा, मुखौफ़ क्यों यहां हरदम आता है।
है देखा बारहा इसको मगर तन थरथराता है ॥

[५१५]

औरै सबै हरसी फिरैं गावति भरी उछाह।
तुहीं बहू बिलसी फिरै, क्यों देवर के ब्याह॥
खिली हैं और सब हर एक रँगीले गीत हैं गाती।
बहू, क्या बात, देवर की तुम्हें शादी नहीं भाती!॥

[५१६]

रवि बन्दौ कर जोरि कै, सुनत स्याम के बैन।
भये हँसौहैं सबनि के अति अनसौहैं नैन॥
“ करो कर जोर सूरज से विनय ” सुन श्याम की बानी।
कुसुम सी खिल गईं अँखियाँ आ रिस-रस सनी कुम्हलानी॥

[५१७]

तन्त्री नाद कवित्त रस सरस राग रस रंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग॥
बहार हुस्न मौसीक़ी, मज़ाके शेर मस्ताना।
नहीं डूबे सो डूबे भी तर डूबे जो फ़रज़ाना॥

[५१८]

गिरिसे ऊँचे रसिक मन बूड़े जहां हजार।
वहै सदा पशु नरनि के प्रेम पयोधि पगार॥
हुए हैं गर्क़ जिसमें सैकड़ों कोहे हिमै मस्ताँ।
समझते हैं सदा पायाब दरिये-इश्क़ को हैवाँ॥

[५१९]

चटक न छाड़त घटत हूं सज्जन नेह गँभीर।
फीको परै न बरु फटै रँग्यौ चोल रँग चीर॥
सुजन गहरे मती फीकी नहीं पड़ती न कुम्हलाती।
चटक रँग चोल चोली की फटे पर भी नहीं जाती॥

[६३०]

प्रतिविम्बित जैसाह दुति, दीपति दर्पन धाम।
सब जग जीतन कौं कर्‌यो, कायव्यूह मनु काम॥
महल में शीश के जैसाह का परतो है अक्स-अफगन।
बराये-फत्ह-आलम, हुस्न बन आया है फौजे तन॥

[६३१]

अनी बड़ी उमड़ी लखें, असि वाहक भट भूप।
मंगल करि मान्यौ हिये, भौ मुह मंगल रूप॥
मुहव्विब सैफ़ जन, मर्दों का उमडा देख कर दंगल।
हुए मानिन्द मंगल सुर्खरू मन मान कर मंगल॥

[६३२]

दुसह दुराज प्रजानि कौ, क्यों न बढ़ै अति दंद।
अधिक अंधेरो जग करत, मिलि मावस रवि चंद॥
जमैयत पर जो दो शाह की है वज्ह वीरानी।
अमावस करती है मिल्‌ माहो शारिक की जहांबानी॥

[६३३]

बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमान।
भलो भलो करि छोड़िये, खोटे ग्रह जप दान॥
है दस्तूरे परस्तिश खास अहले फितनओ शर का।
भले को कह भलां छोड़ें व पूजन नहस अख्तर का॥

[६३४]

कहै वहै सो स्रुति सम्रृति, वहै सयाने लोग।
तीनि दबावत निसकही, पातक राजा रोग॥
मकूला आक़िलों का है यही वेदादि गाते हैं।
गुनह राजा मरज़ ये ज़ेरदस्तों को दबाते हैं॥

[६४०]

सबै हँसत करताल दै, नागरता के नाँव।
गयो गरब गुन को सबै, बसै गँवारे गाँव॥
उड़ाते मज़हका है नाम शहरीयत से दे ताली।
हुई क्या कोर दह में सरवरावदों की पामाली॥

[६४१]

फिरि फिरि बिलखी ह्वै लखति, फिरि फिरि लेति उसास।
साईं सिर कच सेत लौं, चूनत बित्यो कपास॥
वो भर भर सर्द आहें देख फिर फिर मुजतरब खातिर।
पिया के सेत बालों सा है चुनती पुबप-आख़िर॥

[६४२]

नर की अरु नलनीर की, गति एकै करि जोइ।
जेतो नीचो ह्वै चलै, ते तो ऊँचो होइ॥
है इन्साँ और आबे नल की बिल्कुल एक सी हस्ती।
बलन्द उतनाही हो जितनी गवारा कर सकै पस्ती॥

[६४३]

बढ़त बढ़त संपति सलिल, मन सरोज बढ़ि जाय।
घटत घटत सुन फिर घटै, बरु समूल कुँभिलाय॥
कँवल, दिल, आब व दौलत की तरक्की से हैं बढजाते।
तनज़्ज़ुल पर नहीं घटते हैं गो जड से हैं कुम्हलाते॥

[६४४]

जौ चाहत चटक न घटै, मैलो होय न मित्त।
रज राजस न छुवाइये, नेह चीकने चित्त॥
मुकद्दर हो न हमदम चाहते हो कुछ चमक आप।
सनेही चीकने चित पर न रज राजस की छू जाए॥

[१५५]

अति अगाध अति औथरे, नदी कूप सर बाय।
सो ताको सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाय॥
बहुत गहर य उथले हैं नदी तालाब भी कूवे।
मुनम्बर वेह है जो सेर कर दे प्यासे बन्दे॥

[१५६]

मीत न नीति गलीत ह्वै जो धरिये धन जोरि।
खाये खर्चे जौ जुरै, तौ जोरिये करोरि॥
डियर! मिस्कीन है, क्या फायदा धन जोड़ जाने से।
बचामो जो बचे खाली पहनने और खाने से॥

[१५७]

टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख जोति।
लसत रसोई के बगर जगर मगर दुति होति॥
वा मुखपर जोत चटकीली धो टटकी सी धुली धोती।
रसोई पास फिरती है झमक जगमग से है होती॥

[१५८]

सोहत संग समान कों, इहै कहैं सब लोग।
पान पीक ओठन बनै, काजर नैनन जोग॥
है इसके हमसरी ज़ेबा, यही कहते हैं दानिशवर।
है काजल आँख में मोज़ूं व सुरख़ी पान की लब पर॥

[१५९]

चित पितु मारक जोग गनि भयो भयें सुत सोग।
फिरि हुलस्यो जिय जोयसी समुझ्यो जारज जोग॥
पिदरकुश जोग सुत लौकीन से पहिले तो दुख माना।
मुनज्जिम फिर लिखा दिल में जो हरामज़ादा जाना॥

[६५०]

अरे परेखो को करै, तुहीं विलोकि विचारि।
किहिं नर किहिं सम राखिये, खरे बड़े परिवार॥
चढ़े कुन्वा तौ कहिये कौन किस किस के परख जोहर।
किसे समझे कलाँ या खुर्द या किसको कहें हमसर॥

[६५१]

कनक कनक ते सौगुनों, मादकता अधिकाय।
वह खाये बौरात है, वह पाये बौराय॥
मुनश्शी तर कनक से ये कनक क्यों कर न कहलाए।
उसे खाये से बौराए इसे पाए ही बौराए॥

[६५२]

ओठ उचै हाँसी भरी, दृग भौहनि की चाल।
मो मन कहा न पी लियो, पियत तमाखू लाल॥
जरा कर लब को उँचा पुर तबस्सुम चश्मो हम अब्रू।
पिया क्या क्या न दिल मेरा पिया, पीने में तम्बाकू॥

[६५३]

बुरो बुराई जो तजै, तौ चित खरो सँकात।
ज्यों निकलंक मयंक लखि, गनै लोग उतपात॥
बदी को तर्क करदे बद तो इसमें खौफ़ जानी है।
अगर बेदाग मह निकले तो शामत की निशानी है॥

[६५४]

भाँवरि अन भाँवरि भरे, करौ कोटि बकवाद।
अपनी अपनी भाँति को, छुटै न सहज सवाद॥
ये अच्छा, वो बुरा कह, मग्ज़ को क्यों कर रहे पश्ची।
नहीं छुटती है तबई जो लगी जिसको लगन सच्ची॥

[१५५]

जिन दिन देखे वे सुमन, गई सु बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब की, अपत कटीली डार॥
जो गुल देखे थे अब, बीती वो अब फस्ले बहारी है।
गुलाबों में यही अलि शाख़ अब पुरख़ारे बाक़ी है।

[१५६]

इहि आसा अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल।
ह्वैहै बहुरि बसन्त ऋतु इन डारिन वे फूल॥
यहीं उम्मीद अम्बूरे सियह गुल्बुन से हैं अटके।
बहार आये फिर इस शाख़ों शिगूफ़े होंगे यां लटके।

[१५७]

सिरस कुसुम मँडरात अलि न झुकि झपटि लपटात।
दरसत अति सुकुमारता, परसत मन न पत्यात॥
सिरस मँडरा रहा अलि फूल चुन गुल से न लिपटाता।
मुलायम नाज़ुक नज़ाकत देख नहीं छूने को पतियाता॥

[१५८]

कहि कि पठाई आपनी, कत राखति अलि भूल।
बिन मधु मधुकर के हिये गड़ै न गुड़हर फूल॥
बहक कर गुलसिताँ से तू क्यों भूला है ऐ गाफ़िल।
हुआ अम्बूर गुड़हर फूल की रसचाट से घायल॥

[१५९]

जदपि पुराने बक तऊ सरवर निपट कुचाल।
नये भये तु कहा भयो, ये मनहरन मराल॥
पुराने हैं ये आली प्यार गो लेकिन कुचाली हैं।
नये हैं ख़ोन में ये हंस पर दिलचस्पो आली हैं॥

[६६०]

अरे हंस या नगर में, जैऔ आप विचारि।
कागनि सौं जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिड़ारि॥
कहाँ ऐसी जगह—पे हंस! आक़िल पैर धरते हैं।
निकाली जिनने कोयल, जाग की जो क़द्र करते हैं॥

[६६१]

को कहि सकै बड़ेन सौ, लखै बड़ी ही भूल।
दीने दई गुलाब कौं, इनि डारनि ये फूल॥
बड़ों से कौन कह सकता है उनकी भूल लख भारी।
गुलाबों की ये शाखें, फूल वो कुदरत की बलिहारी॥

[६६२]

बे न इहा नागर बड़े, जिन आदर तें आब।
फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ, गँवई गाव गुलाब॥
नहीं शहरी यहा जो रंगो बू की कर सकें पहिचाँ।
तेरा खिलना न खिलना देह में है सुर्ख गुल इकसाँ॥

[६६३]

कर लै सूँघि सराहि कैं, रहे सबै गहि मौन।
गंधी अंध गुलाब कौ, गँवई गाँहक कौन॥
हथेली रख लगा नथनो से चुप साधी है कह फायक।
यहा अत्तार इत्रेगुल का देह में कौन है शायक़॥

[६६४]

को छूट्यौ यह जाल परि, कत कुरंग अकुलाय।
ज्यौं ज्यौं सुरझि भज्यौ चहै, त्यौं त्यौं अरुझत जाय॥
छुटा इस जाल से कौन-ए हिरन क्यों तड़फड़ाता है।
सुलझना चाहता ज्यों ज्यों उलझता ही वो जाता है॥

[६८०]

जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम।
मन काँचे नाँचे वृथा, साँचे राँचे राम॥
तिलक तसबीह छापों से जज़ा का मत हो मुतक़ाज़ी।
है नामकबूल खामी दिल को, हक़ तो हक़ से है राज़ी॥

[६८१]

यह जग काँचौ काँच सौ, मैं समुझ्यौ निरधार।
प्रतिबिम्बित लखियै जहाँ, एकै रूप अपार॥
बिलाशक काँच सा कच्चा है गाफ़िल ! ये जहाँ फ़ानी।
झलकता ला अदद रूपों में है इक रूप रब्बानी॥

[६८२]

बुधि अनुमान प्रमान श्रुति, किये नीठि ठहराय।
सूछम गति पर ब्रह्म की, अलख लखी नहिं जाय॥
किया है वाक तर्को वेद ने साबित जबरदस्ती।
कमर की तर्ह है परब्रह्म की असलिय्यतो हस्ती॥

[६८३]

तौ लगि या मन सदन मैं, हरि आवै किहिं बाट।
विकट जटे जौलौ निपट, खुलै न कपट कपाट॥
कहो किस तर्ह बैतुलक़ल्ब में तब तक खुदा आए।
न जबतक क़ल्ब का फाटक ये बिल्कुल साफ खुलजाए॥

[६८४]

या भव पारावार कौ, उलँघि पार को जाय।
तिय छबि छायाग्राहिनी, गहै बीच ही आय॥
उबूरे बेह आलम क्यों न हो इन्सान को मुश्किल।
जमाले अक्सगीरे खूबरूयां रह में है हायल॥

[६९५]

पट पाँखैं भख काँकरै सफर परेई संग।
सुखी परेवा जगत में एकै तुही बिहंग॥
सुराख संगरेज़ा खुराक हमदम भी हिमजिंस पर।
कबूतर, बस तुही मसरूर है दुनिया में इक तायर॥

[६९६]

स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा देखि बिहग बिचार।
बाज पराये पानि परि तू पच्छीहिं न मारि॥
न आतो मुनफ़अत, मुफ़्त अबस मिहनत है ए बाज़ी।
पराये हाथ पर मत तायरों को मार तू बाज़ी॥

[६९७]

दिन दस आदर पाय कैं करि लै आपु बखान।
जौ लौं काग सराध पख तौ लौं तौ सनमान॥
भले दस पाँच दिन करले कुलाग अपनी सनाख्वानी।
कनागत पख है जबतक तभी तक है ये मेहमानी॥

[६९८]

मरत प्यास पिंजरा पर्यौ सुआ समै के फेर।
आदर दै दै बोलियत बायस बलि की बेर॥
समय के फेर तोता मर रहा पिंजरे में बिन पानी।
पर काग़ौर कौए को बुलाते हैं ब-एहतरामानी॥

[६९९]

जाके एको एकहू जग ब्यौसाय न कोय।
सो निदाघ फूलै फलै आक डहडहौ होय॥
जबतग़ीर कसका है कोई न पानी है न साया है।
जवानी जेठ में फूला फला क्या है॥

[६७०]

नहिं पावस ऋतुराज यह, सुनु तरवर मति भूल।
अपत भये बिन पायहैं, क्यौं नव दल फल फूल॥
नहीं बारिश, बसंत आया, दिया नाहक़ न जाएगा।
तू बेबरगी के बदले पै शजर फल फूल पाएगा॥

[६७१]

सीतलता रु सुगंध की, महिमा घटी न मूर।
पीनसवारे ज्यौं तज्यौ, सोरा जानि कपूर॥
न कुछ खुशबूओ खुनकी न क़ीमत में कमी होगी।
तजे काफ़ूर को शोरा समझ पीनस का गर रोगी॥

[६७२]

गहै न नेकौ गुन-गरब, हँसै सकल संसार।
कुच उच पद लालच रहै, गरैं परैहू हार॥
बउम्मेदे मुक़ामे आलिया पिस्ताँ जलजमाला।
गले का हार ठहराई गई गुन गर्व खो डाला॥

[६७३]

मूंड चढ़ायेऊ रहै, पर्‌यौ पीठ कच भार।
रह्यौ गरे परि राखिये, तऊ हिये पर हार॥
चढ़े सर पर पडे रहते हैं पीछे संबुले मुश्कीं।
गले का हार है पर हार है सीने पै जेब आगीं॥

[६७४]

जौ सिर धरि महिमा मही, लहियत राजा राव।
प्रगटत जड़ता आपनी, मुकुट पहिरियत पाव॥
शहंशाहों की शौकत जो, मुकुट सर चढ चढाता है।
जो पहने कोई पैरों में वौ इल्मक़ अपना जताता है॥

[६८०]

जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम।
मन काँचे नाँचे वृथा, साँचे राँचे राम॥
तिलक तसबीह छापों से जरा का मत हो मुतराजी।
है नामक़बूल खामी दिल को, हक़ तो हक़ से है राज़ी॥

[६८१]

यह जग काँचौ काँच सौ, मैं समुझ्यौ निरधार।
प्रतिबिम्बित लखिये जहाँ, एकै रूप अपार॥
बिलाशक काँच सा कच्चा है गाफ़िल! ये जहाँ फ़ानी।
झलकता ला अदद रूपों में है इक रूप रब्बानी॥

[६८२]

बुधि अनुमान प्रमान श्रुति, किये नीठि ठहराय।
सूछम गति पर ब्रह्म की, अलख लखी नहिं जाय॥
किया है वाक़ तर्को वेद ने साबित जबरदस्ती।
कमर की तर्ह है परब्रह्म की असलिय्यतो हस्ती॥

[६८३]

तौ लगि या मन सदन मैं, हरि आवै किहिं बाट।
विकट जटे जौलौं निपट, खुले न कपट कपाट॥
कहो किस तर्ह बैतुलक़ल्ब में तब तक खुदा आए।
न जबतक क़ल्ब का फाटक ये बिल्कुल साफ़ खुलजाए॥

[६८४]

या भव पारावार कौं, उलँघि पार को जाय।
तिय छवि छायाग्राहिनी, गहै बीच ही आय॥
उबूरे बेह आलम क्यों न हो इन्सान को मुश्किल।
जमाले अक्सेज़नि शबरूँ था राह में है हायल॥

[१८५]

भजन कह्यो तासौं भज्यौ, भज्यौ न एको बार।

दूर भजन जासौं कह्यो, सो तू भज्यौ गँवार॥

भजा मुतलक़ न उसको, था जिसे भजना लगाकर दिल।

कहा भजने को जिस से दूर था उसको भजा गाफ़िल॥

[१८६]

पतवारी माला करि, और न कछू उपाव।

तरि संसार पयोधि कौं, हरि नामैं करि नाव॥

बना हरिनाम की तू नाव भी माला की पतवारी।

सिवा इसके तू तर सकता नहीं भव सिंधु ये भारी॥

[१८७]

यह बिरिया नहिं और की, तू करिया वह सोधि।

पाहन नाव चढ़ाय जिनि कीने पार पयोधि॥

वही मल्लाह के है हाथ अब तो तुमको किश्ती।

उतारा पार था जिसने चढ़ाकर संग की किश्ती॥

[१८८]

दूरि भजत प्रभु पीठ दै गुन बिस्तारन काल।

प्रगटत निर्गुन निकट ही चंग रंग गोपाल॥

किए विस्तार गुन का भागते हैं पीठ दे हट कर।

निकट निर्गुन के आते हैं पतंगे चंग हैं नटवर॥

[१८९]

जात जात बित होत है ज्यों जिय में संतोष।

होत होत ज्यों होय तौ होय घरी में मोष॥

क़नाअत आ सकती जिस तरह है वित के कम करते।

तरक़्क़ी में भी कर सकता तो छिन में मुक्ति पा सकते॥

[६९०]

ब्रज बासिनि कौं उचित धन, सो धन रुचत न कोय।
सुचित न आयो सुचितई, कहौ कहा ते होय॥
सलौना श्याम सुन्दर जो है के ब्रजबासियों का धन।
नहीं है दिलनशीं जब तक, हो कैसे दिल ये मुतमय्यन॥

[६९१]

नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनो तारन विरद, बारक बारन तारि॥
किया अगमाज अच्छा अब नहीं होती है शुनवाई।
करी को तार कर यक बार अब गोया क़सम खाई॥

[६९२]

दीरघ सास न लेहि दुख, सुख साँई नहिं भूल।
दई दई क्यौ करत है, दई दई सु कबूल॥
न राहत में खुदा को भूल, ने हो रंज में शाकी।
उसी पर सर झुकाए रह तू जो मरजी हो मौला की॥

[६९३]

कौन भांति रहिहै विरद, अब देखिवी मुरारि।
बीधे मोसों आन कै, गीधे गीधहिं तारि॥
ये देखें किस तरह रहती है अब हजरत वो गफ्फ़ारी।
हुए मशहूर करगस तार कर मेरी है अब बारी॥

[६९४]

बंधु भये का दीन के, को तार्‍यो रघुनाथ।
तूठे तूठे फिरत हौ, जूठे विरद बुलाय॥
हुए किस दीन के तुम बन्धु, तारा किसको रघुराई।
फिरी फूली मगर सच्ची नहीं ये शुहरत-अफज़ाई॥

[६९५]

मोरे ई गुन रीझते बिसराई वह बानि।
तुमहूँ कान्ह मनौ भये आज काल्हि के दानि॥
थी पहले वक़्त ही पर रीझने की बान को खोया।
मुनव्वर इस ज़माने के बने हैं आप भी गोया॥

[६९६]

कब को टेरत दीन ह्वै होत न स्याम सहाय।
तुमहू लागी जगत गुरु जगनायक जगबाय॥
है कबका मुल्तजी सुनते नहीं कुछ इल्तिजा, साहब!
तुम्हें भी लग गई शायद ज़माने की हवा, साहब!॥

[६९७]

प्रगट भये द्विजराज कुल सुबस बसे ब्रज आय।
मेरे हरौ कलेस सब केसौ केसौराय॥
प्रकट द्विजराजकुल में ही किया ब्रज भूम में डेरा।
मिटा दो सर्व केशवराय केशव की तरह मेरा॥

[६९८]

घर घर डोलत दीन ह्वै जन जन जाँचत जाय।
दिये लोभ चसमा चखनि लघु पुनि बड़ो लखाय॥
है दर दर माँगता फिरता परेशाँ डोलता घर घर।
लगाए हिर्स का चश्मा दिखाता केह भी है मेहतर॥

[६९९]

कीजै चित सोई तिरौं जिहि पतितनि के साथ।
मेरे गुन औगुन गननि गनौ न गोपीनाथ॥
तरे में पापियों के साथ शफ़क़त ऐस ही कीजे।
मेरे ऐबो हुनरपर ध्यान गोपीनाथ! मत दीजे॥

[७००]

जौ अनेक पतितन दियो मोहूं दीजै मोष।
तौ बाँधो अपने गुननि, जौ बाँधे ही तोष॥
बहुत से आसियों को मोक्ष दी जैसे, मुझे दीजे।
अगर बाँधे क़नाअत है तो बाँध अपने गुनो लीजे॥

[७०१]

कोऊ कोरिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार।
मो संपति जदुपति सदा, बिपति बिदारन हार॥
करोड़ों कोइ जोड़े या असंख्यों की धरे दौलत।
मेरे तो मायए शादी मुसीबत सोज़ हैं यदुपत॥

[७०२]

ज्यौं ह्वै हौ त्यौं होउँगो, हौ हरि अपनी चाल।
हठ न करौ अति कठिन है, मो तारिबो गुपाल॥
बुरा हूं या भला जैसा हूं कुछ आदत से लाचारी।
तरन तारन न हठ कीजे मेरा तरना कठिन भारी॥

[७०३]

करै कुगति औ कुटिलता, तजौ न दीन दयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय, बसत त्रिभंगी लाल॥
कजी क्यों छोड़ दूं नुक़्सान क्या दुनिया के हँसने से।
त्रिभंगी लाल! कुलफ़त होगी, सीधे दिल में बसने से॥

[७०४]

मोहिं तुमै बाढ़ी बहस, को जीतै जदुराज।
अपने अपने बिरद की, दुहुनि निबाहन लाज॥
हमारी औ तुम्हारी लग रही है होड़ जदुराई।
किसे हो जीत, [illegible] अपने फ़न में इकताई

[७०५]

निज करनी सकुचत हिये कत सकुचत इहिं चाल।
मोहूँ से अति विमुख त्यों सनमुख रहौ गुपाल॥

पद-प्रेमाश्री से हूँ दूर मार्मगी हरि ! शाह मत दीजे।
विमुख सा जान सन्मुख आके अब स्वामी अवर दीजे॥

[७०६]

हौं अनेक औगुन भरी चाहै याहि बलाय।
जौ पति संपति हू बिना, जदुपति राखे जाय॥

भरी सदा दुर्गुण से इसे मेरी बला चाहे।
जो बिन सम्पति की पति जदुपति मेरी इस जग में निबाहे॥

[७०७]

हरि कीजत तुमसौं यहै बिनती बार हजार।
जिहिं तिहिं भाँति डर्‍यौ रहौं, परो रहौं दरबार॥

हजार बार है सरकार ! इतनी इल्तिजा मेरी।
पड़ा दरबार में मांगों लगाऊँ आस पा तेरी॥

[७०८]

तौ बलि है भलि है बनी नागर नंद किसोर।
जौ तुम नीकें करि लखौ, मो करनी की ओर॥

मेरी करनी को नीके कर लखी गर, आप नर नागर !।
पचीसी पनपनी मनहर, बनी हो पार भवसागर॥

[७०९]

समैं पलटि पलटै प्रकृति कौन तजै निज चाल।
भौ अकरुन करुना करन यह कपूत कलि काल॥

पलटती है प्रकृति सब की समय पाकर पनाकामी।
हुए अकरुण अहो कलिकाल में करुणाकर स्वामी॥

[७१०]

अपने अपने मत लगे, वाद मचावत सोर।
ज्यौं त्यौं सबही सेइबो, एकै नंद किसोर॥
नशे में चूर बकते अपने अपने मत की मतवाले।
मेरे मत से छके पीपी के प्रीतम प्रेम के प्याले॥

[७११]

नंद-नंद गोविंद जय, सुख मंदिर गोपाल।
पुंडरीक लोचन ललित, जै जै कृष्ण रसाल॥
जयति गोपाल सुखमन्दिर जयति गोविंद नँदनन्दन।
कमल लोचन, ललित लीला जयति जै कृष्ण जगवन्दन॥

[७१२]

हुकुम पाय जैसाह को, हरि-राधिका प्रसाद।
करी बिहारी सतसई, भरी अनेक सवाद॥
बफज़ले राधिकावर हुक्म पा जेशाह आली का।
बिहारी ने रचे दोहे व प्रीतम ने किया टीका॥

[७१३]

जद्यपि है सोभा घनी, मुक्ताफल मैं देष।
गुहे ठौर की ठौर में लर में होत विशेष॥
गुहर गो देखने में खुशनुमा सुन्दर सुहाते हैं।
लडी में गूथने ही से बडी पर आब पाते हैं॥

[७१४]

बृजभाषा बरनी सबै, कबिवर बुद्धि विशाल।
सबकी भूषन सतसई, करी बिहारी लाल॥
खिलाए शायरों ने गो चिमन रच रच के ब्रज बानी।
बिहारी का ये गुलदस्ता है रँगीनी में लासानी॥

॥ समाप्त ॥

साहित्य-सेवासदन की प्रकाशित पुस्तकों का संक्षिप्त

सूचीपत्र

काव्य ग्रन्थ रत्न-माला

बिहारी सतसई सटीक—*टीकाकार—लाला भगवानदीन*, प्रो० हिन्दू विश्वविद्यालय। द्वितीय संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण छप रहा है।

श्रीकृष्णजन्मोत्सव—*देवीप्रसाद 'प्रीतम'* रचित श्रीकृष्ण-जन्म-सम्बन्धिनी घटनाओं का सरल सरस शैली में वर्णन। मूल्य ।-) ।=)

केशव-कौमुदी—केशवकृत रामचन्द्रिका की विस्तृत टीका। टीकाकार लाला भगवानदीन, प्रथम भाग (१-२० प्रकाश तक) २।), सजिल्द २॥)। राजसंस्करण ४॥) सजिल्द ५)। द्वितीय भाग (२१-३९ प्रकाश तक) ४) सजिल्द ४॥)

रहिमन विलास—रहीम की कविताओं का सबसे बड़ा और सटीक संस्करण मूल्य ।≈)

विनय पत्रिका—गो० तुलसीदास कृत विनय पत्रिका की अपूर्व टीका। टीकाकार—सम्मेलन-पत्रिका के सम्पादक वियोगी हरिजी।

भारतेन्दु-स्मारक-ग्रन्थ मालिका

कुसुम-संग्रह—बंगमहिला के लेखों का अपूर्व संग्रह। सं० प्रो० रामचन्द्र शुक्ल। स्त्रियों के लिए अत्युपयोगी मूल्य १।)

मुद्राराक्षस—भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी कृत पुस्तक का विद्यार्थियों तथा साहित्य-प्रेमियों के लिए विस्तृत टिप्पणी तथा आलोचनात्मक भूमिका सहित संस्करण। सम्पादक-ब्रजरत्नदास संशोधक बाबू श्यामसुन्दरदास तथा पं० रामचन्द्र शुक्ल मू० १)

सविवरण बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मँगा लीजिए।